

અનુક્રમણિકા

૧—શ્રીસ્કુટવાણીજી	૧
૨—શ્રીહિતપ્રભુ કી દો પત્રિકા	૧૧-૧૨
૩—શ્રીચતુરાશીજી	૧૭
૪—શ્રીસેવકવાણીજી	૬૫
૫—ફલસ્તુતિ	૧૩૩
૬—શ્રીમેવક ઉત્કર્ષ	૧૩૬
૭—શ્રીમુનાદક સટીક	૧૩૭
૮—શ્રીજન્મદાયન શતક	૧૪૨
૯—શ્રીકરણાવેલી	૧૫૪
૧૦—શ્રીહિતાદક (નાગરીદાસજી કૃત)	૧૬૧
૧૧—શ્રીરસિક નામધ્વનિ	૧૬૩
૧૨—મંગલ વધાર્ધ	૧૬૪-૧૬૭
૧૩—અષ્ટયામ સેવા કે પદ	૧૬૯
૧૪—શ્રીરાધાવલ્લભજી કૈ. અષ્ટપ્રકર મેવાવિલાસ	૧૯૬
૧૫—નિત્ય નૈમિત્તિક ઉત્સવ જોધ	૨૦૦
૧૬—શ્રીચતુરાશીજી કૈ. સમય પ્રબન્ધ	૨૨૩

સમર્પણ !



માનનીય આચાર્ય કુલ કમલ દિવાદર

શ્રીરાધાવલ્લભીય સમ્પ્રદાય—

મધાનપીઠાધિકારી પૂજ્યવર ટીકેત શ્રીમદ્ ગોસ્વામી

જય શ્રીહિત કિશોરીલાલજી મહારાજ

— કે —

કર કમલો મેં

પરમ પ્રેમારપદ નિદુજનિવાસી પૂજ્ય પતિદેવ

સોને વાલે ભગત

હી

ચિરાત્મશાન્તિ કે નિમિત્ત શ્રદ્ધાપૂર્વક

સાદર સમર્પિત ।

૬૧૬૭૭ શુક્લા રંગેડાદશી,
ચનિવાર, વૃન્દાવન—
કુંભપર્વોત્સવ, ૯૪ વિક્રમ
૧૨-૩-૩૮ ઈવ

પ્રકાશિકા—

શ્રીજીવકોર બાઈ
(સોને વાલી છોટી સેકાતી)

બમઈ ।

✽ भगवान् श्रीहितहरिवंशचन्द्रो विनयते ✽

✽ विज्ञान ✽

हितेन प्राप्यते राधा हितेन सन्निधयथा ।

हितेन प्राप्यते धाम हितेनैव रसगता ॥

जिन नहिं समुद्रयौ प्रेम यह, तिन सौं कहा अलाप ।

दादुर हू जल में जसै, जनत भीन भिलाप ॥

“स्वारथ सकल तज, गुरु चरणन भज,

गुरु नाम सुन, कथ, सन्तन सौं संग कर ।”

आद्य सनातन सिद्धाद्वैत भक्तैकनिष्ठ अनन्य श्रीहित राधावल्लभीय [अल्ल] सम्प्रदाय क्या है ? कथ से है ? क्यों है ? भक्त्यादि सभक्ताना तो स्वल्प समय में असम्भव सा है, क्योंकि जग जगन्मान्य महात्मा श्रीनाभा स्वामीजी अपने सर्वमान्य 'भक्तभास' ग्रन्थ में इस सम्प्रदाय के पूर्वाचार्य चरण के विषे भक्तिभाव से डंके की चोट कहते हैं—

श्रीराधाचरण प्रधान हृदय अति मुहूर्त, उपासी ।

कुंज केलि हंपती तहां की करत भवासी ॥

सर्वस्व महाप्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी ।

विधि निषेध नहिं दास अनन्य उदक घतधारी ॥

श्रीआससुवन १ पथ अनुसार सोई भलें पहिआन छै ।
श्रीहरिवंश गुसाईं भजन ही रीति सकृत् कोउ जान छै ॥

यहां “सकृत्” और “सोई भलें” इन शब्दों पर ध्यान देने से सुदृढता स्वयं प्रगट होती है। फिर भी उनमें के कल्याणार्थ भटानुभाव यरखों ने उपाय बताया है, यथा—

प्रथम हृदय अदा जे करै, आचारजनि जय अनुसारै,
जहां जहां हरिवंश के ॥

अर्थात् जब ही अदा और प्रभु कृपा दोनों का जग सुयोग उपस्थित हो तब जब के श्रीहित हरिवंशविन्दुकुलोद्भव आचार्य यरखों के समीप न करके हित रसिकपयानुगा स्वधर्मप्रतिपादित दीक्षा शास्त्रानुसार लेनी चाहिये । (तीव्र अभिलाषा और आचार्य यरखु समीप पहुँचने में अति विलम्ब की संभावना होने पर कहीं कहीं यदा कदा आचार्य यरखों की आज्ञा शिरोधार्य कर श्रीहित रूप गुरु प्रभु चित्र के सन्मुख जनके प्रतिनिधि स्वरूप (पति प्रदेश जाने से पतिव्रता की चित्र सेवा वत्) काई हित रसिक भटानुभाव से दीक्षा लेकर श्रीशरणागत भक्त का यथावकाश नीचे लिखी तीन श्रेष्ठियों में से एक के अनुसार नित्य भजन पाठ सेवा भावना करनी चाहिये । (अधिकस्याधिकं क्लम) फिर जग कभी श्रीभट्टाचार्य यरखु में प्राप्त होने का अवसर आवै तब फिर

विधिपूर्वक उनसे मन्त्रोपदेश (हित सम्बन्ध) ले । जैसे राजा परमानन्ददासजी, श्रीनवलदासजी भार्गव, श्रीयन्द्रसम्प्राणीजी, श्रीभूँडा स्वामीजी, श्रीजन्त्री स्वामीजी, स्वामी श्रीयतुर्भुजदासजी, श्रीलालस्वामीजी आदि ने आचार्य यरखु सन्मुख ज्यों के किया ।

श्रीहित धर्म के भगी रसिकों से प्रार्थना है कि सज्ज श्रीहित वाणीजी का पाद नित्य न कर सकें तो भी श्रीसेवकवाणीजी का पाद तो अवश्य ही किया करें, क्योंकि अनन्य श्रीहित धर्म व धन की प्राप्ति श्रीसेवकवाणीजी ही है । (या धनही साधन यही श्रीसेवक कृपा विशेषिये) ।

सज्ज रसिक आचार्यों के मतानुसार श्रीकृष्ण भगवान् की कृपा श्रीराधिकाजी की कृपा विना असंभव है और श्रीराधिकाजी की कृपा ही है ही उनही अन्तरंग निज सुहृदसम्प्रा (श्रीहित हरिवंश महाप्रभु) की कृपा विना महा दुर्लभ है । यह ज्ञात श्रीनामाजी राजा और मन्त्री के दृष्टान्त से समझाते हैं कि— 'गंधा यरखु प्रधान—' इसी दृष्टान्त के टीकाकार श्रीप्रियादासजी ने और भी जुलासा समझाया है कि 'राजा की दृष्टि पर मिलौगी प्रधान होय—' यानी राजा की ही दुर्दृष्टि भी मन्त्री द्वारा ही मिलती है । और पद्म सिद्ध श्रीध्रुवदासजी ने पूज्य समझ विचार के कहे हैं—

यरखु यरखु हरिवंश की, जग लगि आयौ नाहि ।

नव निकुंज निज माधुरी, क्यों पगसै मन माहि ॥ और

हरिवंश अरुण उर धरणि धर, भन वय हरि विस्वास ।

कँवरि कृपा छूँ है तवहि, अरु वृन्दावन वास ॥

सवै अंग गुलुडीन छौं, ताछौ नतन न कोय ।

एक दिशारी कृपा ते, जे कष्टु होय सु होय ॥

सोउ कृपा अति सुगम नहि, ताछौ छैन उपाय ।

अरुण शरणु हरिवंश की, सहजहि जन्यो जनाव ॥

इसी तरह श्रीविषाखा सभी के अवतार परमानन्द श्रीव्यासजी
हैं कि 'व्यासहि गुरु हरिवंश अताई अपनी जवन भूर' एवं

'हरिवंशी हरिदासी जहा । मुहि करुणा कर राधौ तहा' तथा

'विन हनिंशहि संरभे रीति छौ हापै अलिहै बार ।

हे राधा दुखरावै गावै वयन सुनावै आरु ॥

पद स्थना अण हा पै छूँ है विरस ज्यौ संसार ।

वृन्दावन की सहज भाधुरी छहिलै छैन उदार ॥—

अतः जिना श्रीहित हरिवंश कृपा के श्रीराधिकाजी की कृपा
असम्भव है और ऐसे ही श्रीहित कृपा का साधन एक मात्र
श्रीहित नेह प्रकाशक श्रीराधिकावतार श्रीमेवकम्बु महाराज की
कृपा ही है । इनकी कृपा विना श्रीहित कृपा अति कठिन है,
अतएव समस्त हितधर्म भूमिओं में प्रार्थना है कि (श्रीहित
धर्मिन से वीनती श्रीसेवक स्वरूप पद्वियानियौ) और (श्रीमेवक
स्वरूप अति दूर है धर्मवित ह मान) श्रीसेवकम्बु को वास्तविक
स्वरूप (श्रीराधा) तो समझ और दृष्टि में महज ही नहीं आवेगा,

पर केवल अपने धर्म जैसा मान के उनके गुलुगान उनकी वाणीछ
 का नित्य पाठ और उनकी जन्मोत्सव वधाई गान (सावन सुदी ३
 दरियाही जूवन की) के अवश्य कर्तव्य है, ये क्रिसव न करने से गुर
 द्रोही होने का लाइन और गुरु छष्ट सपथ वाणीछ में वर्णित है ।
 श्रीसेवकवाणी पाठ और उनकी कृपा से थोड़े, समय में ही श्रद्धित
 धर्म का लाभ हो सके है ॥ फिर सत्संग वृन्दावन वास आदि
 उपाय भी सहायक होय । भगवान् श्रीद्वितदरिवंश चन्द्र के
 मुण्डोच्चारित होने में श्रीयमुनाष्टक श्रीराधासुधानिधि श्री स्फुटवाणी
 एवं श्रीयतुराशीछ श्रीद्वित भगवान् की वाणी है और श्रीराधिका-
 वतार श्रीसेवकछ की गिरा की भी वाणी संज्ञा प्राचीन पुण्यस्त्रोक्त
 महात्माओं के कथनानुसार “वेदगिरा सेवक गिरा वाणी संज्ञा
 दाय” है । अतः ये सम्मिश्रित ही लिपी पढ़ी जाय है ।
 ‘श्रीराधासुधानिधिछ’ संस्कृत का कठिन ग्रन्थ होने से गुजराती
 में प्रकाशित नहीं किया, यदि प्रेमी भावुकों की रुचि जन पड़ी
 तो श्रीमती मेडानी साहिबा से कुछ प्रकाशित किया जायगा ।

श्रीकृष्ण भगवान् के छठे दिन पूतना राक्षसी के मारने के
 आश्चर्य-चरित्र की तरह भगवान् श्रीद्वितछ ने भी छः मास की
 अवस्था में श्रीराधा सुधानिधि की रचना की, जैसा कि लिखा है
 “गते तु पष्टमे मासि सुधासिंधुं प्रवर्त्य” और “पाण्ड्यासकृत्
 श्रीमद्राधारमसुधानिधिः । वाङ्मयैकैऽपि नृकान् स्वान् ज्योति-
 र्गुम्भं न दत्तवान्” ॥ श्रीद्वित राश्य का वर्णन गात्रकारों ने

हैसा दिया है। यथा (श्रीराधावल्लभ श्रील हितरूपसम्प्री तनु,
गौरस्यामलपोस्मित्रं यत्सन्धि प्रेम तदपुः) 'न्योतिषु' मङ्गलसत्प्रेम
साक्षाद्शी स्वरूपः। या वंशी सा हितानिशयतदहो व्यास-
नन्दनः॥ 'शब्द ब्रह्म वपुर्वंशी सृष्टि हेतुवैद्विग्रहः। त्रयीमूर्ति
लघोत्पत्तिः कृष्णंश्ये य तदाकृतिः॥ यदा संक्षिप्त हित स्वरूप
और यत्रि विभना उचित प्रतीत होता है—

श्रीहित महाप्रभु और श्रीराधिकाजु ये परस्पर अन्योन्माद्य
हैं। एक ही कृपा के बिना दूसरे की कृपा असंभव है, यह बात
सोचने, समझने एवं मानने के लिये भी 'उन्ही' ही एकमात्र कृपा
का ही अवयव है, क्योंकि श्रीहित निधि से ही श्रीप्रियाम्बुज
का विकास है और श्रीप्रियाम्बुज के हृदय में सौरभकोश भी
श्रीहित निधि के ही तत्वों से परिपूर्ण है अर्थात् श्रीहित में
श्रीस्वामिनी और श्रीस्वामिनी में श्रीहित है, इससे सर्व प्रथम
हित स्वरूप है। (सकल भिक्षुना आड के धरे टोकरा आड। जो
बिनसें तो आड है, जो निषण्णें तो आड।) ऐसे ही श्रीप्रियाजु
मे जात प्रीत रहने वाले हृदयस्थित श्रीहित श्रीवंशी स्वरूप से
श्रीप्रिया प्रीतम का महाप्रसाद अधराभृत पान कर जीवन की संपत्ति
है परमभुषणसार दान है, यह हित ही द्वितीय, वंशी स्वरूप है। श्री
श्रीहिशोरीजु के एकान्त हृदयस्थित हित के अभिन होने से अति
रस्य के ही रसमादकता के साधनार्थ श्रीहित वंशी स्वरूप

श्रीप्रियाङ्गु की संघिसष्ठी निज सुहृद अलिङ्गु श्रीहित मष्ठी
 स्वरूप से श्रीनित्यकिशोरी नित्यकिशोर विहाग्नि विहारीङ्गु के
 अष्टप्रहर विलसाय श्रीवनवासीन के यथाधिकार सुभ प्रदान करे
 यह श्रीहित के तृतीय श्रीसष्ठी स्वरूप है । वंशी रस स्वाद भजन
 श्रीललितादिसष्ठी स्वरूप ने जगज्ज्वाला संतप्त ससारी ज्वे प
 करुणा दृष्टि कर श्रीहित वंशी अरु श्रीप्रियाङ्गु से दुष्ठी जन
 कल्याणार्थ प्रार्थना की तब श्रीप्रियाङ्गु ने कृपा कर अपनी प्राण
 आत्मा श्रीहृदि संयुक्त श्रीवंधाज्ज से कही कि आपही ने जैसे
 प्रेम की ध्वज रूप मन्त्रगोपियो के परमाह्लाद प्राप्त कराया
 ऐसे ही अब भी अपने वंशरसनाद मे अनन्य प्रेमी ज्वे
 के मंगल करने के संसार मे अवतार लेकर हरियुक्त वंशी के
 वंश की ग्यना कर जे ज्व शरणागत हो जनको सात्मिका
 पद्धति का उपदेश करे । आशा शिरोधार्य कर वंशी सहित
 श्रीलालङ्गु ने अपने और अपनी प्राणप्रियाङ्गु के जन्मस्थान
 श्रीगोकुल और श्रीरावल के समीप ही श्रीयमुना निकट मन्त्र लुभि
 की पुनीत मन्त्र श्रीवाद्यम मे शुक्ल यन्त्रवेदी कर्यप गोत्री
 श्रीव्यास भिन्न अरु श्रीतारा मनीङ्गु के गृह मे संवत् १५३०
 शके १३८५ सन् १४७३ के वैशाख शुक्ल ११ सोमवा
 के प्रातः अरुणोदय काल मे श्रीहित हृद्विंश नाम मे आचार्य
 स्वरूप मे अवतार लिया । यही यौथा आचार्य स्वरूप श्रीहिततत्त्व
 है । श्रीमहाचार्यवर महाप्रभु के पिता लोही जादशाहरे

पश्यन्तग्री मननपदार एव' शादी न्योतिपी ये और सदारनपुर
 जिते के देववन (वर्तमान स्टेशन नाग देववन) के रहसि ये ।
 श्रीमदाप्रभुछ हा वास्ययस्त्रि अनेक अद्भुत जगत्संभंधी
 तीसाओ मे परिपूर्ण है जो कि अनेक यस्त्रि ग्रन्थो मे' सविस्तृत
 लिखित है । संवत् १५७८ मे' यमोपरीत एव' १ वर्ष पीछे ही मदा-
 ननी श्रीरुक्मिणीछ मे विवाह भया । विक्रम संवत् १५४८ यत्र
 गृही पूर्णमासी के श्रीगणेशछ ने श्रीदत्त मदाप्रभु के श्रीवृन्दावन
 मे' निज मन्त्रोपदेश किया । देवकी और आगरा तत्कालीन शादी
 नागधानी के मध्य मगर भूमि देने के कारण व्यावसाय
 के माय सपत्निवा श्रीव्यामछ मदारान के दौरा मे' श्रीनरभूमि
 क दर्शन तथा निराम का प्रायः अवकाश मिया करता था । संवत्
 १५८४ की शक्ति पूर्णमासी मदारान लीला के दिन दौग ही मे'
 'मम हंपती श्रीवृन्दावन पास एक माय पा गये । पिता माता के
 नई घर वाम मे' श्रीदत्त प्रभु का मन क्षणिक संभव भया पुनः
 नागधान दो माता पिता की अन्तिम सेवा मानंद की । गेरे,
 नमम मे' दी पुत्र प्रपट देने का ममम वन आप श्रीवृन्दावन वाम
 सी करने लगे । श्रीवृन्दावन मे' यत्र दृष्ट्या ५ संवत् १५८४ के
 श्रीवन्मन्द प्रभु नोदरानीछ का प्रादुर्भाव भया । इसवन्मन्द के
 लम्बा श्रीमामास प्रभु पुनः देववन पधार । वदा द्वितीय पुत्र
 नोदरानी श्रीवृन्मन्द प्रभु का जन्म माय शुभ ५ संवत् १५८५
 ११ तथा तृतीय पुत्र नोदरानी श्रीनिनाम प्रभु का प्रादुर्भाव

शालग्राम शुद्ध १५ संवत् १५४७ के भया । दम्भसपत्रवत गृहस्था-
 श्रम में रह तीन पुत्र और १ कन्या का विवाहादि हर निश्चित हो।
 श्रीप्रियाण से आशा से श्रीवृन्दावन यात्रा संवत् १५६५ में
 श्री । देववन से बल थोड़ी हर यथावल नामक ग्राम में रात्रि का
 निवास किया, इसी ग्राम में आत्मदेव नामक ब्राह्मण ने पूर्वहाल
 में निश्चय भाव में श्रीमहादेवण ही धार तपस्या हर वरदान में
 श्रीशंकरण ही अत्यन्त प्राणप्रिय सेव्य श्रीगोपावत्सल विग्रह
 प्राप्त ही, किन्हीं आत्मदेवण के वंशज तत्कालीन श्रीविप्र देवता
 के दो युवती कन्या थीं, श्रीप्रियाण ने ब्राह्मणुराज में स्वप्न में
 आशा की कि आज यहाँ अभुक्त स्थान पर मेरी वंशीण ही ज्योति
 कल्याणार्थ आचार्य विग्रह में प्रघट होकर यहाँ आये हों और
 श्रीवृन्दावन न रहें हों मो तुम दोनों कन्याओं को किन्हीं ही
 व्याह के, दहेज में मेरी विग्रह दे दो । मैं अब वृन्दावन ही जाना
 चाहूँ । मेरी आशा न मानने में तुम्हारा बहुत अनिष्ट होगा ।
 मधर रात्रि ही में श्रीहित प्रभु से भी कहा कि मेरी आशा मान
 कन्याओं सहित मेरी विग्रह श्रीवृन्दावन से बल और मेरे धर्म
 का प्रचार करे । प्रभु आज्ञावश ब्राह्मण के मिलने पर छसका
 प्रार्थना स्वीकृत हर दो कन्याओं का डोला और श्रीप्रभु का चौंटास
 लेकर कालिक शुद्ध १३ संवत् १५६५ के श्रीवृन्दावन में भवनदेर
 स्थान पर विराजे । यथावल वाली कन्या श्रीकृष्णदासीण और
 मनोहरिणी थीं, श्रीकृष्णदासीण के संवत् १५८८ आश्विन शुद्ध

१५ को गोस्वामी श्रीमोहनचन्द्र को जन्म मया । और द्वार की रासचन्द्र पृथ्विमा संवत् १८८८ को श्रीरासमंडल पर सभ अनन्य वक्त पुत्र शिष्यो के सन्मुख देखते देखते श्रीमहाचार्य प्रभु सशरीर अन्तर्धान हो गये । और उनकी आचार्यगादी पर बैठे, पुत्र श्रीगोस्वामी वनचन्द्र प्रभु विराजमान होकर जेवो का कल्याण करते रहे । तब से आज तक आचार्य वंश ही गद्दी पर आचार्य विराजमान होकर अनन्त जेवो का उद्धार करते यत्न आगे हैं ।

विस्तारभय से ज्यादा हम यहाँ नहीं लिख सके, श्रीसेवक भद्रागण के लिये भी भद्रात्मियों के कथन हैं—(सेवक की सगि को हमें भजन सरोवर वंश), और (श्रीसेवकभद्र वन्दे हरिवंश-प्रकाशकम्) तथा (प्रथम श्रीसेवक पद सिर नाजो) ॥

श्रीललितादिक सभी वृन्द की प्रार्थना से श्रीगणिका भद्रारानी ने अपनी आत्मा श्रीदित रंशीश को स सारी जेवो के कल्याणार्थ प्रघट होने की आज्ञा दी, और आपने श्रीहरिवंश नाम से आचार्य स्वरूप में प्रघट हो वेद ब्रह्मादि दुर्गम गति क्रीप्रियाश की गादी स्थापन कर उनके नाम रूप लीला से अतुर्हिगन्त व्याप्त कर दिया, किन्तु अपना निज हिततत्त्व रूप अत्यन्त गुप्त रक्खा, यह बात निकुंज में निकुंजेश्वरी से सहन न हो सकी और उमंग से अपने हित के लाड, लडाने और सभको स्वरूप ज्ञान दाने को सेव्य से सेवक रूप में, ' ब्रह्माश के हित, नारायण को

हंस (वाहन) रूप से प्रकट होने की तरह" प्रकट होना पड़ता ।
 पृथ्वी पर श्रीप्रियाञ्ज ने अपने हित के हितार्थ जो अवतार लिया
 उसका सक्षिप्त अर्थ यह है कि गौडवाने प्रदेश में जगन्नाथपुर के
 पास गढ़ा ग्राम (उस समय स्टेशन का नाम महन महल है)
 में संवत् १५७५ के आरम्भ की हरियाली जुलन तीज के
 सन्ध्या समय पञ्च के करीब विप्रराज के यहां श्रीप्रियाञ्ज का
 सेवक स्वरूप में श्रीदामोदरदासञ्ज नाम से जन्म भया । अनेक
 शुभ मंगलों के बाद श्रीदामोदरदासञ्ज जन्म पाये, जड़े, भये तभी
 उनके अगेरे भाई श्रीस्वामी अतुर्भुजदासञ्ज जिनके लिये
 श्रीनामा स्वामीञ्ज अपनी भक्तमाल में लिखे हैं—

“श्रीहरिवंशयशुवत्त अतुर्भुज गौड देश पावन कियौ”

महोदय गौड देश के राजा, प्रजा, भूत, प्रेत, योरा, डाकू
 और यहां तक कि साक्षात् देवी को भी वैष्णव बना कर पावन
 किया उनसे इनका अद्भुत प्रेम हो गया । ये दौनों भाई मित्र रूप
 से परस्पर प्रेम रूप विद्याध्ययन करते रहे और वाक्यमाल से ही
 साधु सज्जनो में अद्भुत प्रेम करते रहे । इनके देश में जो भी
 साधु जाता वह कभी इनकी सेवा ग्रहण किये बिना न आ
 सकता । जन्म ये दौनों मित्र पूरुष विद्वान् हो गये तथा साधु सेवा
 में और भी दृढ़ प्रवृत्ति हो गई । मंसी प्रकार साधु सेवा करते-
 करते गुरु करने की अभिलाषा बढ़ी पर कोई गुरु मनोनुकूल न
 मिल सका । किसी समय एक साधु मंडली इनके यहां आ पहुँची

और रात्रि भर जगदगुरु प्रबुधान किया । दौनो मित्रो ने भी साधु रसिको ही अत्यन्त सेवा दी, प्रातः जग रसिक महानुभाव यद्यने लगे तो दौनों मित्र ब्राह्मणकुमारो से पूछा कि भैया आपकी ऐसी प्रेमनिष्ठा है आप शिष्य कहाँ के हैं ? वे दास जेठ, के होते, अभी दूरों मनोनुकूल सदुपदेश गुरु नहीं मिल सके अतः विचार मात्र में ही छतना समय हमने व्यर्थ गँवाया । अग आपने कृपा कर पूछा है तो हम भी आपकी आशीर्मान के गुरु करेंगे आप जिसे जतामैं वही हमारे गुरु हैं । यह सुन महानुभावो ने कहा कि श्रीवृन्दावन धाम में जग रसिकों के मुहूर्तमणि आचार्य कृष्णकमलदिवाकर गोस्वामी कुसुमितक श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रबुद्ध अनन्य दित धर्म के प्रकाशक हैं उनही के जहर तुम शरण्य हो जाओ और श्री हितशू के अनन्य प्रेमधर्म के भूतलत भी संक्षेप से समझाये । सग समझ दौनो मित्रो ने भी हृदय प्रतिष्ठा की कि वृन्दावन यलके शीघ्र गुरु शरण्य हो । पर गृहयुक्त से जलुत समय तक न दृष्ट सके । यहा श्रीमन्महा प्रभु श्रीहिताचार्य अन्तर्धान हो गये यह जगद जग उन मित्रो के लगी तो श्रीस्वामी यदुर्बुजदासजी ने श्रीदासोदरदासजी से कहा कि “आत्मा वै जयते पुनः” के न्याय से पिता नहीं तो उनके पुत्र नो गदी पर विराजमान ह, उनमे ही यलके दीक्षा ले मैं । श्रीदासोदरदासजी ने कहा कि हमारे श्रीगुरुदेव नित्य सिद्ध हैं वे हँसी हँसी नहीं लें, हम तो उनही से दीक्षा लेगे

नहीं' ये तुम्हें अधम प्राण ही छोड़, दौड़े । सो यह कह और मन
 वचन कर्म से भीहित में लगन लगा कर 'श्रीहरिवंश' नाम
 बनने लगे । भान पान आदि की सुधि ही न रही । दूसरे मित्र
 तो अम तक देरी भर्त्सो भर्त्स अण क्षण भर भी देरी न करें
 ये स हृत्प कर श्रीवृन्दावन यव दिये और यहाँ आके श्रीमद्-
 गोस्वामी श्रीवनयन्द्र महाप्रभु के दर्शन कर शरणागति ली श्रीराधा-
 वल्लभलाल के दर्शन, श्रीसेवाकुंजर, श्रीरामभंडल, श्रीमानसरे वर,
 श्रीवाद्यग्राम आदि के दर्शन करे । छधर वहाँ श्रीदामोदरदासजी देवानु-
 स धान त्याग प्रेम भजन तीन दिन तक भावावेश में भजन
 करते रहे । तीसरे दिन श्रीगुरुदेव ने कृपा कर श्रीवृन्दावन जुला कर
 शरणागति में लेकर कृपा मात्र से ही अपनी समस्त श्रीहितवाणी
 जो कंठ कराही और श्रीयमुनातट पर सप्ती परिकर सहित श्रीप्रिया
 प्रीतम के दर्शन कराये । इसी समय श्रीध्रुव प्रह्लादादिको भी तरह
 श्रीसेवकजी ने श्रीहित प्रभु का जो अनुभव जनित उप यश का
 वर्णन किया वही श्रीमवक्तावाणी जो है श्रीमेवकजी विद्वान् एवं
 साधुसेवी होने के कारण सर्व शास्त्र और सर्व मत का प्रकाण्ड
 ज्ञान ग्यते ये जैसा कि इनकी वाणी जो मनन पूर्वक पढ़ने से
 पता लगता है । श्रीगुरु शरणागति की मनोभिलाष पूर्ण होने
 पर प्रभु ने आज्ञा दी कि तुमको अभी कुछ दिन का देश ही बेगै
 फिर जुला लेंगे । जिस ये अपने घर पहुँच गये । कुछ दिन बाद
 दूसरे मित्र वृन्दावन में वापिस गये दिनने छनसे कहा—तुम न उसे

श्रीवन के सुख आनन्द का वर्णन किया तब ये जोतें हमारे ठीक
 की श्रीगुरु कृपा भई निश्वास के लिये जल सज वाष्पी और
 श्रीवृन्दावन का वर्णन करने सुनाया तो वे अवाह् रह सेवक
 के यन्त्रों में लिपट के धन्य धन्य कहने लगे । कुछ दिन बाद ये
 वृत्तान्त श्रीवृन्दावन में श्रीगुरुसार्ध वनयन्द्र प्रभु ने सुना तो
 उसी समय प्रतिज्ञा की कि जिन समय हम श्रीसेवक के दृष्टि में
 कभी भय तन मन धन सर्वस्व देने के ठीक न्यायावर कर वार के
 देंगे । ये बात सेवक ने सुनी तो विचार किया मेरे जाने से
 प्रभु की सज चीज लुटेंगी अग मैं कैसे जाऊँ । श्रीगुरुसार्ध ने
 जल सुनी कि सेवक न आये तो तब अपनी नौगन्ध लिप के
 पत्र लेन कि जल्दी आओ । पत्र पढ़, सेवक न दूर सके
 और श्रीगुरुसार्ध वनयन्द्र प्रभु श्रीगुरुवन्दनमाला की हृष्टि में
 हृष्टि मिलाय आनन्द मग्न भये अरती कर रहे उसी समय वे
 बदल के श्रीसेवक ने आकर दर्शन किये । श्रीसेवक के आते ही
 जो श्रीगुरुवन्दनमाला की हृष्टि श्रीगुरुसार्ध की हृष्टि से मिल रही
 वह श्रीसेवक की तरफ खींची गयी । प्रभु हृष्टि हटते ही श्रीगुरुसार्ध
 के कलिक तो अत्यन्त व्यथता भई पर अतः ममता की हृष्टि सेवक
 में ये शक्ति है कि अन्तर्धान भये गुरु प्रपट करवें तो गुरु कृपा
 से श्रीगुरुवन्दनमाला की हृष्टि अपनी तरफ करना हीन आश्चर्य
 है ये निश्चय कर आरती समाप्त कर जग गुरुसार्ध बाहर पधार
 तब अड़ी लीक में अलग अलग श्रीसेवक के पहिचानने में उनकी

प्रेम रँग इन्ही भरत निगाह और दीवानी बाल ने जड़ी भद की ।
 श्रीगुशास्त्रि प्रेम छर्चा बितवन से सेवक के पहिचान उनसे
 लिपटने के दौड़े, सेवक ने भी जान ली कि हमारी बेचारी छिप
 न सकी । अतएव वे भी शीघ्र दौड़ के श्रीगुरु पुत्र प्रभु के श्री
 चरणों में लिपट के प्रार्थना करने लगे कि प्रभु की वस्तु न लुप्त
 श्रीप्रभु ने कहा मैंने तो रीति के प्रभु दिया तुम नाहीं दरे। तौ
 दैमे जात जनै अन्ध आपकी जात भी रहे, हमारा भी मनोग्य
 पहुँचो । हम प्रसादी मज वस्तु लुटायेंगे अरु अभिनिया वस्तु की
 तुम्हारी प्रार्थना मानेंगे । किसी दिन श्रीगुशास्त्रि वनचन्द्र महाप्रभु
 ने आज्ञा दी कि श्रीप्रिया प्रियतम के नित्य नयेम नी तगद ही वशी-
 युक्तमाधुर्यस वसित गसउप श्रीहरि की वाणी श्रीचतुर्गुणी और
 अपने वंशस युक्त श्रीप्यात्रे दगि के प्रेम भेल मे पीछे न पड़
 सकने के कारण उनसे यशगम उप के जड़ाने मताने के लिये श्रीस्वा-
 मिनी श्रीगविदाश्रु के अवतार श्रीदामोदरदास (श्रीसेवक
 महाराज) की वाणी श्रीसेवकवाणी एक साथ ही लिपी पढ़ी
 ध्यान पूजा करीं जाँय । तभी मे आज तक दौनो वाणी साथ ही
 रहें । श्रीसेवक महाराज स वत् १६१२ मे श्रीरासमंडल
 पर श्रीदित प्रियाश्रु के दाहिनी तगद वट वृक्ष मे श्रीहरिवंश
 श्रीहरिवंश नामोच्चारण करते करते सदैव अन्तर्ध्यान हो गये ।
 उन वट वृक्ष का कुछ अंश आज भी दृश्यनीय रूप से विगजमान
 है और प्रेमी रसिकों का अर्थन वन्दन स्वीकार कर हितगसाधत

श्री शक्ति हरते मर्द । और यदा तब कि 'मेवमन्त्राणी स्ते नदि
नानै, तिनही जात मन्त्र नदि मानै ।' इन श्रीमेवमन्त्राणी के
पाठ से अम अमृत्त प्रसा सुख, आ तब मे भी ने.पद पानी ही
तब पाठ हो गये । मसिमे के निम्नपाठ मे श्रीलक्ष्मीप्रसा
हर्षनाथ हर्षनीय श्रीप्रभुविन जी भाष मे 'नाम वाणी कदा
आमन्त्राया तदा' के अनुमात्र हीने दी उपरिचय है, मन्त्रमुक्ति
मे किम प्रकार मन्त्रागत होकर किस तन्त्र अमृत कृपा आदिमे
पद करी 'विमान' मे आने स शिक्ष मे अनापेने । अमना-
पिहारी होने और मन्त्रागत आने के सिधे भदात्मा नेही
श्रीनानरीदास कहते हैं । 'अनीम हस्तिन है अमृत दिम दन्ति ।
तमहि गिद्ध मेसि भाये पर मादम निद मती हैसौ मन्त्रि ।
मन्त्र के आय पायव लयीं धूमै भूमै न मरु भू हैनी सन्त्रि ।
नामरीदास सुनम गिन वनौ शीदन्त्रि प-प पम सन्त्रि ॥
रेभाहित वास विद्याने मे मरुदय मर्मा वसही सुदुग्दता समज
सहमे । अमनापिहारी होने पर जाननापिहारी होने के सिधे
आपना हम हा सन्त्रि वर्णन जी पद पुस्तकाकार मन वाणीप्र
मे वगा दिया गया है यथासाध्य मन वाणीप्र के मन्त्रोपयोगी
मुन्दर बनाने ही चेष्टा ही है, यदि मन्त्रा मे दिसी के भी
इनमे लाभ हुआ, तो हम अपने पवित्र के दी नदी अपितु
अपन के भी कृतार्थ मानेंगे श्रोति 'हैंसैं तैंसैं स्ते हदै एह
आर दन्त्रिंश । पावन आयौ है मदै, लज्ज दग्ग हौ प्रसंश'

हिंसी भी तरह श्रीहरिवंश नाम सुभ से निकलना, भूमि में रस
भीजटा मोना है, वह समय पाव जरूर हुंसे हुंसेगा । और
‘धरम्म सुनाय धरम्महि गयत यादौ कृपा गु धरम्भिनि श्री’
हमारी तो यही प्रगट है । और यदि कही कुछ सुनसे त्रुटि न ग
हो तो कृपा कर क्षमा कर मन्त्राय हैं और सुधारहैं ।

श्रीमेवकृष्ण की आशानुसार ‘जौन तुम रसिक रस रीति के
आडि से तौर मन देवु हरिवंश वानी ’ श्रीहितवाणी में मन
लगाने से ही रसरीति मिलती है । और श्रीनाथीश में प्रवेश
तभी होगा जब शास्त्रानुसूल आर्यजन परोपहित भगवान्
श्रीहित हरिवंशनिंदुव मोह भव गुरु शरणागति लकर ‘सकल
समर्पण प्राणधन गुरु मेवा तजि कर्हि जे वानि यज्ञ अधर्म
यज्ञ सम हानि इस आग के समग्र कर पूर्ण निश्वास मे मेवा
भजन मे तत्पर रहै, तब सुभ स्वास् पाकर निर्भय होकर क
मई (श्रीहरिवंश के नाम प्रताप को लाग लखौ सु कलौ नहि
नार्थ) तथा (हरिवंश मरोसे भये निंदु सु नित गर्गत हरिवंश
वय) एवं (जे हगिताम जगत्र शिरोमणि वंश जिना कमह
नहि वैदौ) और भी - जे हरिवंश तनौ, भनौ औरहि
तौ मोहि श्रीहरिवंश दुकार, मेमे हठ अनन्य प्रतिज्ञा सम्ह तभी निक
हंगे जब (सुभद हरिवंश प्रभु कौ न यायौ) से ही याचना
होगी फिर श्रीहित कुल महामहन्त गुरु शरण्य जना उचित है ।
हमारे यहा श्रीगोपालधर्मोप निर्मोही अन्धारे के बड़े बड़े सिद्ध, सन्त,

छिन्नित है । कम से कम ये कम है । ज्यादा करने वाले बड़-बागियों की दौन प्रशंसा कर सकें और प्रत्येक का धन छोड़े का अर्थ सदा ध्यान में रखना चाहिये ।

सजसो हित निष्काम भक्ति, वृन्दावन विग्राम ।

श्रीराधावल्लभलाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ॥

भंस छोड़े का सच्चे हृदय से आश्रय लेने पर कोई भी वस्तु शेष नहीं रह जाती ।

अन्त में रसिक महानुभावों से वित्त है कि कोई त्रुटि रह गई हो तो अपना अन्तरंग सम्बन्ध भात क्षमा कर समझाय दें और—

गुण्य-गुह्य-गुण्य सुहृदो दोषास्त्रिन्वन्तु दुर्धियः ।

वाग्यमेवान्न निक्षपं सामान्ये रत्नपंडयोः ॥”

अर्थात् गहरे सज्जन गुण्य गहरे करें और असहृदय निन्दक दोषों को भीनों । समुद्र में रत्न और हीय देनेवाली भाग्य के अनुसार मनुष्य प्राप्त करते हैं और जो—

‘ गुण्य में औगुण्य जोगही, जो गुण्य प्रकृति के नीच ।

ज्या गुण्य की के भेत में, सुकर जोगही हीय ॥”

हैं उनके लिये श्री० ए हमारी मही भावना रखें कि

“धनि धनि निन्दक हितू हमारे”—

वै० शु० ११, मंगलवार, ८५ वि०
सा० १०५५०८८ श्रीदत्ताष्ट ४२६ }

गोस्वामी श्रीदत्त रूपलाल

श्रीदत्तश्रीलाल,

दीर्घत अधिकारी, वृन्दावन.

(श्रीहितप्रभु का संक्षिप्त समय क्रम)



श्रीहितप्रभु का जन्म	सं १५३०	वैशाख सुदी ११
यज्ञोपवीत	सं १५३७	७ वें वर्ष
विवाह	सं १५३८	८ वें वर्ष

निजमन्त्र श्रीराधिकाजी से प्राप्त

चैत्र शु० १५ सं० १५४१ ११ वें वर्ष

(आस्थाद के साथ द्वारा में श्रीवृन्दावन में भया)

नपरिकर द्वारा ही में श्रीवृन्दावन पुनरागमन और जीवन में
ही माता पिता का निवृत्तवास— कार्तिक शु० १५ सं० १५४४

और श्रीवनयन्त्र प्रभु का जीवन में ही प्राकट्य—

चैत्र कृ० ६ सं० १५४४

देववन गमन सं० १५४५

श्रीकृष्णायन्त्र का जन्म देववन में भाव शु० ८ सं० १५४६

श्रीगोपीनाथजी का ,, ,, दशरथ शु० १५ सं० १५४७

દેવવન પરિત્યાગ કરું શ્રીવૃન્દાવન કો શ્રીવૃન્દાવન આગમન
કાર્તિક શુ. ૧૩ સ. ૧૫૬૫ ઇસી દિન શ્રીરાધાચલચળ
કો ગોટાતસવ, એવં શ્રીવૃન્દાવનધામ જન્મ દિન ।

શ્રીમોહનચન્દ્ર પ્રભુ કો જન્મ વૃન્દાવન મેં કાર્તિક બદી ૧૦
સંવત ૧૫૯૮.

શ્રીહિત પ્રભુ કો સદચરીર અન્તર્ધ્યાન શ્રીરાસમંડલ વૃન્દાવન
શરદ્ પૂર્ણિમા સંવત ૧૬૦૯ ।





निश्चय निरुद्ध हित रस सुरति केलि वदन् प्रिलासी
 श्री १००८ श्रीहित राधावल्लभ लालनी महाराज श्रीवृन्दावन धाम

॥ श्रीराधाव' नमोजयति ॥

* श्रीहितहरिवंशो नमति *

॥ श्रीअधिकांगी हितगुरु किशोरीलाक्षो विनयते ॥

श्री गसिक अनन्यनृपति यूगंभूषि श्रीमद्धिताचार्यमहाप्रभु विरचित

श्रीहित स्फुटवाणीजी



* सवेया *

दादश चन्द्र कृतस्थल भगव पुद्ग विरुद्ध गुरु गुरु भक्त ।
यदि दशम भवन्न भृगूभुत मन्द सुकेतु जनम के अक्ष ॥
अष्टम राहु यतुर्थ दिवाभूषि तौ हरिवंश करत न सक ।
जो पै कृष्णयगणु मनअर्पित तौ दृगिहैं कछा नयअछ रक ॥१॥

* सवेया *

भानु दशम जनम निशापति भगव पुद्ग शिवस्थल लीके ।
जो गुरु होय धरम भवन्न के तौ भृगुनन्द सुमन्द नरीके ॥
तीसरो केतु समेत बिधुयस तौ हरिवंश मनकम शीके ।
गोविंद छाडि भ्रमन्त दशोदित तौ दृगहैं कछा नयअछ नीके ॥२॥

नोट—स्फुटवाणीजी की सगल सुन्दर दो टीका भी प्रकाशित हो गयी हैं,
न्यो ७ पर १२) मात्र । गोस्वामी श्रीहित रूपबालजी अधिकारी
श्रीराधावल्लभजी का मन्दिर श्रीवृन्दावन मे प्राप्त होगी ।

છપ્પ ।

ના જાનો છિન અન્ત કવન બુધિ ઘટહિ પ્રકાશિત ।
 હુટિ ચેતન જુ અચેત તેહિ મુનિ ભયે વિસવાસિત ॥
 પારાશર સુર ધન્દ કલપ કામિનિ મન રંધા ।
 પાર વ દેહ દુખ દન્દ કૌન કમ કાલ નિકંચા ॥
 યહિ હગ્ધિ હગ્ધ હગ્નિશહિત જિનવ ભ્રમહિ ગુણ સલિલ પગ ।
 જિહિ નામનિ મંગલ લોક તિહું સુ હરિપદ લગ્નુ ન વિલમ્બ કર ૧૩

સવૈયા ।

તૂ બાલક નહિ ભર્યો સયાનપ દાહે કૃષ્ણ ભજત નહિ નીકે ।
 અતિવ સુમિષ્ટ નજિવ મુરભિનપય મન અંધત તંદુલ જલ શીકે ॥
 જય શ્રીહિત હરિવશ નર્કગતિ દુઝર મમદારે કટિયત નકછીકે ।
 ભવઅજ દહિન મુનીજન દુર્લભ પાવત ક્યો જુ મનુજ તન બીકે ॥૪॥

કુંડલિયા ।

અકર્ષ પ્રાણુ જુ ઘટ રહૈ પિય બિહુગ્નત નિકજજ ।
 સર અન્તર અગ દાલ નિશિ તગ્ધ તેજ ધન ગજજ ॥
 તરદ તેજ ધન ગજજ લગ્ન ગુહિ વદન ન આવૈ ।
 જલ વિહન કગિ નૈન મોર કિહિ ભાય બતાવૈ ॥
 જય શ્રીહિત હગ્નિવશ વિચારિ બાદ અસ કૌન જુ અકર્ષ ।
 સારસ યહ સંદેહ પ્રાણુ ઘટ રહૈ જુ અકર્ષ ॥૫॥

કુન્ડલિયા ।

સારસ સર વિપુરંત કો, જો પદ સદૈ શરીર ।
અગિન અનંગ જુ તિય ભખૈ, તો જાને પર પીગ ॥
તો જાને પર પીગ, ધીર ધરિ સકહિ અગ્ન તન ।
મનત સારસહિ કૂટિ, પુનિ ન પરચૌ જુ લહત મન ॥
જય શ્રીહિત હરિવંશ, પ્રિયાગિ પ્રેમ વિગહા બિન વારસ ।
નિકટ કંત નિત નહન, મગમ કહ જાને સારસ તરા ॥

છપ્પય ।

તૈ બાજન કૃત જટિત વિમલ ચન્દન કૃત ઇન્ધન ।
અમૃત પૂગિ તિહિ મધ્ય કરત સગ્ગપ ખવ રિંધન ॥
અદ્ભુત ધગ પર કગત કષ્ટ કંચન હવ વાહત ।
વારિ કગત પાવાગ મન્દ વોમન વિપ ચાહત ॥
જય શ્રીહિત હરિવંશ વિચાગિઝે મનુજ દેહ ગુર ચરણ ગહિ
સકહિ તૌ સગ પગપંચ તજિ કૃષ્ણ કૃષ્ણ ગોવિંદ કહિ ॥૭૥॥

સપૈયા ।

તાતૈ લૈયા મેરી સૌહ કૃષ્ણ ગુણ સંચુ ।
કુત્સિત બાદ વિકાગહિ પગધન સુતુ સિખ મદ પગતિય બંચુ ।
મણિગણ પુજ બ્રજપતિ ઝાડત હિત હરિવંશ કગ ગહિ કંચુ
પાયે જાન જંગત મેં સગ જન કપટી કુટિલ કલિયુગ દંચુ ।
કહિ ચલોક સકલ સુખ પાવત મેરી સૌહ કૃષ્ણ ગુણ સચુ ॥૮૥॥

અગિય ।

માનુષ હૈ તન પાપ બનૈ મનનાય હૈ ।
 દર્શી (કાઠી) બૈકે મદ જગવત હાય હૈ ॥
 જય શ્રીહિત હગ્નિય પ્રપંચ વિષય રસ મોહ કે ।
 હરિ હા મિત કંચન ક્યો ચનૈ પચીઆ લોહ કે ॥૪૭॥

રાગ વિલાખલ ।

તુ ગતિ રંગ બરી દેખિતન હૈ રી રાવે ગહસિ આ મોહનમો વ રૈન ।
 ગતિ અતિ શિથિન પ્રગટ પવટે પટ ગૌગ અંગ પગ ગજત ઐન ॥
 જલગ કપોલ લનિત લટકતિ વટ બૃહટિ કુટિલ જ્યો મનુષ ધૃત મૈન ।
 મુન્દગિ ગહિવ કહિન કચુકિ કત કનક કવચ કુચ મિય નખ દૈન ॥
 અધર મિંમ દલ મલિત આરસ યુત અર આનંદ મૂચત સખિ નૈન ।
 જય શ્રીહિત હગ્નિય દુગતિ નહિ નાગરિ નાગર મધુપ મથન મુખસૈન ॥
 ॥ ૧૦ ॥

રાગ વિલાખલ ।

આનંદ આજ નદ કે દાર ।
 દાસ અનન્ય બજન રસ કાગન પ્રગટે લાલ મનોહર ગ્વાર ॥
 ચન્દન સકલ ધેનુ તન મડિત કુસુમ દામ શોભિત આગાર ।
 પૂગલુ કુમ બને તોરણ પગ ખીચ રચિત પીપર છી ડાર ॥
 સુવતિ યુચ મિય ગોપ વિગજત બાજત પ્રણવ મૃદંગ સુતાર ।
 જય શ્રીહિત હગ્નિય અગ્નિવર રીથિનુ દધિમધુ દુન દગદ કે આગ ॥૧૧॥

ગગ ધનાત્રી ।

મોહનલાલ કે રંગ રાચી ।

મેરે ખ્યાલ પગે જિન કોજી ખાત દરો દિશ માચી ॥

કન્ત અનન્ત કરો જો મેજી ખાત દહો મુનિ સાચી ।

યહ જિય જાડુ બને સિર જીપગ હો વ પ્રગટ હૃદે નાચી ॥

જાગત રાખન મહત ઉર જીપગ મણિ ક્યન જ્યો પાચી ।

જય શ્રીહિત હવિશ ડરો દાકે ડર દો નાહિન મતિ દાચી ॥૧૨॥

૫૬ ।

મં જુ મોહન સુન્યો વેણુ ગોપાલ કો ।

લ્યોમ મુનિ યાન મુર નાગિ વિચકિત બર્જ કહત નહિ અનત •

કંતુ બેદ યતિ તાવકો ॥ શ્રવણ કુડલ ધુગિત ફરત કુતલ

લલિત રચિર કસ્તૂરિ ચન્દન તિનક બાલ કો । ચદ ગતિ મદ

બર્જ નિરખિ હરિ દામ ગહિ દેખિ હવિશ હિત વે

નૈદલાલ કો ॥ ૧૩ ॥

૫૬ ।

આજ તૂ જ્વાલ ગોપાલ મો ખેલિરી ।

છાડિ અતિ માન બન ચપલ ચલિ ભામિની તર તમાય મો

હરજી કનક ધી ખેલિરી ॥ સુખટ સુન્દર લલન તાપ પર વલ

દમન તૂ વ લલના રસિક દામ ધી ખેલિરી । વેનુ દાનન કવણિત

શ્રવણ સુન્દરિ સુનત મુક્તિ સમ સકલ સુખ પાપ પગ ખેલિરી ॥

ચિદ્દ બ્યાકુલ નાથ ગાન ગુણ સુવતિ તવ નિરખિ મુખ દામ

દો કદન અખ હેલરી । મુનન હરિવંશ હિત મિલત મધારમણ
કંઠ ભુજ મેલિ મુખ સિન્ધુ મેં ઝેલિરી ॥ ૧૪ ॥

૫૬ ।

વૃષભાનુ નન્દિની ગાજત હૈ ।

મુગ્ધ રંગ ગસ ભરી ભામિની સકલ નારિ સિર ગાજત હૈ ॥
મૃત હિત ચલન પગ દોઝી પગ મદ ગયંદ ગતિ લાજત હૈ ।
અધર નિરંગ રંગ ગદ્ગદ પર કટક કામકૌ સાજત હૈ ॥
હિર પર લટક ગી લટ કારી કટિવ કિંકિની બાજત હૈ ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ પવટિ પ્રીતમ પદ બુવનિ બુગતિ સગજાજત હૈ ॥

૫૬ ।

ચયૌ વૃષભાનુ ગોપ કે દ્વાર ।

જન્મ લિયૌ મોહન હિત ક્યામા આનંદ નિધિ મુકુમાર ॥
ગાવન યુવતિ મુદિત મિયિ મગવ ઉચ્ચ મધુર ધુનિ ધાર ।
વિવિધિ કુમુમ કિંગવય કોમલ દય જોભિન વન્દનવાર ॥
વિદિત વેદ વિધિ વિદિત પ્રિયવર કર સ્વસ્તિનુ હન્યાર ।
મૃદુલ મૃદંગ મુગ્ધ ભેરી લક્ષ દિવિ હુંદુભિ નય કાર ॥
મામલ સુત ખંદી ચાગ્યુ જસ કહત પુકાર પુકાર ।
હાટક હીર શ્રી પાટંગ દેત સમ્હાર સમ્હાર ॥
ચન્દન મકલ ધેનુ તન મંડિત ચયે જુ ગાલ જંગાર ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ દુગ્ધ દધિ ઊરકત મધ્ય હરિદ્રાગા ॥ ૧૫ ॥

રાગ ગૌરી ।

તેરૈઈ ધ્યાન ગધિકા ધ્યારી ગોવર્દન ધર લાલહિં ।
 કનક લતા સી ક્યો ન વિગળત અરુઝી રયામ તમાલહિં ॥
 ગૌરી ગાન મુતાન તાલ ગદિ નિઝવત ક્યો ન શુપાવાહ ।
 યહ યૌવન કંચન તન ગાલિનિ સદૃશ હોત યહ કાલહિં ॥
 મેરે કહૈં વિલમ્બ ન કરિ સખિ ભૂગિ ભાગ અતિ ભાલહિં ।
 જમ શ્રીહિત હરિવંશ હચિત હૌ ચાહત સ્યામ કંક કી માલહિં ॥૧૭॥

રાગ સમયહ ।

આરતી મદન ગોપાલ કી કીજિયૈ । દેવ ઋપિ વ્યાસ શુકદાસ
 સખ કહત નિજ ક્યો ન બિન કહત ગસ મિન્દુ કૌ પીજિયૈ ॥
 અગર કરિ ધૂપ કુમ કુમ મલય રંજિત નવ વર્તિકા ધૂત મો
 પૂરિ રાખૌ । કસુમ કૃત માલ નૈહલાલ કે ભાલ પર તિલક કગિ
 પ્રગટ યશ ક્યો ન ભાખૌ ॥ ભોગ પ્રભુ યોગ ભગિ થાગ ધગ
 કૃષ્ણ પં મુદિત ભુજ દંડ વર ચમગ દોરૌ । આચમન પાન
 હિત મિલત કર્પૂર જલ સુભગ મુખ વાસ કુવ તાપ નારૌ ॥
 ગંખ દુંદુભિ પ્રભુવ ઘટ દલ વેણુ રવ ઝલ્લરી સહિત સ્વગ સપ્ત
 નાર્યૌ । મનુજ તન પાય યહ દાય પ્રજગજ ભજ સુખદ હરિવંશ
 પ્રભુ ક્યો ન ચાચૌ ॥ ૧૮ ॥

૫૬ ।

આરતી કીજૈ 'શ્યામ સુન્દર કી ।
 નન્દ કે નન્દન ગધિકા વર કી ॥

ભગિનિ કિં દીપ ગ્રેમ મિં બાપી ।
 સાધુ મગનિ મિં અનુદિનગતી ॥
 આગતિ વન યુવતિ પૂથ મન બાપે ।
 યામ લીલા શ્રીહરિનિવ દિત ગાપે ॥૧૮॥
 ગગ ગૌરી ।

જે કોજી જાઈ મનાઈ દિયે ।
 મેરે પ્રાણનાથ થી સ્વામા સખત કોજી તણુ ઊથે ॥
 ને અવનાગ કમ્મ ભજત હૈં ધગિ હૃદ મન જુ દિયે ।
 ને કમગિ તજત મર્યાદા વન મિહાર મસ પિયે ॥
 ગોયે રતન ફિગત ને ઘર ન કોન કાજ એસે જિયે ।
 જય શ્રીહરન હરિવંશ અનન સચુ નાહી મિન યા ગર્જાક નિયે ॥૨૦॥

ગગ કૃષ્ણાણુ ।

હરિ મસના ગગા ગગા ગટિ ।
 અનિ આપીન આતુર યત્રપિ પિય કહિયત હૈ નાગર નટ ॥
 સખમ દુમ પગિંબન કુમન કૃદત કાવિંદી તટ ।
 વિવરન હૈસન વિગીન એકિત સતુ મીઅન એમુવન વસીવટ ॥
 અગ નગ પગિંધાન વસન લાગત તાલે જુ પીતપટ ।
 જય શ્રીહરન હરિવંશ પ્રભમિત દયામા દૈ ખાગી કચન ઘટ ॥૨૧॥

ગગ કૃષ્ણાણુ ।

લાલ હી રૂપ માણુગી નૈનન નિગખિ નૈક સખી ।
 મનસિજ અન હ ન હામ મામગે મુદમાગ ગણિ નખ ગિખ

અંગ અંગનિ ઉમંગ સૌભગ સીંચ નખી । રંગ મગી સિર મુરંગ
 પાગ લટકિ રહી બામ બાગ ચમ્પકલી કુટિલ અલક બીચ બીચ રખી ।
 અયત દ્રગ અરુણ લોલ કુંડલ મંડિત કપોત અંધર દસન દીપતિ
 કી છરિ ક્યોં હં ન જાત લખી ॥ અભયદ બુજ દંડ મૂલ
 પીન અંશ સાનુકૂલ કનક નિકય લલિત દુકૂલ દામિની ઘરખી ।
 ઉર પર મંદાર હાર મુક્તાવર વર મુદાર મત દુરદ ગતિ તિયન
 પ્રી દેહ દશા કરખી ॥ મુકલિત વય નવ કિશોર વચન રચન
 ચિત કે ચોર મધુ રિતુ પિક શાય નૂન મંજરી ચખી । જય શી
 નટવત હરિવંશ ગાન રાગિણી કલ્યાણ તાન સપ્ત સ્વરન કલ
 ધતે પર મુરસિકા વચ્ચી ॥ ૨૨ ॥

રાગ મલાર ।

દોહી જન બીજત અટકે પાતન ।
 સધન કુંજ કે દારે ઠાડે અમ્મર લપટે ગાતન ॥
 લલિતા લલિત રૂપ રસ બીજું રૂંદ બચાવત પાતન ।
 જય શ્રીહત હરિવંશ પરપર પ્રીતમ મિત્રવત રતિ રસ ધાતન ॥૨૩॥

ચાર દોહા ।

સવયોં હિત નિષ્કામ મત, જન્દાવન વિશ્રામ ।
 શ્રી રાધાવલ્લભ લાલ કૌ, હૃદય ધ્યાન મુખ નામ ॥૨૪॥
 તનહિ રાખિ સતસંગ મેં, મનહિ પ્રેમ રસ ભેવ ।
 મુખ ચાહત હરિવંશ હિત, કૃષ્ણ કલ્પતરુ સેવ ॥૨૫॥

દ્વિતીય પત્રી ।

શ્રીકૃષ્ણભાનુનન્દિની જન્મતિ । જોએ લિખતં શ્રીહરિવંશ
 વિદુલદાસ કે કોટિ કોટિ અપરાધ મેં જેની આગશે
 પાઠિયે । વિદુલદાસ મેરે પ્રાણુ હૈં જો શાસ્ત્ર મર્યાદ સત્ય
 હૈં ઐઞ ગુરુ મહિમા એમે હી સત્ય હૈ તૌ પ્રજ નન
 તરુણિ કદમ્બ ચૂડામણિ શ્રીરાધે તિહારે સ્થાપે ગુરુ માર્ગ
 વિપ્રે અવિશ્વાસ અસાની હૈ હોત હૈ તાતેં યહ મર્યાદ
 રાખના । તુમ દોગિ સદ્ય આનન્દ ખરસૌ વિદુલદાસ
 હૈ અહો સી ચનો ।

ધતિ દસરી શ્રીમુખ પત્રી હી જય જય કીરતિ ।



(ये दोनों पत्र संवत् १५६५ के लगभग के लिखे प्रतीत होते हैं)



आत्ममनातन अन्यस्य श्रीहित राधावल्लभ (त्रय) सम्प्रदाय-
 पूर्वाचार्य-शिरोमणि श्रीहित वशीस्वरूप ज्ञानत श्रीमद्गोस्वामी
 श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु ।

अप्रतगण	} आश्विन पुनरागमन	} अतर्ध्यान
वैशाख शु० ११ च द्वापर		
सप्तम १९३० विक्रम	सप्तम १९३१ विक्रम	सप्तम १९०६ विक्रम

प्रतेमान श्रीहिता १९६२ सम्प्रत १९६० विक्रम

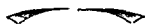
✽ શ્રીરાધાવલ્લભોજયતિ ✽

✽ શ્રીહિતહરિવંશચન્દ્રોજયતિ ✽

✽ અધિધારીશ્રીહિત ગુરુ કિશોરીનાથો વિજયતે ✽

શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીહિતહરિવંશચન્દ્ર મહાપ્રભુજી વિરચિત-

શ્રીમચ્ચતુરાશીજી



(શ્રીપ્રિયાજી શ્રીહિતસખી-પરસ્પર સંભાષણ) શય્યા સમય
રાગ વિભાસ ।

જોઈ જોઈ પ્યારો કરૈ સોઈ મોહિ ભાવૈ-

ભાવૈ મોહિ જોઈ સોઈ સોઈ કરૈ પ્યારે ।

મો કૌ તો ભાવતી દૌર પ્યારે કે નૈનનિ મેં-

પ્યારો ભયો આઢૈ મેરે નૈનનિ કે તારે ॥

મેરે તન મન પ્રાણ હ તં પ્રીતમ પ્રિય-

અપને કોટિક પ્રાણ પ્રીતમ મોસાં હારે ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ હંસ હંસિની સાવલ ગૌર-

દહો કૌન કરૈ જલ તરંગનિ ન્યારે ॥૧॥

(શ્રીહિતસખી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ) શય્યા સમય
રાગ વિભાસ ।

પ્યારે બોલી દામિની આજ નીકી દામિની-

જોટિ નવીન મેલ સૌ દામિની ।

भोदन रसिक गमरी भाई तासां गु-

मान हरे ऐसी केन क्षमिनी ॥

नय श्रीद्वितीयाष्टी श्रवण सुनत धरी-

गमिका-रमणु गौ भिली गज गमिनी ॥२॥

(श्रीद्वितीयाष्टी-सभी पररपग सभापणु) प्रात भगना समय

राग विभास ।

प्रात समय होजि रस लंपट-

सुरत युद्ध नय सुत अति हूय ।

अम वारिण धन विन्दु पदन पर-

भुपणु अंगडि अंग विदल ॥

कणु गौ तिलक शिथिल अलक्षानवि-

पदन कमल माना अलि भूय ।

नय श्रीद्वितीयाष्टी भदन रंग रंगि रहे-

नैन नैन कटि शिथिल हुकुल ॥३॥

(श्रीद्वितीयाष्टी-श्रीद्वितीयाष्टी पररपग सभापणु) भगना समय, हास

राग विभास ।

आज तो सुनति तेरा पदन/आनन्द भर्यौ-

पिय के संगम के सुनत सुख येन ।

आलम वसित ओल सुगं रंगे कपोल-

विथित अरुणु छनीटे होजि नैन ॥

कथि तिलक बेश छित उभम केश-

शिर सीमंत अति माना तैन

કરુણા કૃતિ ઉદાર ગખત કહૂ ન સાર-

દસન વસન લાગન જખ દૈન ॥

કાહે કૈા દુગત લીર પવટે પ્રીતમ ચીગ-

બસ કિયે સ્યામ સિખૈ સત મૈન ૧

ગલિત ઉગસિ માલ શિયિય કિંકિણી જાવ-

જય શ્રીહિત હગ્વિશ લતા ગૃહ સૈન ॥૪॥

(શ્રીહિતસખી-શ્રીસખી પરસ્પર સમ્ભાષણ) મગવા સમય, હાસ

રાગ વિભાસ ૧

આજ પ્રભાત લતા મન્દિર મે-

સુખ વગ્ધત અતિ હગ્પિ યુગલ વર ૧

ગૌર સ્યામ અભિગમ રંગ ભરિ-

લટકિ લટકિ પગ ધગત અનિ પગ ॥

કુચ કુમકુમ રન્જિત માલાવલિ-

સુગત નાય શ્રીસ્યામ ધામ ધગ ૧

પ્રિયા પ્રેમ કે અટ અલકૃત-

ચિત્તિન ચતુર શિરોમણિ નિજ કર ॥

દમ્પતિ અતિ અનુગમ મુદિત કલ-

ગાન કરત મન હરત પરસ્પર

જય શ્રીહિત હગ્વિશ પ્રસંશ પગમન-

ગામન અલિ સ્વ દેત મધુર તગ ॥ ૫ ॥

(શ્રીહિતસખીજી યુગલ પ્રતિ સંભાષણ) મંગલા સમય, હાસ

ગગ વિભાસ ।

કેન ચતુર યુવતી પ્રિયા-

જલિ મિસત લાલ ચોર દૂલે રૈન ।

દુરવત મોડવ દુરૈ મુનિ પ્યારે-

રંગ મેં ગણિતે ચૈન મેં નૈન ॥

કે નખ ચન્દ્ર વિગતે પટ-

અટપટે મેં જૈન ।

જય શ્રીહિત દરિવંશ રસિક-

ગદ્યાપતિ પ્રમથિત મૈન ॥ ૬ ॥

(શ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ) શ્રાધા સમય

ગગ ખિલાવલ ।

આજ નિકુંજ મંજુ મેં ખેલત-

નવલ કિશોર નવીન કિશોરી ।

અતિ અનુપમ અનુરાગ પરસ્પર-

મુનિ અબ્જત ભૂતલ પર જોરી ॥

વિદુમ સ્ફટિક વિવિધિ નિર્મિત ધર-

નવ કર્પૂર પરાગ ન ચોરી ।

દેખવ દિશલય શયન મુપેશલ-

તાપર સ્થામ નિવેશિત જોરી ॥

મિથુન હાસ પરિહાસ પરાયન-

પીક કપોલ કમલ પર ઝોરી ।

ગૌડ સ્થામ ભુજ કલહ મનોહર-

નીરી બધન મોચત ડોરી ॥

હગિ હગ મુકુર વિલોકિ અપનપૌ-

વિભ્રમ નિકલ માન યુત ભોરી ।

ચિવુઝ સુચારુ પ્રતોચ પ્રતોધિત-

પિય પ્રતિવિંવ જનાય નિહોરી ॥

નેતિ નેતિ વચનામૃત સુનિ સુનિ-

લલિતાદિક દેખતિ દુરિ ચોરી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ કરત કર ધૂનન-

પ્રણય કેપ માલાવલિ તોરી ॥ ૭ ॥

(શ્રોહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સમાપણુ) પ્રાત સમય, વનવિહાર

રાગ ખિલાવલ ૧ ।

અતિ હી અરુણુ તેરે નયન નલિન રી ।

આલસ યુત ઇતરાત રૅંગ મગે-

બથે નિશિ જગગ મધિન મલિનરી ॥

શિથિલ પલક મે ઉઠતિ ગોલક ગતિ-

વિધયૌ મોહન મૃગ સકત ચલિ ન રી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ હસ કલ ગામિનિ-

સખમ દેત શ્ર મરનિ અલિન રી ॥ ૮ ॥

(શ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ) શૃંગાર સમય
રાગ ખિલાવલ ।

બતી શ્રીરાધા મોહન કી જોરી ।

ઇન્દ્ર નીલમણિ સ્વામ મનોહર-

શોતકુંભ તન ગોરી ॥

બાલ વિશાલ તિલક હરિ કામિનિ-

ચિકુર ચન્દ્ર ખિચ રોરી ।

ગજ નાયક પ્રભુ ચાલ ગયંદનિ-

ગતિ વૃષભાનુ દિશોરી ॥

નીલ નિચોલ ધ્રુવતિ મોહન પટ-

પીત આરણ્ય શિર ખોરી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક રાધાપતિ-

સુરત રંગ મેં જોરી ॥ ૯ ॥

(શ્રીહિતસખી-સખી પ્રતિ સંભાષણ) રાખ્યા સમય
રાગ ખિલાવલ ।

આજ નાગરી કિશોર ભાવતી વિચિત્ર જોર-

કહા કહૈં અંગ અંગ પરમ માધુરી ।

કરત કૈલિ કંઠ મેલિ બાહુ દંડ ગંડ ગડ-

પરસ સરસ રાસ લાસ્ય મંડલી જુરી ॥

શ્યામ સુન્દરી ખિહાર ખાંસુરી મૃદંગ તાર-

મધુર ઘોષ નૃપુરુહિ કિંકિણી સુરી ।

જય શ્રી દેખત હરિવંશ આલિ નિર્તની સુધંગ ચાલિ-

વારિ ફેર દેત પ્રાણ દેહ સૌ દુરી ॥ ૧૦ ॥

(શ્રીહિતસખી સખી પ્રતિ સંભાષણ) રચ્યા સમય

રાગ બિલાવલ ।

મંજુલ કલ કુંજ દેશ રાધા હરિ વિશદ વેશ-

રાકા નમ કુમુદબધુ શરદ વામિની ।

શ્યામલ દુતિ કનક અંગ વિહરન મિલિ એક સંગ-

નીરદ મણિ નીલ મધ્ય લસત દામિની ॥

અરુણ પીત નવદુકૂલ અનુપમ અનુરાગ મૂલ-

સૌરભ સુત શીત અનિલ મન્દ ગામિની ।

કિશલય દમ રચિત શૈવ બોલત પિય ચાટુ બૈન-

માન સહિત પ્રતિ પદ પ્રતિકૂલ દામિની ॥

મોહન મન મથત માર પરસત કુચ નીખી હાર-

બેપથ સુત નેતિ નેતિ બદતિ બામિની ।

નરવાહન પ્રજુ સુકેલિ બહુ વિધિ ભર ભરત ઝેલિ-

સૌગત રસ રૂપ નદી જગત પામિની ॥૧૧॥

(શ્રીહિત શ્રીપ્રિયાજી શ્રીસખી-પરસ્પર સંભાષણ) રાસ સમય

રાગ મિલાવલ ।

ચલહિ રાધિકે સુગ્ધન તેરે હિત સુખ નિધાન-

રાસ રચૈ શ્યામ તટ દર્શિદ નન્દિની ।

નિર્તાત સુવતી સમૃદ્ધ રાગ રંગ અતિ કુતૂહ-

બાજત રસમૂલ મુરલિકા અનન્દિની ॥

વશીનટ નિકટ જહા પગમ ગમણિ ભૂમિ તહા-

સકલ મુખદ મવય જહૈ વાયુ મન્દિતી ।

બતી ઈન્દ્ર વિદ્યાશ કનન અતિશય મુવાસ-

ગકા નિરિ શન્દ માશ વિમન અન્દિતી ॥

નરખાહન પ્રભુ નિહાર કોચન બરિ થોપ નારિ-

નખ શિખ સૌહર્દ્ય કામ દુખ નિકન્દિતી ।

ખિલસહુ ભુજ શ્રીવ મેલિ બામિનિ મુખ સિંધુ ઝેલિ-

નવ નિકુંજ શ્યામ કેલિ જગત અન્દિતી ॥૧૨॥

(શ્રીહિતજી-શ્રીપ્રિયાજી-સખી પરસ્પર સમ્બાધણુ) મંગલા કિપગન્ત

ગગ ખિલાવલ ।

નન્દ કે લાલ હરૈયા મન મોર ।

હૌ અપને મોતિન લર પોવતિ-

કાકર ડારિ ગૈયા સખિ મોર ॥

બંક વિયોકનિ ચાલ છખીલી-

ગસિક શિરોમણિ નન્દકિશોર ।

કહિ કેમ મન રહત શવણુ મુનિ-

સરસ મધુર સુરલી કી ઘોર ॥

છન્દુ ગોવિંદ પદન કે કારણ-

ચિતવન ડૌ ભયે નૈન ચક્રોર ।

જમ શ્રીહિત હરિવ શ રસિક રસ સુવતી-

તૂ લે મિલિ સખી પ્રાણુ અકોર ॥૧૩॥

(શ્રીહિતસખીજી કીયાલજી પ્રતિ સંભાષણ) આન સમગ

રાગ ટોડી ।

અધગ અરુણુ તેરે કેસે કે દુરાજી ।

રવિ શશિ શક બજન દિયૌ અપખસ-

અદ્ભુત રંગાનિ કુસુમ બનાડી ॥

શુભ કેમેય કસિય કૈસ્તુભમણિ-

પંદજ સુતનિ હૈ અગનિ હુપાજી ।

હરપિત ઇદુ તજત જૈસે જલધર-

સૌ ભ્રમ દૂંઢિ કહા હૈ પાજી ॥

અમુ ન દમ્મ કજ્જ નહીં વ્યાપત-

હિમકર તપે તાહિ કેસે કે ભુઝાજી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક નવ રંગ પિય-

ભુકુગી લૌહ તેરે અંજન લરાજી ॥૧૪॥

(શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ) સુરતાંત સમગ

રાગ ટોડી ।

અપની ખાત મોસા કહિરી બામિની-

ઐગી મૌગી રહત ગરબ કી માતી ।

હૈં તો સૌ કહત હારી સુનિરી રાધિકા પ્યારી-

નિશિકૈ રંગ ઐ ન કહત લખતી ॥

ગલિત કુસુમ બૈની સુનિરી સારંગ નૈની-

હરી લટ અચગ બદતિ અવમાતી ।

અવગ નિરંગ દંગ રંગારી કપોલનિ-

યુવતિ ચલતિ ગમગતિ અરુમાતી ॥

ગદમિ ન્મી બળાને ગસન બસન દીલે-

શિયેલ કસનિ કચુદી ઉગતી ।

સખી મૌ મુનિ જવણુ વચન મુદિત મન-

ચલી હરિવશ બવન મુસિદાતી ॥૧૫॥

(શ્રીહિતસખી ૭-શ્રીપ્રિયા ૭ પગપર સખ્યા ૧૭) નવ્યા સમય

ગમ દોડી ।

આજ મેઝે દહૈ ચનૌ મુગનૌની ।

ગાવત સગસ યુવતિ મદ્ય મે-

પિય મૌ મિતે બલૈ પિતૌની ॥

પન્મ પ્રવીણુ દોઢ વિલા મે-

અબિનય નિષુણુ લાગ ગતિ લૈની ૬

૨૫ ગણિ મુનિ નવન કિગોરી-

પન પન ઘટતિ ચાદિની રૈની ॥

ગય શ્રીહિત હરિવશ ચલી અતિ આતુ-

ગધાનમણુ મુગનુ સુખ દૈની ।

નહસિ - નસિ આલેગન નુમન-

મદન દોઢિ કુલ બડ કુલૌની ॥૧૬॥

(શ્રીહિતસખીશ્રીયુગલ તથા સખી પ્રતિ સંભાળુ) ચાયા સમય
રાગ ટોડી ।

- આજ દેખિ મમમુન્દિરી મોહન બની કેસિ ।

અંસ અંસ બાહુ દૈ કિશોર જોર રૂપ રાસિ-

મનો તમાલ ઉઝિ રત્ની સરસ કનક મેયિ ॥

નવ નિકુળ પ્રવર ગુંજ મંજુ ઘોળ પ્રેમ પુંજ-

ગાન કરત મોર પિકનિ અપને ચરસા મેયિ ।

મદન મુક્તિ અંગ અંગ ખીચ ખીચ સુતર રંગ-

પલ પલ હરિવંશ પિવત નૈન ચાક ઝેયિ ॥૧૭॥

(શ્રીહિતસખીશ્રી શ્રીપ્રિયાશ્રી પરસ્પર સંભાળુ) ચાયા નુરતાન સમય
રાગ આસાવરી ।

હુનિ મેરો વચન હખીલી શ્રીરાધા ।

તૈ પાયો રસસિન્ધુ અમાધા ॥

૧ દયમાનુ મોપ છી ખેરી ।

મોહન લાલ રસિક દંસિ બેરી ॥

જદિ વિરયિ ઉમાપતિ નાથે ।

તાપર તૈ બન કૂલ ગિનાથે ॥

જો રસ નેતિ નેતિ શ્રુતિ બાખ્યૈ ।

તાકો તૈ અધર મુઘા રસ ચાખ્યૈ ॥

તેરો રૂપ દહત નદી આવે ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ કછુક મથ ગાય ॥૧૮॥

(શ્રીહિતસખીજી યુગલ તથા સખી પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ) રાસ સમય

રાગ આસાવરી ।

ઝેલત ગસ રસિક વ્રજ મંડન ।

યુવતિન અંશ દિયે જુજ દંડન ॥

શરદ વિમલ નભ ચન્દ્ર વિરાજે ।

મધુર મધુર મુરલી કલ યાગે ॥

અતિ રાજત ધનસ્યામ તમાલા ।

કંચન ઝેલિ યની વ્રજ્યાલા ॥

બાજત તાલ મૃદંગ ઊપંગા ।

ગાન મથત મન કોટિ અનંગા ॥

ભૂપજી બહુત વિવિધિ રંગ સારી ।

અંગ સુધંગ દિખાવત નારી ॥

વરપત કુમુદ મુદિત સુર ઘોષા ।

મુનિયન દિગિ દુ-દુભિ કલ ઘોષા ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ મગન મન સ્વામા ।

રાધારમણ સકલ સુખ ધામા ॥૧૯॥

(શ્રીહિતસખીજી-શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ) સુરતાંત સમય

રાગ ધનાશ્રી ।

મોહન લાલ કે રસ માતી ।

અધુ યુવતિ ગોવતિ કલ મોસાં-

પ્રયમ નેહ સકુચાતી ॥

દેખ સૈમાર પીત પટ ઊપર દહાં ચૂનરી રાતી ।
 ટટી લર લટકત મોતિન કી નખ બિંદુ અંકિત છાતી ॥
 અધર બિંબ અંકિત મપિ મંકિત ગંડ ચલતિ ઉરઆતી ।
 આણુ નૈન ઘૂમત આલસ યુત કુસુમ ગલિત લટપાતી ॥
 આજ રહસિ મોહન સખ લૂટી વિવિધિ આપની થાતી ।
 જય શ્રીહિત હરિવંશ વચન સુનિ બામિનિ ભવન ચલી સુસિકાતી૨૦

(શ્રીહિતસખીઘ્ર-શ્રીપ્રિયાઘ્ર પરસ્પર સંભાષણ) સુરતાન સમય
 રાગ ધનાકરી ।

તેરે નૈન દગત દોઝી ચારી ।

આતિ કુલકાત સમાત નહીં દહ મિલે હૈ કુંજવિહારી ॥
 વિયુરી માંગ કુસુમ ગિરિ ગિરિ પરે લટકિ નહી લટ ન્યારી ।
 ઉર નખ રેખ પ્રગટ દેખિયત હૈ દહા દુરાવત પ્યારી ॥
 પરી હૈ પીક સુભગ ગડનિ પર અધર નિરંગ સુકુમારી ।
 જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિકિની બામિનિ આલસ ઐગ ઐગ ભારી :૧

(શ્રીહિતસખીઘ્ર-શ્રીપ્રિયાઘ્ર પરસ્પર સંભાષણ)
 સુરતાંત વા કુંજાર સમય ।

રાગ ધનાકરી ।

નૈનનિ પર વારે કોટિક અંજન ।

અંચલ ચપલ અરેણુ અનિયારે અગ્રભાગ બન્યો અંજન ॥
 રચિર મનોહર બક વિલોકન સુરત સમર દલ ગંજન ।
 જય શ્રીહિત હરિવંશ કહત ન વનૈ છવિ સુખ સમુદ્ર મન રંજન ॥૨૨

(શ્રીહિતસખીશ્રી-શ્રીપ્રિયાશ્રી પગ્ગપગ અનાપયુ) ગુરુતાત સમય
ગગ ધનાક્રી ।

ગધા પ્યારી તેરે નૈન સતોવ ।

તૈં નિજ ભજન કનક તન યોગન લિયૌ મનોહર મોવ ॥

અધર નિગ ગ અનક લટ છગી રજિત પીક કપોવ ।

તૂરમ મગન બર્ નહિ જનત ગપગ પીત નિચોવ ॥

કુચ યુગ પગ નખ ગપ પ્રગટ માનૌ શકગ શિગ શશિ ટોલ ।

જય શ્રીહિત હરિગ શ કલત કડુ ભામિનિ અતિ આલસ ગૌ જોનગ

(શ્રીહિતસખીશ્રી-શ્રીપ્રિયાશ્રી ૨૧ સખી પગ્ગપગ સમ્ભાષણ) ગમ સમય
ગગ ધનાક્રી ।

આજ ગોપાલ ગસ ગમ ખેવત-

પુલિન મ પનહ તીગ ગી સજની ।

નગદ વિમન નમ ચન્દ્ર વિગજત-

રોચ- ત્રિવિધિ સમીર રી સજની ॥

ચપક બુલ માવતી મુખવિન-

મત મુદિન પિ- દીર રી મજની ।

દેરી મુધગ નગ ગંગ નીડૌ-

ગજ મુવનિન કી ભીગ રી મજની ॥

મયવા મુદિત નિસાન બજનયૌ-

નન ગડ્યૌ મનિ ધી- રી સજની ।

જય શ્રીહિત હરિગ શ મગન મન ક્યામા-

હગત મન નન પીગ ગી મજની ॥૧૧॥

(શ્રીહિતમખીઠ શ્રીપ્રિયાઠ પરસ્પર મનાપણુ) ટુંગાઠ વા ગમ્યા મમય
રાગ ધનાઠી ।

આજ નીકી ખની શ્રીગધિકા નાગરી ।
મજા યુરતિ યુથ મે રૂપ અઠ ચતુર્ગ-
ગીત શ્રુગાઠ ગુણ મનન ન આગરી ॥
દમય દમિણુ ભુગ બામ ભુગ અંશ સખિ-
ગાવતી મગમ મિયિ મનુર અઠ નાગરી ।
મકલ વિદ્યા વિદિત ન્દસિ શ્રીહનિગ હિત-
મિયન નવકુળ વર સ્યામ ગડ બાગરી ॥ગ્યા

(શ્રીહિતમખીઠ શ્રીપ્રિયાઠ પરસ્પર મનાપણુ) ટુંગાઠ વા નમ સમય
રાગ ધનાઠી ।

મોહની મન ગોપાલ દી બાસુરી ।
માધુરી અવલ પુટ મુનન સુનિ ગધિકે-
કુત નિ નજર દે તાપ કો નાસુરી ॥
સગદ નકા ગજનિ વિપિન દન્દા સજનિ
અનિવ અતિ મંદ શીતલ સદિત ગાસુ રી ।
પન્મ પાવન પુલિત બ્રંગ સેવત નવિન-
કપતરુ તીર બવસીઠ કૃત ગાસુ રી ॥
મદ્ય મંડલ બલી છુમ જુ હરિ માં મિલી-
બની બર બનિત ઉપમા દંદા કાસુ રી ।
છુમ જુ કંચન તની લાલ મકન મધુરી-
જય શ્રીગજ દલ હ મ હનિગ રવિ દાસુ રી ॥દા

(શ્રીહિતસ મીશ્ર યુગન તથા સખી પ્રતિ પગ્ગપગ મનાપશુ) રાસ સખ

રાગ જસત ।

મહુ ગિતુ વૃન્દાવન આનંદ ન યોગ ।

ગજત નાગિરી નન કુશન મિશોગ ॥

યથિદા યુગત ૩૫ મજરી ગસાવ ।

વિથકિત અલિ મહુ માધરી શુનાન ॥

અપદ જકુન કુન ત્રિવિધિ સરોજ ।

કેતિકી મેલિની મદ મુદિત મનોજ ॥

ગચદ રચિર જડ ત્રિવિધિ સમીગ ।

મુખલિત નૃત નદિત પિદ પ્રીગ ॥

પાનન પુલિત નન મજુન નિકુજ ।

કિશનય ગયન રચિત મુખ પુજ ॥

મજુ મુરજ કંક મુરલી મૃગ ।

જાગત કિપગ વીણા વગ મુખ ચગ ॥

મૃગમદ મનયજ કુમડમ અરીગ ।

જનન અગગ સત મુરંગિત ગીગ ॥

ગાનત મુદરિ ત્રિ સગસ ધમાગિ ।

પુનમિત જગ મૃગ હિત ન જાગિ ॥

જય શ્રીહિત હરિવગ હસ હસિની મમાજ ।

ઐસંગી પ્રેા મિલિ યુગ યુગ ગજ ॥૨૭॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સભાપણુ) વન વિહાર સમય

ગગ બસત ।

ગધે દેખ બન હી બાત ।

ગ્નિ બસત અન ત મુખવિત કુસુમ અરુ ફન પાત ॥

વેણુ ધ્વનિ નૈદવાય ખોલી સુનિ ડવ કો અગસાન ।

મ્મત દતવ વિનમ્મ બામિનિ વૃથા ગમવમ્મ જાત ॥

લાવ મર્દતમણિ હમીનૌ તુમ જુ દચન ગાત ।

બની જય શ્રીહિત હરિન શ જોરી કિમય ગુણુ ગણુ બાત ॥૨૮॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીનાલજી એવ સખિન પ્રતિ પગ્મપગ સભાપણુ)

શય્યા પા કૃગાર સમય ।

રાગ દેવગધોગ ।

મંગ નવ તપણિ મ્દમ્મ મુકુમણિ સ્વામા આજ બની ।

નખ તિખલૌ ઐગ અગ માધુરી મોઢે સ્વામ ધની ॥

યૌ ગજત મ્વગી ગુણિન કય દનમ્ દજ બદની ।

ચિકુર ચ દ્રિમ્નિ બીચ અર્ધ મિતુ માનૌ અસિન ફની ॥

સૌભગ ગસ શિંગ્ર ઝવત પનારી પિય સીમન્ત હતી ।

નકુટિ મામ કોદડ નપન સગ દજજન રેખ અની ॥

તગલ તિવક તાટક ગડ પર નાસા જલજલ મની ।

હસન કુદ સરસધગ પ નવ પ્રીતમ મન સમની ॥

ચિમુમ મધ્ય અતિ ચારુ સદજ સખિ સાવન વિન્દુ હતી ।

પ્રીતમ પ્રાણુ રતન સમ્પુર કુચ દચુખી હસિમ તની ॥

જુજ મૃણાલિ બલ હગત બલમ મુત પરસ સરસ ગવની ।
 સ્યામ શીશ તરુ મનૌ મિડવારી રૂચી રચિર રજની ॥
 નાભિ ગભીર મીન મોહન મન ખેલન કૌ હૃદની ।
 કૃશ કટિ પૃથુ નિનમ્બ કિકિણિ વૃત કદલિ ખંબ જઘની ॥
 પદ અમ્બુજ બલક મુત જુપણ પ્રીતમ ઉર આવની ।
 નવ નવ ભાવ બિલોભિ ભામ ઇમ વિહગત વર દરિની ॥
 જય ધોહિન હમિશ પ્રસંશિત સ્યામા પ્રીરતિ વિશદ ઘની ।
 ગાવત આવણિ સુનત સુખાકર વિશ્વ દુરતિ દવની ॥ગલા
 (શ્રીહિતસખીજી ગયં સખીન પ્રતિ શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણું)

સખ્યા સમય ,

ગગ દેવગંધાર ।

દેખત નવ નિકુજ સુનિ સજની સાગન હૈ અતિ ચાર ।
 માધવિકા કેતકી લતા લે રંગ્યો મદન આગાર ॥
 ચરદ માસ રાહા નિસિ રીનલ મંદ સુગંધ સમીર ।
 પરિમય પુબ્ધ મનુવન વિચકિત નદનિ કેતકિયા પ્રીર ॥
 બહુરિધિ રંગ મૃદુલ કિસલય દલ નિર્મિત પિય સખિ સેજ ।
 બાજન દનક વિવિધ મનુ પુરિત ધરે ધરનિ પર હેજ ॥
 તાપર કુચલ કિંગોર કિંગોરી હગત દાસ પન્દિતસ ।
 પ્રીતમ પાણિ ઉગજ વગ પરસત યિયા દુગવત વાસ ॥
 કામિનિ કુટિય જુકુટિ અવલોકન દિન પ્રનિપદ પ્રતિકુલ ।
 આનુઃ અતિ અનુગમ વિવસ દરિ ધાય પગ જુજ મૃણ ॥

નાગર નીળી બધન મોચત ઐચત નીલ નિચોલ ।
 બધુ કપટ હઠિ કોપ કહત કલ નેતિ નેતિ મધુ ખોલ ॥
 પરિરંબન વિપરિત રતિ વિતરત સરસ સુરત નિજ કેલિ ।
 ઇંદ્ર નીલમણિ મય તરુ માની લસત કનક કી ખેલિ ॥
 રતિ રણુ મિથુન લલાટ પટલ પર કામ જલ સીકર સંગ ।
 લલિતાદિક અંચલ ઝકઝોરત મન અનુરાગ અભંગ ॥
 જય શ્રીહિત હરિવંશ યથામતિ વરણુત કૃણુ રસામૃત સાર ।
 કાવણુ સુનત ધાપક રતિ રાધા પદ અમુખ સુકુમાર ॥૩૦॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ પરસ્પર સંભાષણ) સુરતાંત સમય

રાગ દેવગંધાર ।

આજ અતિ રાજત દમ્પતિ જોર ।

સુરત રંગ કે રસ મેં ભીને નાગરિ નવલ કિશોર ॥
 અંસન પર ભુજ દિયે વિલોકિત ઇંદુ વદન બિલિ જોર ।
 કરત પાન રસમત્ત પરસ્પર ક્ષોચન ત્રિપિત ચકોર ॥
 છૂટી લટનિ લાલ મન કરધૈ યે યાકે ચિતજોર ।
 પરિરંબન ચુંબન મિલિ ગાવત સ્વર મંદિર કલ ધોર ॥
 પગ ડગમગત ચલત બન બિહરત રચિર કુંજ ધન જોર ।
 જય શ્રીહિત હરિવંશ લાલ લલના મિલિ લિપૈ સિરાવત જોર ૩૧

(શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્બોધણુ) સધ્યા સમય
ગગ દેવગધાર ।

આજ બન કીડત સ્યામા સ્યામ ।

સુભગ બની નિશિ શગદ આદિની રુચિર કુંજ અભિગમ ॥
ખડન અધર કરત પરિભન અચત જધન દુદ્ધલ ।
હર નખ પાત તિરીછી ચિતવનિ દંપતિ રસ સમતૂલ ॥
વે જુજ પીન પયોધર પરસત બામ દયા પિય હાર ।
બસનનિ પીક અલક આકર્ષત સમર શ્રમિત મતમાર ॥
પવ પલ પ્રમલ ચૌપ રસ લંપટ અતિ સુન્દર મુકુમાર ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ આગ તૂણુ ટૂટ દાં બલિવિશદ વિહાર ૩

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ઓગ સખીન પ્રતિ પરસ્પર મમ્બોધણુ)
સુગતાત સમય ।
રાગ દેવગધાર ।

આજ બન ગજત યુગલ દિશેર ।

નદનૈદન જપમાનુન દિની હરે હનીદે બોર ॥
દગમગાત પગ પરત સિધિય ગતિ પરસત નખ ગણિ હોર ।
દસન બમન ખંડિત મણિ મંડિત ગંદ તિલક દંધુ ચોર ॥
દુગત ન દય દગ્ગનિ કે ગેકે અદાન નૈન અવિ ચોર ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ મૈનાર ન તન મન સુગત સમુદ્ર ઝકોર ॥૩૩

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ઐર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ)
સુરતાંત, બનવિહાર ૬૫ શય્યા સમય ।

રાગ દેવગંધાર ।

બન કી કુંજન કુંજન ડોલનિ ।

નિકસત નિષટ સાંકરી ખીચિનિ પરસત નાહિ નિચોલનિ ॥
પ્રાત કાલ ગજની સખ જાગે સૂચત સુખ દગ લોલનિ ।
આલસવંત અરુણ અતિ વ્યાકુલ કધુ ઉપજત ગતિ ગોલનિ ॥
નિર્તાન ભૂકુટિ વદન અમ્બુજ મૃદુ સરસ હાસ મધુ બોલનિ ।
અતિ આસકત લાલ અલિ લમ્પટ બસ છીને મિન મોલનિ ॥
ખિલુલિત શિયિલ શ્યામ છટ્ટી લટ રાજત રુચિર કયોલનિ ।
ગતિ વિપરિત સુબન પરિભન ચિવુક ચારુ ટકટોલનિ ॥
કબાડુ શ્રમિત કિસલય શય્યા પર મુખ અંચલ જક ઝોલનિ ।
દિન હરિવંશ દાસિ હિય સીંચત વારિધિ કેલિ કયોલનિ ॥૩૪॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ એવં સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ)

મૂલન સમય । રાગ દેવગંધાર ।

મૂલત દોજી નવલ દિશોર ।

ગજની જનિત રંગ સુખ સૂચત અંગ અંગ ઉઠિ ભોર ॥
અતિ અનુરાગ ભરે મિલિ ગાવત સ્વર મન્દિર કલ ધોર ।
ખીચ ખીચ પ્રીતમ ચિત ચોરત પ્રિયા નયન હી કોર ॥
અમ્બલા અતિ સુકુમારિ ડરત મન વર હિંડોર જકોર ।

પુલકિ પુલકિ પ્રીતમ જો લાગત દે નવ ડરજ અંકે ૨ ॥
 ઉરઝી વિમલ માન કંઠણુ સો કુંડલ સો કચ ડોર ।
 વેપથ યુત ક્યો બનૈ વિવેચિત આનંદ બદ્યૌ ન થોર ॥
 નિગમિ નિરમિ ફૂલતિ લલિતાદિક વિવિ મુખ ચન્દ્ર ચકોર ।
 દૈ આશીસ શ્રોતરિવ શ પ્રથમસિત કર અચલ હી છોર ॥૩૫॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ જવ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સખાપણુ)
 રાસ સમય । ગગ સાગ ગ ।

આજ બન નીકો રાસ બનાયો ।

પુલ્કિન પવિત્ર સુભગ યમુના તટ મોહન વેણુ બળાયો ॥
 કલ કંઠણુ કિંઠિણિ નૂપુર ધ્વનિ સુનિ ખગ મૃગ સચુપાયો ।
 યુવતિન મંડલ મધ્ય સ્યામ ધન સારંગ રાગ જમાયો ॥
 તાલ મૃદંગ ઉપગ મુરજ ડફ મિલિ ગસ સિંધુ બઢાયો ।
 ત્રિવિધિ વિસદ વૃથમાનુનન્દિની અંગ સુધંગ દિખાયો ॥
 અભિનય નિપુન લટકિ લટ લોચન બૂકુટિ અન ગ નચાયો ।
 તા તા થેઈ તાયેઈ ધગતિ નોતન ગતિ પતિ વ્રજગજ રિઝાયો ॥
 સકલ ઉદાગ નૃપતિ ચૂડામણિ સુખ વાગિધિ વરપાયો ।
 પરિગંબન ચુગ્બન આલિંગન ઉચિત યુવતિ જન પાયો ॥
 અગ્નિ કુશુભ મુદિત નભ નાયક ઇન્દ્ર નિસાન બજાયો
 જય શ્રીહિત દરિયશ રસિક રાધાપતિ મથ ગિતાન જગ છાયો ૩

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ)

શય્યા સમય, સંબ્રમમાન । રાગ સારંગ ।

ચલહિ કિન માનિનિ કુંજ કુટીર ।

તો જિન કુંવરિ કોટિ બનિતા યુત મથત મદન કી પીર ॥

મદ્ગદ સ્વર પુલકિત બિરહાકુલ કાવત બિલોચન નીર ।

ક્યાસિ ક્યાસિ વૃષભાનુનન્દિની વિલપત વિપિન અધીર ॥

બશી વિસિખ વ્યાલ માલા વલિ પંચાનન પિંક કીર ।

મલયજ ગરલ હુતાસન મારુત સાખા મૃગ રિપુ ચીર ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ પરમ કેમલ ચિત ચપલ ચલી પિય તીર ।

મુનિ બયભીત વજ્ર કો પંજર સુરત સુર રણુવીર ॥ ૩૭ ॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સંભાષણ) શય્યા સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ

બેગિ ચલહિ હિંદિ મહર કરત કત નિકુંજ છુલાવત લાલ ।

હા રાધા રાધિકા પુકારત નિરખ મદન ગજ હાલ ॥

કરત સહાય શરદ શશિ મારત કૂઠિ મિલી ઉર માલ ।

દુર્ગમ તકત સમર અતિ કાતર કરહિ ન પિય પ્રતિપાલ ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ ચલી અતિ આતુર શ્રવણ સુનત તિહિં કાલ ।

લે રાખે ગિરિ કુચ બિચ સુન્દર સુરત સુર અજબાલ પાઠદા ॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પરસ્પર સંભાષણ) શ્યામ સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

ખેલ્યો લાલ ચાહત રવન ।

રચિ રચિ અપને હાથ સૈમાર્યો નિકુંજ ભવન ॥

રજની શરદ મંદ સૌરભ સૌં શીતલ પવન ।

તો બિન કુંવરિ કામ છી વેદન મેટવ કવન ॥

અલક્ષિ ન અપલ બાલ મૃગનયની તબિવ મવન ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ મિલવ પ્યારે છી આરતિ દવન ॥૩૯॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સંભાષણ) શ્યામ સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

બેઠે લાલ નિકુંજ ભવન ।

રજની રચિર મલિકા મુકલિત ત્રિવિધિ પવન ॥

તૂ સખિ કામ કેલિ મન મોહન મદન દવન ।

પૃથા ગહરુ કત કંગતિ કૃષોદરિ કારન કવન ॥

અપલ ચત્રી તન છી સુધિ બિસરી સુનત શ્રવન ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ મિલે રસ લંપટ રાધિકા રવન ॥૪૦॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગત પ્રતિ સંભાષણ) પ્રાતઃ સમય, સંબ્રમમાન

રાગ સારંગ ।

પ્રીતિ છી રીતિ રંગીનૌઈ જાન ।

યઘપિ સદસ લોક ચૂડામણિ દીન અપનપૌ માન ॥

ચમુના પુલિન નિકુંજ બવન મેં માન માનિની ઠાનૈ ।
 નિકટ નરીન કોટિ કાનિનિ કુલ ધીરજ મનાહ ન આનૈ ॥
 નસ્તર નેહ ચપલ મધુકર જ્યો આન આન સૌ વાનૈ ।
 જય શ્રીહિત હરિન શ ચતુર સોઈ લાવહિ જાડિ મૈંડ પહિયાનૈ ૪૧

(શ્રીહિતસખીજી યુગલ ઐગ સખીન પ્રતિ સમ્બોધણ)

પ્રાતઃ યા શય્યા સમય । રાગ સારંગ ।

પ્રીતિ ન કાફ કી કાનિ નિચારૈ ।

મારગ અપમાગગ વિચકિત મન કો અનુસગત નિચારૈ ॥
 જ્યૌ સગિતા આનણુ જલ ઉમગત સનમુખ નિધુ સિધારૈ ।
 જ્યૌ નાદહિં મન દિયૈ કુગનિ પ્રગટ પાતધી મારૈ ॥
 જન શ્રીહિતહરિવ શ કિલગ સારંગ જ્યો સવન શરીગહિ જારૈ ।
 નાયક નિપુણ નનલ મોહન મિનુ કૌન અપનપૌ હારૈ ॥૪૨॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ સમ્બોધણ)

શય્યા સમય, પરિહાસ મેં સ ભ્રમમાન ।

રાગ સારંગ ।

અતિ નાગરિ વૃપમાનુ દિશેરી ।

સુનિ દ્વતિકા ચપલ મૃગનૈની આકર્ષિત ચિતવત ચિત ગોરી ॥
 શ્રીફલ ઉરજ ક ચન સી પેહી કટિ કેહરિ ગુણુ સિંધુ અકોરી ।
 ખેણી ભુજંગ ચન્દ્ર સત બદિની કદલી જંધ જલચર ગતિ ચોરી ॥
 સુનિ હરિવંશ આજ ગજની મુખ બન મિવાય મેરી નિજ જોરી ।
 યદપિ માન સમેત બામિતી સુનિ કત ગહત બરી જિય જોરી ॥૪૩॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાવણુ) શય્યા સમય,
સખમમાન । રાગ સાર ગ ।

ચલિ ચુન્દગિ બેલી જુદાવન ।

દામિનિ કંક લાગિ દિનિ ગજલિ તુ દામિનિ મોહન નૌતન ધન ॥
ક ચુખી સુરંગ વિવિધ રંગ મારી નખ યુગ બિન બને તેરે તન ।
યે સમ ઉચિત નવલ મોહન દૈ શ્રીફલ કુચ યોવન આગમ ધન ॥
અતિશય પ્રીતિ હુતી અન્તર ગતિ-

જય શ્રીહિત હગિનશ ચલી મુકવિત મન ।

નિબિડ નિકુજ મિરે ગસ સાગર-

છતે શત રતિરાજ સુગત રન ॥ ૪૪ ॥

(શ્રીહિતસખીજી મખીન પ્રતિ સમ્બાવણુ) વન વિહાર સમય
ગગ સાર ગ ।

આનતિ શ્રીજીઆનુદ્ધારી ।

રૂપ રાસિ અતિ ચતુર ગિરોમણિ અંગ અંગ મુકુમારી ॥
પ્રથમ ઉગટિ મગજન કગિ સલિજત નીલ વરણુ તન સારી ।
ગુણિત અવક તિવન કૃત સુન્દર સેદુર મૌગ મેંભારી ॥
મૃગજ સમાન નૈન અ જનન મુત રચિર રેખ અનુસારી ।
જરિત લન ગ લલિત નાશા પર દયાનાવલિ કૃતકારી ॥
શ્રીફલ ઉગજ ફૂંભી ક ચુખી કસિ બિપર હાગ છવિ ન્યારી ।
કૃષ કટિ ઉદગ ગ બીગ નાનિપુટ વદન નિતન્યનિ ભારી ॥

મનૌં મૃણાલ જૂથણુ જૂપિત જુજ શ્યામ અંસ પર ડારી ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ યુગલ કરણી ગજ બિહરત બન પિય ખ્યારી જય
(શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણુ) શય્યા સમય
રાગ સારંગ ।

વિપિન ઘન કુંજ રતિકેલિ જુજ મેલિ રચિ-
શ્યામ શ્યામા મિલે શરદ કી યામિની ।
હૃદય અતિ ફૂલ સમવૂલ પિય નાગરી-
કરિણિ કરિ ભત્ત મનૌં બિબિધિ ગુચુ રામિની ॥
સરસ ગતિ હાસ પરિહાસ આવેશ બસ-
દલિત દલ મદન બલ કોક રસ કામિની ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ સુનિ લાલ લાવણ્ય બિદે-
પ્રિયા અતિ શર સુખ સુરત સંગ્રામિની ॥૪૬॥

(શ્રીહિતસખીજી કીયુગલ ઔર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણુ)
બનવિહાર સમય । રાગ સારંગ ।

બન કી લીલા લાલહિં બાવૈ ।

પત્ર પ્રસૂત ખીચ પ્રતિવિબહિ નખ શિખ પ્રિયા જનાવૈ ॥
સકુચ ન સકત પ્રગટ પરિરંબન અલિ લંપટ દુરિ ધાવૈ ।
સંશ્વમ દેત કુલકિ કલ કામિનિ રતિ રથ કલહ મથાવૈ ॥
ઉલટી સવૈ સમજિ નૈનનિ મેં અંજન રેખ બનાવૈ ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રીતિ રીતિ વસ સજની શ્યામ કહાવૈ ॥૪૭॥

(શ્રીહિતસખી ૭ સખીન પ્રતિ ૫૦ સ૦) શ્રંગાર યા અતવિહાર સમય ।

રાગ સારંગ ।

બની વૃષભાનુનન્દિની આજ ।

બૂપગુ બસન વિવિધિ પહિરેં તન પિય મોહન હિત માજ ॥

હાવ ભાવ લાવણ્ય બુકુટિ લટ હરત યુવતિ જન પાજ ।

તાલ ભેદ અગ્ર ઘર સ્વર સચત નૃપુર દિંદિણિ બાજ ॥

નવ નિકુંજ અભિનામ શ્યામ સૈંગ તીકૈ બન્યૌ સમાજ ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ વિલાસ ગસ યુત જોરી અગ્નિચલ રાજ ॥૪૮॥

(શ્રીહિતસખી ૭ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્ભાષણ) શ્યા વિહાર સમય

રાગ સારંગ ।

ત્રેખિ મખી રાધા પિય કેલિ ।

યે દોઝ ખોરિ ખિરક ગિરિ મદવર-

વિહરત કુમરિ કંક જુગ મેલિ ॥

યે દોઝ નવય દિશોર રૂપ નિધિ-

વિટપ તમાવ દનક મનોં ગેલિ ।

અધર અદન ચુમ્મન પરિભન-

તન પુત્રકિત આનંદ રસ ઝેલિ ॥

પટ વંધન કંચુપી કુચ પરમત-

કોપ કપટ નિરખન કર ગેલિ ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ લાય રમ સમ્પટ-

ધાય ધન કો બીચ મકેલિ ॥ ૪૯ ॥

(श्रीछितसम्भीष्ट सम्भीन प्रति सम्भाषण) शय्या समय

~ नाग सारंग

नवन नागनि नवन नाग डिशोर मिलि-

कुज कोमल कमल दननि शय्या रथी ।

गौर श्यामल अ ग रथिर तापर मिने-

सरम भलि नील मनौ भृदुल कथन भयी ॥

सुरत नीनी निगध डेत पिय भानिनी-

प्रिया ही छुजनि मे कलक मोहन मयी ।

सुभग श्रीद्व उरज पाणि पगसत-

गैप छुकार गर्व दग भगि भामिनि लयी ॥

कोक कोटिक रमसि रहसि श्रीहरिव श छित-

निविधि कन माधुरी किमपि नाछिन जयी ।

प्रशुभमय रसिक ललितादि लोचन व्यक्त-

पिपत मकर द सुष रासि अ तर सयी ॥५०॥

(श्रीवाल्ल श्रीप्रियाल्ल प्रति सम्भाषण) दान समय ।

गग सारंग ।

दान है री नवन डिशोरी ।

मौगत लाल लाडिलौ नागर-

प्रगट लज्ज दिन दिन ही चोरी ॥

नव नाग कनक हीगवलि-

जिद्रुम संगस जननभलि गोरी ।

પૂરિત રગ પીયૂષ યુગન ઘટ-

કમલ કદયિ બજન હી જોરી ॥

તોપે સકન સોજ દામિનિ હી-

કત સતરાતિ કુટિલ દગ બોરી ।

નયુગ રવ દિલિપ્ત પિસુન ધર-

જય શ્રીહિત હરિવંશ કહત નહિ થોરી ॥૫૧॥

(શ્રીહિતસખીશ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ) વર્ષા સમય, વનવિહાર

ગગ મહાર ।

દેખો મારી મુન્દરતા હી સીવો ।

મજ નર તરુણિ કદંબ નાગરી નિરખિ કરત અધશીવો ॥

જો કોજી કોટિ કલ્પ લગિ શુવે રમતા કોટિક પાવે ।

તજી રચિય બદનારબિન્દ હી શોભા દહત ન આવે ॥

દેવબોક બૂલોક રસાતલ સુનિ કવિ કુવ મતિ ઠરિયે ।

સહજ માધુરી અંગ અંગ હી કહિ કાસો પટતગિયે ॥

જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રતાપ રૂપ ગુણુ વય બલ શ્યામ ઉજ્જગર ।

જાહી બ્રૂ વિવાસ બસ પશુગિવ દિન વિચરિત રસ માગર ॥૫૨॥

(શ્રીહિતસખીશ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ)

વર્ષા સમય, વનવિહાર । રાગ મહાર ।

દેખો મારી અબલા કે બલ રાસ ।

અતિ ગજ મત નિન્કુથ મોહન નિગખિ બેધે લટ પાસ ॥

અમહીં પંડુ બર્ધન કી ગતિ બિનુ ઉદ્ધમ અનિયાસ ।
 તન કી કહા દેહો જાપ પિય પ્રતિ આહત બૃકુટિ વિલામ ॥
 ક્ય સયમન યાજ બુજ દગસતિ મુસકનિ વદન બિકાસ ।
 હા હન્વિજ અનીતિ રીતિ હિત કત હાન્ત તન ત્રામ ॥૫૩॥

(શ્રીહિતમખીલ મખીન પ્રતિ પન્ધ્ય સંભાષણ)

વર્ષા સમય, વનરિહાર । ગગ મવાર ।

નયો નેદ નવ રંગ નયો રસ—

નવલ રયામ વૃષભાનુકિશોરી ।

નવ પીતાગર નવલ ચૂંનરી—

નર્ધ નર્ધ ઝૂંદન બીજતિ ઘોરી ॥

નવ વૃન્દાવન હરિત મનોહર—

નવ ચાતક ખોલત મોઝ મોરી ।

નવ મુગ્ધી જુ મવાઝ નર્ધ ગતિ—

વ્રવણ સુનત આથે ધન ઘોરી ॥

નવ ભૂપણ નવ મુકટ વિગજત—

નર્ધ નર્ધ ઉરપ લેત ઘોરી ઘોરી ।

જગ શ્રીહિત હરિવંશ અશીષ દેત મુખ—

ચિગ્જવૈ ભૂતલ યહ જોરી ॥ ૫૪ ॥

(શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ વર્ણા મમય,વનવિહાર
રાગ મલાર ।

આજ દોઝે દામિનિ મિલિ બિહૈંસી ।

બિચલૈ રયામ ઘટા અતિ નૌતન તાકે રંગ રસી ॥

૯૮ ચમકિ ચહુ ઝોર મખીરી અપને સુખાવ લસી ।

આઈ પુક સરમ ગહની મેં દુહુ લુજ બીચ બસી ॥

અમ્બુજ નીચ કમપ બિધુ રાજત તિનકી ચક્કન ખસી ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ લોભ બેટન મન પૂરણ શરદ સશી ॥૧ ॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ)

વન વા શય્યા મમય । ગગ ઝાડ મલાર ।

હૌ બલિ બકે નાગરી રયામ ।

૯૯ હી ગગ કરૌ નિશિ બાસર-

ટ-દાવિપિન કુરી અબિગમ ॥

હાસ વિલાસ મુગત રસ રીંચન-

પશુપતિ દગ્ધ જિવાવત કામ ।

જય શ્રીહિત હરિવંશ લોભ લોચન અલિ-

કંઠુ ન અદ્ય સદ્ય સુખધામ ॥૫૬॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીયુગલ ઝોર મખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ)

હોલી સમય । રાગ ઝોરી । ધમાર ।

પ્રથમ યથા મતિ પ્રેમુર્ણી શ્રીજીદાસન અનિ રમ્ય ।

શ્રીરાધિકા કૃપા બિનુ સગ કે મનનિ અગમ્ય ॥

વગ યમુના જન સીંચત દિનહી શરદ ખસતંત ।
 વિવિધિ લાંતિ સુમનમિકે સૌરભ અલિ કુવ મંત ॥
 અરણ્ય નૂત પવન પર કૂંજત કોકિલ પ્રીર ।
 નિર્તાનિ ક્રૂત શિખી કુવ અતિ આનંદ અપીર ॥
 વહત પવન રુચિદાપક શીતલ મન્દ સુગન્ધ ।
 અગ્નિ નીલ સિત મુકલિત જહા તહા પૃથ્વિ બન્ધ ॥
 અતિ કમનીય વિરાજત મન્દિર નવલ નિકુંજ ।
 મેવત સગણ્ય પ્રીતિ યુત મ્નિ મીનધવજ પુંજ ॥
 ગસિક ગસ જહા ખેવત રયામા રયામ દિશોર ।
 કમલ બાહુ પદ ગંજિત ઉડે ઉનીદે ભોર ॥
 કનક કપિસ પટ શોભિત સુભગ સાવરે અગ ।
 નીલ ખસન કામિનિ હર કચુકી કમુંબી સુરંગ ॥
 તાલ રખાખ મુરજ દક્ષ બાજત મધુર મૃદંગ ।
 સરસ ઉકતિ ગતિ સુચત વગ વૈસુરી મુખ અમ ॥
 દોહા મિલિ ચાચરિ ગાવત ગોરી રાગ અવાપ ।
 માનસ મૃગ બલ ખેધત ભૂકુટિ ધનુષ દગ ચાપ ॥
 દોહા કર તાન્ત્રિ પટકત લટકત ધત ઉત જાત ।
 હો હો હોરી ખોત્રત અતિ આનંદ કુવકાત ॥
 રસિક લાય પર મેલત કામિનિ બન્દન ધૂરિ ।
 પિય પિયકારિનુ છિન્કત તકિ તકિ કુમ કુમ પૃગિ ॥
 કમલું કમલું અન્દન તર નિર્મિત તરલ હિડોલ ।

ચરિ, દોઝી જન મૂલત ફૂલત કરત ઠલોલ ॥
 બર દિદોઝ ઝકોરનિ કામિનિ અધિક હરાત ।
 પુલકિ પુલકિ પેપથ કૈમ પ્રીતમ ઉર લપટાત ॥
 હિતચિંતક નિજ ચેરિનુ ઉર આનંદ ન સમાત ।
 નિરખિ નિપટ નૈનનિ મુખ તૃણુ તોરતિ બલિગત ॥
 અતિ હદાર બિવિ મુન્દર સુરત શર મુકુમાર ।
 જય શ્રીહિત હગ્વિંશ કરૈ દિન દોઝી અચલ બિહાર ॥૫૭॥

(શ્રીહિતસખી ૭ શ્રીપ્રિયા ૭ પ્રતિ પરસ્પર સમ્બોધણુ)

શયા સમય, સ અમમાન । રાગ ગૌરી ।

તેરે હિત લેન આઠાળન તૈં શ્યામ પડાઈ-

હગતિ કામિનિ ધન ઠદન કામ કૌ ।

કાહે કૌ કરત વાધા સુનિરી ચતુર મધા-

બેટિ કે મેટિ રી માર્ઠ પ્રગટ જગત લૌ ॥

દેખિ રી મનની નીટી રચના રચિર પી કી-

પુલિન નલિન નભ હદિત રેઠિણી ધૌ ।

તૂ તૌડખ સખી સયાની તૈં મેરી હકૌ ન માની-

હૌ તૌસૌ ઠહત હારી સુવતિ જુગતિ સૌ ॥

મોહનલાલ છબલૌ અપને રંગ રંગીલૌ-

મેહિત બિહંગ પશુ મધુર મુગ્ધી રૌ ।

મે તૌડખ મનત તન શવન ચોવન તથ-

જય શ્રીહિત હગ્વિંશ હરિ બજહિ જામિનિ જૌ ॥૫૮॥

। (શ્રીનાયક કૌ શ્રીપ્રિયાકૌ યા શ્રીહિતજી કૌ કૃપાપાત્રન પ્રતિ પરસ્પર મં)
શય્યા વા સર્વકાલ સમય । રાગ ગૌરી ।

યદ જી હૃદ મન બહુત હૈઃ કિ કહિ કૌનેં સચુપાયૌ ।
જહૌ તહૌ બિપતિ જગ મુનતી હૈ પ્રગટ પિંગલા ગાયૌ ॥
હૈ તુઃ ગ પઃ જોઃ ચક્રત હઃ પરત કૌન પૈ ધાયૌ ।
હૃદિધૌ કૌન અ ક પઃ રાખૈ જો ગણિમ મુત જાયૌ ॥
જય શ્રીહિત હરિવિરા પ્રપચ વંચ સમ કાલ વ્યાવ કૌ ખાયૌ ।
યદ નિચ જન રયામ રયામા પદ કમલ સૈંગી શિઃ નાયૌ ॥૫૮॥

(શ્રીહિતજી યા શ્રીનાયકકૌ શ્રીપ્રિયાકૌ પ્રતિ પંમં) શ્રુગાઃ વા શય્યા સમય
રાગ ગૌરી ।

કહા કહૌ કન નૈનનિ બી માત ।

યે અવિ પ્રિયા વદન અનુગ રસ અટકે અનત ન જાત ॥
જન જન રકત પવક સ પુટ લટ અતિ આતુર અકુવાત ।
લપટ લર નિમેષ અન્તઃ તૈ અપ કંપ શત સાત ॥
શ્રુતિ પઃ દંજ દગંજન કુચ બિચ મૃગ મદ હૈ ન સમાત ।
જય શ્રીહિત હરિવિ ગ નાભિ સઃ જલચર યૌચત સૌવન ગાત ॥૫૯॥

(શ્રીહિતસખીકૌ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સખાવણુ) રાસ સમય
રાગ ગૌરી ।

આજી સખી બન મેં જી બને પ્રભુ નાચત હૈં વજ મડન ।
વયમ મિશેર મુવતિ અંશનિ પઃ દિયૈ નિમય ભુજ દડન ॥

કોમલ કુટિન અનક શુદ્ધિ સોબિન અનલગ્નિત યુગ ગ ડન ।
 માનકું મધુપ યમિત રમ લ પટ નીલ કમલ કે ખ ડન ॥
 હાસ વિલાસ હરત સખકૌ મન કામ સમૃદ્ધ મિલંડન ।
 જય ત્રીહિત લગ્નિ ગ કરત અપનૌ યસ પ્રગટ અખિલ બ્રહ્મ ડન
 (શ્રીહિતસખીજી સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાધણ) ગસ સમય
 -ગ ગૌરી ।

ખેલત ગસ દુલહિની દુલહુ ।

સુનહું ન સખી સહિત લલિતાદિક-

નિગખિ નિરખિ નૈનનિ કિન દુલહુ ॥

અતિ કલ મધુર મહા મોહન ધ્વનિ-

ઉપજત હ શસુતા કે કૂનહુ ।

ચેઈ ચેઈ વચન મિથુન મુખ નિરસત-

સુનિ સુનિ દેહ દયા કિન બુલહુ ॥

મૃદુ પદ-યાસ કિંત કુમ કુમ રજ-

અદ્ભુત બહત સમીર દુકલહુ ।

મનહું રયામ રયામા દશનાચન-

કચ કચ હાર છુવત જુજ મૂનહુ ॥

અતિ લાવણ્ય રૂપ અમિતય ગુણ-

નાહિન કોટિ કામ સમવ્યહુ ।

બ્રહ્મકૃદિ વિલાસ હાસ રસ બરપત-

જય ત્રીહિત હરિવશ પ્રેસ ગસ બુલહુ ॥૨॥

(શ્રીહિતસખીશ્લોક સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાષણ) રાસ મમય

ત્રિમંગી છંદ ચાર । રાગ જૈ રી ।

મોહન મદન ત્રિમંગી । મોહન મુનિ મન રંગી ॥

મોહન મુનિ સધન પ્રગટ પરમાર્જુન ગુણ ગુણીર ગુપાલા ।

શીશ દિરીટ અવણ મણિ કુડવ ઉર મંડિત બનમાલા ॥

પીતાવર તન ધાતુ વિચિત્રિત કલ કિંકિણિ કટિ ચંગી ।

નખ મણિ તંગણિ ચંણ સગસીરુડ મોહન મદન ત્રિમંગી ॥૧॥

મોહન વેણુ બળવૈ । ઇંદ્રિય નારિ બુલાવૈ

આર્દ્ર વૃક્ષ નારિ મુનત વંશી ગ્વ ગૃહપતિ-બન્ધુ ત્રિમારે ।

દરશન મદન ગુપાલ મનોહર મનસિન્ન તાપ નિવારે ॥

હરપિત બદન બંક અવયોકનિ સરમ મધુર ધ્વનિ ગાવૈ ।

મધુમય શ્યામ સમાન અધર ધરૈ મોહન વેણુ બળવૈ ॥૨॥

રાસ રમ્યૌ બન માહી' । વિમલ કલ્પતરુ છાહી' ॥

વિમલ કલ્પતરુ તીર સુપેસલ શરદ રૈન વર ચન્દા ।

શીતન મંદ મુગંધ પવન બહૈ તહાં ખેલત નૈદનન્દા ॥

અદ્ભુત તાલ મૃદંગ મનોહર કિંકિણિ શબ્દ કરાહી' ।

ચમુના પુલિન રસિક રમ સાગર રાસ રમ્યૌ બન માહી' ॥૩॥

દેખત મધુકર કેલી । મોહે બગ મૃગ બેલી ॥

મોહે મૃગ ઘેનુ સહિત સ્વર સુન્દર પ્રેમ મગન પટ છટે ।

ઉડગણુ અદિત ચકિત શશિ મંડલ કેટિ મદન મન લૂટે ॥

અધર પાત પરિગંબન અતિરસ આનંદ મગન સહેલી ।
જય શ્રીહિત હરિવંશ રસિક સચુપાવત દેખત મધુકર ઢેલી ॥૪૦૧૩

(શ્રીહિતમખીજી શ્રીપ્રિયાજી ઔર સખીન પ્રતિ સંભાળજી)

રાસ સમય યા સંભ્રમમાન । રાગ ગૌરી ।

વેણુ માર્છિ જાજૈ વંશીવટ ।

સદા જમન્ત રહત વૃન્દાવન-

પુલ્લિન પવિત્ર સુભગ યમુના તટ ॥

જટિત કિરીટ મકરાકૃત કુંડલ-

સુખારવિંદ જૈમર માનૈં લટ ।

દશનનિ કુંદ ઠલી છગિ લગ્નિજત-

સન્નિજત દનકે સમાન ખીત પટ ॥

મુનિ મન ધ્યાન ધરત નાહ પાવત-

કરત વિનોદ સંગ બાલક ભટ ।

દાસ અનન્ય ભજન રસ દારણુ-

જય શ્રીહિત હરિવંશ પ્રેમઠ લીલાનટ ॥૪૦૧૪॥

(શ્રીહિતસખીજી શ્રીપ્રિયાજી ઔર સખીન પ્રતિ પરસ્પર સંભાળજી)

૧

રાસ સમય યા સંભ્રમમાન । રાગ ગૌરી ।

મદન મયન ધન નિકુંજ ખેલત હરિ-

રાક્ષ ગચિર સરદ રજની ।

यमुना पुविन तट सुगतरु के निकट-

रचित रास यलि मिलि सजनी ॥

प्राजत मृदु मृदु ग नायत समै सुध ग-

तै न थवणु सुन्यौ वेणु भजनी ।

जय श्रीहित हरिव र प्रभु राधिका रमण-

भोडौ भावै भाई जगत भगत भजनी ॥८॥

(श्रीहितसम्पत् संपन्न प्रति परस्पर सभाषण) शरणा समर्थ
गम कयाणु ।

मिदगत होजि प्रीतम कुल ।

अनुपम गौर श्याम तन शोभा वन वग्नत सुख पुंज ॥

अद्भुत भेत मडा मनमथ डै दुहुनि लुण्ठ राव ।

जुअत सुनट परस्पर अंग अंग उपजत कोटिक भाव ॥

हरि मश्राम रमित अति अमना निद्रायत कल नैन ॥

पिय के अ क नसंके त क तन आवस सुत कृत शैन ॥

लालन भिस आतुर पिय पगसत उर नाभि वरजत ।

अद्भुत गटा भियोकि अवनि पर प्रियकिंत भेषय गात ॥

नागणि निगधि महन विर व्यापत द्वियौ सुधाधर धीर ।

सत्वर उडे मडा मधु पीनत मिलत भीन भिव नीर ॥

अपडी मै सुख मध्य विनोडे भिजावर सु गसाल ।

जअत न्यौ भ्रम ज्यौ पर्यौ मन शत मनसिज कुल जय ॥

સકૃદાપે મધિ અધરામૃત મુખનય મુન્દરિ સહજ સનેહ ।
 તવ પદ પંદજ કૌ નિજ મન્દિર પાલય સખિ મમ દેહ ॥
 પ્રિયા કલત કલ્પ કલા કુને પ્રિય નવ નિકુંજ વર રાજ ।
 મુન્દર વચન રચન કત વિતગત રતિ લ'પટ બિન દાજ ॥
 કતનૌ શ્રવણ સુનત માનિનિ મુખ અંતર રહ્યૌ ન ધીર ।
 મતિ કાતર બિમલજ દુષ વ્યાપૈ બદ્ધતર રવાંસ સમીર ॥
 જય શ્રીહિત દરિવંશ બુજન આકર્ષે લે રાજે હિર માંત્ર ।
 મિથુન મિલત જી કલ્પક મુખ કિપજ્યૌ તુટિ લવ મિવ બર્ધ સાંઝ ॥૧૬

(શ્રીહિતસખીજી મખીન પ્રતિ પરસ્પર સંબાધણુ)

ગસ યા શ'રા સમય । રાગ કલ્યાણ ।

અચિર ગજત અધૃ કાનન કિશોરી ।

સરસ પોડશ દિવ્ય તિલક મૃગમદ દિવ્ય-

મૃગજ લોચન ઉગ્રાટિ અંગ શિર ખોરી ॥

ગંડે પડીર મંડિત ચિકુર ચન્દ્રિકા-

મેદિની ક્વરિ ગૂંચિત મુરંગ ડોરી ।

શ્રવણ તાટંકે કે ચિચુક પર બિંદુ દૈ-

કસૂંમી કંચુકી ફરે હિરજ ફલ કોરી ॥

બલય કંઠણુ છોતિ નખનિ બલક બ્યોતિ-

હિર શુભ રેખ પટ નીલ કટિ ચોરી ।

સુભગ જનનસ્થલી' કવલિત' કિંકિણિ ભલી-

કોક' સંગીત' રસ' સિંધુ' ઝંક' ઝોરી ॥

વિવિધિ લીલા' રચિત રહસિ' શ્રીહરિ' શ' હિત-

રસિક શિરમૌર' રાધારમણુ જોરી ।

બૃકુટિ નિર્જિત મદન મંદ સસ્મિત બંદન-

ક્રિયે રસ બિવસ ધનશ્યામ પિય જોરી ॥૧૭॥

શ્રીહિતસખીશંખે' સખીન પ્રતિ પંરસપર સંભાષણુ') રાસ' સમય

રાગ' કલ્યાણુ ।

રાસ મે' રસિક મોહન બને' ભામિની' ।

સુભગ પોવન' પુલિનં સંરસ' સૌરભ' નલિન-

મત્ત મધુકર નિકર શરદ કી યામિની' ॥

ત્રિવિધિ રોચક પવન' તાપ' દિન' મણિ' દવન-

તહા' હાટે' રમણુ' સંગ શરત દામિની' ।

તાલ ખીણુ' મૃદંગ સંરસ નાયત સુધંગ-

પ્રકટે' પ્રક' સંગીત કી' સ્વામિની' ॥

રાગ રાગિની જમી બિપિન પરપત અમી-

અધર બિંબાનિ રમી મુરલિ અભિરામિની' ।

લાગ કદર ઉરપ સમ સ્વર સૌ સુલપ-

લેત' સુંદર સુધર રાધિકા નામિની ॥

તત્ત' ચેઈ' ચેઈ' કરત' ગતિવ નૌતન ધરત-

પલટિ' ડગમગ દરતિ' મત્ત ગજ ગામિની' ।

ધીતલ હસસુતા ગસ ખીચિન—

પરસ પવન શીકર મૃદુ જગમત ।

વગ મંદાર કમલ ચંપક કુલ—

સૌરભ સરસ મિથુન મન હરપત ॥

સક્લ સુધંગ ખિલાસ પગદધિ—

નાચત નવલ ભિન્ને સ્વગ ગાવત ।

મૃગજ મપર મરાલ ખૅવર પિક—

અદ્ભુત કોટિ મદન શિર નાવત ॥

નિર્મિત કુમુદ ચયન મધુ પૃથિત—

ભાજન કનક નિકુંજ ખિરાજત ।

ગજની મુખ મુખ ગણિ પરસ્પગ—

સુરત સમર દોર્જ દય સાજન ॥

વિદ કુલ વપતિ કિશોરી કર ધૂત—

લુધિ બલ નીખી બધન મોચત ।

નેતિ નેતિ બચનામૃત બોલત—

પ્રખુષ કોપ પ્રીતમ નાહ સોચત ॥

જય શ્રીહિત દગ્ધિંગ ગસિદ લલિતાદિક—

લગા બરન ગંધનિ અવશેષન ।

અનુપમ મુખ બર બરિત વિવસ અનુ—

આનૈદ વારિ દંદ રગ રોકેત ॥ ૭૨ ॥

(શ્રીહિત સખીલ શ્રીપ્રિયાલ પ્રતિ પરસ્પર મંભાપણ)

પ્રેમાધિક્ષ્ય સંપ્રમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

ખજન મીન મૃગજ મદ મેટલ કહા કહૈ નૈનનિ ક્રી વાતૈ ।
 સુનિ સુન્દરી કહા હૌ સિખઈ મોહન વશીકરણ ક્રી ધાતૈ ॥
 બંક નિશક ચપલ અનિયારે અરુણ શ્યામ સિત ગ્યે કહા તૈ ।
 કરત ન હગત પરાયૌ મર્જસ મૃદુ મધુ મિન માદિક દગ પાતૈ ॥
 નૈક પ્રસન્ન દષ્ટિ પૂરણ કરિ નહિ મો તન ચિતયૌ પ્રમુદા તૈ ।
 જય શ્રીહિત હરિવશ હસ હલ ગામિનિ ભાવૈ સો કમલુ પ્રેમ કે નાતૈ ॥

(શ્રીહિત સખીલ શ્રીપ્રિયાલ પ્રતિ પરસ્પર સખાપણ)

પ્રેમાધિક્ષ્ય સમ્પ્રમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

કાહે કૌ માન ખલવત હૈ—

ખાલક મૃગલોચનિ ।

હૌડવ ડન કણુ કહ ન સકત—

મક ખાત સૈકોચનિ ॥

મત મુરલિ અન્તર તખ ગાવત—

જાગ્રત શયન તવાકૃત સોચનિ ।

જય શ્રીહિત હરિવશ મહા મોહન પિય—

આતુર વિટ ચિરહજ દુખ મોચનિ ॥૭૪॥

(શ્રીહિત મખીલ શ્રીપ્રિયાલ પ્રતિ પરસ્પર સખાપણ)

પ્રેમાધિક્ષ્ય સમ્પ્રમમાન સમય । રાગ કાન્દરૌ ।

હો જુ કદતિ નક માત સખી—

મુન કાલે હો કારત ।

પ્રાણુ નમગુ મો ક્યોડવ કન—

આમમ મિનુ આગત ॥

પિય ચિતનન તન અદ વદન તન—

તુ અવમુખ નિગ ચરણુ નિહાગત ।

વે મૃદુ ચિમુદ પ્રતોય પ્રમોદત—

તુ ભામિનિ કૃ રૌ કૃ હાગત ॥

ચિત્રમ અધીર પ્રિદ્ધ અતિ કાતર—

મગ અવમગ કૃષુ વૈ ન બિચાગત ।

વલ્ય શ્રીહિત દનિગ ગદનિ પ્રીતમ મિયિ—

ચિપિત નયન કાલે ન પ્રાત પાગત ॥૭૫॥

(શ્રીહિત સખીજી સખીન પ્રતિ પગપગ મનાયણુ) સખ્યા સમન

ગમ કાન્દગૈ ।

નાગરી નિકુત ઐન દિશ્યામ દલ રચિત મૈન—

કોમ કલા દશન કુંભગિ અતિ ઉદાર રી ।

મુગન ગમ અંગ અંગ દાર ભાવ લકુટિ ભગ—

માનુરી તગમ મથન કોટિ માગ રી ॥

મુખમ નયનિ અન્નાવ મિમિ ॥ મિચિત નવ—

નિગમિ નિમિ નાથ મન જર બિદાર રી ।

સાદિલીદિયોઃ ગગ દેસ દસિનો સમાગ--

સંચિત દરિયશ નૈન નુસ સાઁ રી । ૭૨ ॥

(શ્રીદિત સખીછ શ્રીપ્રિયાછ ૫૫ સખીન પ્રતિ પરસ્પર એભાવ)

પરિદાસ મેં, મુગ્ધાન સમય ॥ ગમ દાન્દરે ।

સટકન પ્રિન્તિ પૂર્વાત રમ જૂની ।

સાના જાવન મેં નરન સકસ નિશિ--

પિય મેંમ મુગ્ધ દિયેરે જૂની ॥

યવપિ આનિ અનુગમ ગમાસન--

પાન પિવમ નાદિન નતિ જૂની ।

આવસ જાવિત નૈન ગિગવિત લટ--

દિ ૫૨ કુકુક કુંચુકી જૂની ॥

મગ્ગછ માન સિચિય કટિ જન્ન--

ચિચિત કન્નક પોકે દુકીની ।

જન શ્રીદિત દરિયશ મદન યગ જર જર--

ચિચિદિત ગમામ એજીવન નવી । ૭૩ ॥

(શ્રીદિત સખીછ સખીન પ્રતિ ૫૨૦ મં) ગમ સમય ।

ગમ દાન્દરે ।

મુગ્ધા નામન નવય દિગોરી ।

યેઁ યેઁ કદન મદન પ્રીતમ દસિ--

જાવન મન્દ માનો ચિલિત મોરી ॥

तान वंधान भान में नागरि—

देखत स्याम कहत हों होरी ।

जय श्री हित हरिवंश माधुरी अंग अंग —

अग्निस लियै मोहन चितयोरी ॥७८॥

(श्रीहित मणीछ सजीन प्रति पर० सं०) रास समय ।

गग हान्दरी ।

गदसि गदसि मोहन पिय के सेंगरी —

लहँती अति रस लटकति ।

सगस सुरम अंग में नागरि—

घेछ घेछ हृदि अवनि पद पटकति ॥

कोक हवा कुच वानि शिरोमणि—

अनिनय कुटिय अकुटियन मटकति ।

विनय अपे प्रीतम अलि लम्पट—

निजि हग नाया पुट अटकति ॥

गुण गुण गसि रस चूड़ामणि—

गिरन पदक हार पट अटकति

जय श्रीहित हरिवंश निकट दासी जन—

लोचन गगन गसासक मटकति ॥

(श्रीहितमणीछ सजीन प्रति पर० सं०) रास समय ।

गग हान्दरी ।

जस्तरी सुनक अश्वरी लभाय गगन सौ—

वागि गदी अंग अंग मनोनिगमिनी ।

વદન જ્યોતિ મનૌ મય ક અલક તિલક છબિ કલંક -

છપતિ શ્યામ અ ક મનૌ જલદ દામિની ॥

ખિગત ગાસ હેમ ખંભ મનૌ ભુવંગ વેણી દંડ-

ધિય કે કંદ ગ્રેમ પુંજ કુંજ દામિની ।

જયશ્રી શોભિત હરિવંશ નાથ સાથ સુરત આલસવંત-

કિરણ કનક કલશ રાધિકા સુનામિની ॥૮૦॥

(શ્રીહિતસખીઞ્ચ સખીન પ્રતિ પરસ્પર સમ્બાધણુ) રાસ સમય
ગગ કેદારૌ ।

વૃષભાનુનન્દિની મધુર કલ ગાવૈ ।

ચિકટ અવધર તાન ચર્યરી તાલ સૌં—

નંદ નંદન મનસિ મોદ ઉપજવૈ ॥

પ્રથમ મજ્જન ચાર ચીર કજ્જલ તિલક--

અવણ કુંડલ વદન ચંદ્રનિ લગવૈ ।

સુભગ નકખેસરી રતન હાટક જરી-

અધર બંધૂક દશન કુંદ ચમકાવૈ ॥

વલય કંકણુ ચાર ઉગસિ રાજત હાર-

કટિવ કિંકિણિ અ.ણુ નૃપુર બળવૈ ।

હંમકલ ગામિની મથત મદ દામિની-

નખનિ મદયાંતિકા રગ રચિ દાવૈ ॥

નિર્ત સાગર રભસિ રહસિ નાગરિ નવલ-

ચંદ ચાલી વિવિધિ ભેદનિ જનાવૈ ।

फल-स्तुती

(छन्दः)—भव नख निधिकै नाव काम पचक कै पानी ।
 प्रेम भक्ति कै भूल मोह भंगल मुण दानी ॥
 निगम साग सिद्धान्त सन्त विग्राम भंगु वर ।
 रमकित कै मन भाग मङ्गल अक्षर गमकै धर ॥
 चारसी श्री (दित) छवि श कृत पद सुनै निशि मोर ।
 छुटै आगसी भ्रमनि तै निजै युगल द्विगोर ॥१॥

निजै युगल द्विगोर मोर अरु रैन न जनै ।
 पिये रस रस भक्त भयो कष्टु मनहि न आनै ॥
 प्रेम लक्षणा भक्ति होय द्विय आनंद धारी ।
 अरु वृन्दावन पास सखी मुण कै अधिकारी ॥
 दुख मङ्गल क्री टङ्गल मुण अभ्यति दम्पति पाय है ।
 नयनी रसनाय दित प्रीतिसौ जो चारसी गाय है ॥२॥

नाम साम्रा—द्वित ।

पट् पद निभास भाज सात है गिलावन में—

टोडी में यतु आसारि में दूँ जाने ।
 सप्त है धनात्री में युगल जसन्तकेनि—

देवगंधार पय होय रम ना सने ॥
 सारंग में घोडश है चार ही भवाग पद—

गाड में मुलायौ नर गौरी रम मे लो ।
 पट् क'नाथु निधि क'न्हरी केदारो जेद—

वाणी दितभू क्री सम चौदह ग । मे गने ॥

छति श्रीदत्तस्तुती समाप्ता ।



श्रीनिजहितनेह प्रकाशक श्रीराधिकावतार श्रीहित नन्दकुल
कदम्ब नृपतिनर श्रीदामोदरजी (श्रीसेवकजी) महाराज ।

अवतरण
धात्रेण शु० ३ हरियाली
रुवन १२७५ विक्रम

श्रीवृन्दावन प्रकट आगमन
संवत् १६१०

अतर्धान
मवत् १६१० वि

✽ શ્રીરાધાવલ્લભો જયતિ ✽

✽ શ્રીહિત હરિવંશવંશો જયતિ ✽

✽ અધિકારી શ્રીહિત ગુરુ કિશોરીલાલો વિન્યયતેતરામ ✽

શ્રીહિતનાદકુલનરેશ શ્રીરાધિદાવતાર
શ્રીહિતસેવકજી (દામોદરદાસજી) મહારાજ કૃત-

શ્રીસેવકવાણીજી

॥ શ્રીહિત યશ વિલાસ પ્રકરણ ૧ ॥

રાગ ધનાશ્રી । ત્રિપદી છન્દ

શ્રીહરિવંશચન્દ્ર શુભ નામ । સખ સુખ સિન્ધુ પ્રેમ રસ ધામ ।
યામ ઘટી બિસરે નહીં ॥
યહ જુ પર્યૌ મુદિ સહજ સ્વભાવ । શ્રીહરિવંશ નામ રસ ચાવ ।
નામ સુદૃઢ, ભવ તરન કો ॥
નામ રટવ આઈ સંખ સોહિ । દેહ મુમુદિ કૃપા કર મોહિ ।
પોય મુમુજુ માલા રચો ॥
નિત્ય મુકંઠ જુ પહિરોં તાસા । યશ બરણી (શ્રી) હરિવંશ બિલાસ ।
શ્રીહરિવંશદિ ગાય દોં ॥૧॥
શ્રી વૃન્દાવન વૈભવ બિલી । બરણત બુદિ પ્રમાણી કિલી ।
નિલી ભવે હરિવંશ જી ॥

સખી સખા ક્યૌં કહૌં નિબેર । તૌ મેરે મન ઠી અવસેર ।

ટેર સકલ પ્રભુતા કહૌ ॥

હરિ હરિવંશ મેદ નહિં હોય । પ્રભુ હસ્તિવ જનન સખ કોય ।

દોય કહૌં ન અનન્યતા ॥

વિસ્વંબર સખ જગ આભામં । યશ વરણૌં (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રી હરિવંશહિ ગાય હૌં ॥૨॥

જન્મ કર્મ શુભ રૂપ અપાર । બાઢે કથા કહત વિસ્તાર ।

બાર બાર મુભિરજ્ય કરૌ ॥

હૌ લધુ મતિ જુ અન્ત નહિં લહૌ । બુદ્ધિ પ્રમાણ કજ્જ કયિ કહૌં ।

રહૌ શરજ્ય હરિવંશ કી ॥

સો ધૌ કહિ મોહિ કેતિક મતી । યશ વરણુત હારૌ મસ્તવતી ।

તિતી સવૌ હરિવંશ કી ॥

દેહુ કૃપા કરિ બુદ્ધિ પ્રકાશ । યશ બરણૌં (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૌ ॥૩॥

કલિયુગ કઠિન વેદ વિધિ ગદી । ધર્મ કહૌં નહિં દીપત સહી ।

કહી બલી કોડ ના કરૌ ॥

ઉદવસ વિગ્વ બયૌ મળ દેશ । ધર્મ રહિત મેદિની નરેશ ॥

એવે સકલ પહુમી બદે ॥

સખ જન કહિં આધુનિક ધર્મ । વેદ વિહિત જનન નહિં કર્મ ।

મર્મ બક્ષિ દૌ ક્યૌં લહૌ ॥

जगत भव आवै न विसास । यश वरलौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशलि गाय हो ॥४॥

धर्म गहित जनी सभ दुनी । भेजनि भार दुषित मेहिनी ।

धनी और दूगै नहौ ॥

हरी कृपा मन छियै बियार । नृति पथ बिभुष दुषित संभार ।

सार वेद विधि उद्धरी ॥

सभ अवतार बलि बिस्तरी । पुनि रस रीति जगत उच्यरी ।

कर्यै धर्म अपनी प्रगट ॥

प्रगटे जनि धर्म कै नाश । यश वरलौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशलि गाय हो ॥५॥

मथुरा मंडल क्षमि आपनी । जहा पाद प्रगटे जग धनी

जनी अरुनि वर आप मुष ॥

शुभ वासर शुभ ऋक्ष बियार । भावव भास व्यास उजियार ।

नारिनु मंगल गाधयै ॥

तक्षक देव दुन्दुभी पान्जिये । नय नय शब्द सुरन भिक्षि छिये ॥

दिये सिराने सयन के ॥

तारा जननि जनक ऋषि व्यास । यश वरलौ (श्री) हरिवंश विलास ।

श्रीहरिवंशलि गाय हो ॥६॥

श्रीभागवत ऋ शुक्र उच्यरी । तैसी विधि ऋ व्यासाविस्तरी ॥

हरी नन्द जैसे हुती ॥

ધર ધર તોગળુ બંદનબાર । ધર ધરે પ્રતિ ચિત્રહિં દરબાર ।
પંચશબ્દ ધર બાજિયે ॥

ધર ધર દાન પ્રતિગ્રહ હોય । ધર ધર પ્રતિ નિર્જીત સખ કોય ।
ધર ધર મંગલ ગાવહી ॥

ધર ધર પ્રતિ અતિ હોત હુલામ । ચમ વગેણા (શ્રી) હરિવંશ વિલામ ।
શ્રીહરિવંશહિ ગાય હોં ॥૭॥

નિર્જાલ સજલ સરોવર બોયે । ઉખટે જ્ઞાન પદ્મવ નયે ।
દયે સકલ સુખ સમનિ કૌં ॥

અસન ગવન સુખ નિત નિત નયે । અન્ન સુકાલ ચહું દિશિ બોયે ।
ગયે અશુભ સખ વિગ્ધ કે ॥

ગ્લેચ્છ મકલ હરિ ચશ વિસ્તરહિં । પગ્મ લલિત બાણી ઉચ્ચરહિં ।
કગહિં પ્રભ પાલન સખૈ ॥

અપની અપની રચિ વિસ્વામ । ચશ વગેણા (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।
શ્રીહરિવંશહિ ગાય હોં ॥૮॥

ચલહિં સકલ જન અપને ધર્મ । બાહ્યાણુ સકલ કરહિં પટ્ કર્મ ।
ભર્મ અખનિ કૌં બાજિયૈ ॥

છૂટ ગઈ કલિયુગ કી રીતિ । નિત નિત નવ નવ હોત સમીતિ ।
પ્રીતિ પગ્મવ અતિ બહી ॥

પ્રગટ હોત ઐસી બિધિ બર્મ । સખ ભવ જનિત આપદા ગર્મ ।
નર્મ નર્મ ગયિ અતિ વહી ॥

સખ જન કરહિ ધર્મ અભ્યાસ । યશ વરણી (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૈ ॥૯૫॥

બાલ બિનોદ ન વરણત બનહિ । અપના સૌ ઉપદેશત મનહિ ।

બનહિ કવન લીલા જિતી ॥

સખ હરિ સખ ગુણ રૂપ અપાર । મહા પુરુષ પ્રગટે મંસાર ।

માર બિનોદન તન ધર્યૌ ॥

ક્ષણ ન તૂપતિ શુભ દર્શન આસ । દુહરાવત ભોલત મુદુ હાસ ।

વ્યાસમિત્ર હૈ લાડિલૌ ॥

મુદિત સકલ નહિ છાડત પાસ । યશ વરણી (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિવંશહિ ગાય હૈ ॥૯૬॥

અખ ઉપદેશ ભક્તિ હૈ કલ્પૌ । જૈસી ત્રિધિ જાકે ચિત રહૌ ।

લલ્પૌ જુ મન ચાગિત સમ્પલ ॥

સખ હરિ ભક્તિ કહી સમુગાય । જૈસી જૈસી જાય મુહાય ।

આય નકલ ચગલુનિ ભજે ॥

સાધન સકલ કહે અબિરુદ્ધ । વેદ પુરાણ સુ આગમ શુદ્ધ ।

બુધિ વિવેક જે જાનહી ॥

સમઝી સખાનિ મુ ભક્તિ ઉગસ । યશ વરણી (શ્રી) હરિવંશ વિલાસ ।

શ્રીહરિ શહિ ગાય હૈ ॥૯૭॥

અખ અવતાર બેદ તિન કહે । સકલ ઉપાસિક તિન મન રહે ।

કહે ભક્તિ સાધન સદૈ ॥

जो रस रीति समन तं हरि । मो सभ विश्व रही भरिपूरि ।
भरि सज्जन कछि छरि ॥

सभ जन मुदित करत मन दास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश छि गाय हो ॥२॥

ललितादिह रयामा अरु रयाम । श्रीहरिवंश प्रेम रस धाम ।
नाम प्रगट जग जनियै ॥

श्रीहरिव श जनित जडा प्रेम । तडा कडा अत सयम तेम ।
क्षेम सख सुख सपदा ॥

तडा जति कुन नहीं विचार । केन सु छतम केन जँवार ।
सार भजन हरिवंश कै ॥

या रस भगन भिटै भव नास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश छि गाय हो ॥३॥

श्रीहरिवंश सुयश गाछ्यौ । सो रस सभ रसिकन पाछ्यौ ॥
छियौ सुकृत भण्यौ द्रव्यौ ॥

या रस मे भिधि नहीं निषेध । तडा न लगन भइन के वेध ।
तहाँ कुदिन दिन कछु नहीं ॥

नहीं शुभ अशुभ भान अपमान । नहीं अनृत भ्रम कष्ट भयान ।
आन किया जय तप नहीं ॥

ज्ञान ध्यान तहाँ सकल प्रयास । सुनहु रसिक हरिवंश विलास ।
श्रीहरिवंश छि गाय हो ॥४॥

જહા હરિવંશ પ્રેમ ઉન્માદ । તહા કહા સ્વારથ નિસ્વાદ ।

બાદ વિવાદ તહા નહીં ॥

જે શ્રીહરિવંશ નાદ મોહિયે । તિન ફિર બહુગિ ન કુચ કર્મ દિયે ।

જિયે કાલ યસ ના પરે ॥

કુલ બિન કહો કૌન સા ચાક । સહજ પ્રેમ ગસ સૌચે પાપ ।

રંક ઈસ સમુજત નહીં ॥

નિધિ ન શક કૌન કુલ દાસ । મુનકુ રસિક હરિવ શ વિલાસ ।

શ્રીહરિવ શદિ ગાય હા ॥૫૥॥

યા રસ વિમુખ કવિ આચાર । પ્રેમ બિના જુ સયે કૃત આર ।

બાગ ધગત કવિ વિપ્ર દૈ ॥

શ્રીહરિવંશ દિગોર આહીર । અરુ તિન સૈંગ બનિતન કી હીર ।

તીર યમુન નિત ખેલહી ॥

તિન કી દર્ધ જુ જૂઠન ખાત । આચારી નિજ કહત ખિચાત ।

ખાત મહે સાચી મદા ॥

શ્રીહરિવ શ કહત નિત જામ । મુનકુ રસિક હરિવ શ વિલાસ ।

શ્રીહરિવ શદિ ગાય હા ॥૫૭॥

નિશિ દિન કહત પુકારિ પુકારિ । અગુતિ કરકુ દેહ મોહિ આગિ ।

હાગિ ન અપ ॥ માનિદૈ ॥

શ્રીહરિવ શ અણુ નહિં તજૈ । અર તિનકે બજતનિ દૈ ભજૈ ।

ભજૈ નહીં, અતિ નિગ ૧૨૧ ॥

श्रीद्विंश नाम वय लदौ । अपने मन बाधित न हो ।
 गेह शत्रु हविंश ही ॥
 दहन न बनत प्रेम हविंश । सुनहु गसिक हविंश विनास ।
 श्रीहरिवंशदि गाय हो ॥७॥
 ओ हविंश प्रेम गस गिरे । कृप मोह बोधनि मे भिरे ।
 गिरे काल जग जियै ॥
 हम मरु न हम हरे । स्वर्ग न भू नर्क न उरे ।
 धरे धर्म हविंश हो ॥
 श्रीहरिवंश धर्म निर्मल । श्रीहरिवंश प्रेम गस लह ।
 ते सग श्रीद्विंश के ॥
 मेवक तिन दामन हो दास । सुनहु गसिक हविंश विनास ।
 श्री हविंशदि गाय हो ॥८॥

इति श्रीद्विंशोत्तराष्टकं विनाम द्वितीय प्रकरणं
 नमः नमः श्रीद्विंशोत्तराष्टकं ॥१॥



॥ श्रीहरिवंश नाम प्रताप प्रकरण ॥ ३ ॥

त्रिपदी छन्दः ।

श्रीद्विंश नाम नित हो । नाम प्रताप नाम हव लदौ ।
 नाम हमारी गति सदा ॥
 ओ मेरे हविंश सुनाम । पावे तिन शत्रुनि विनाम ।
 नाम गहन म तत हरे ॥

नाम प्रसंग कइव कपदेश । नदा यह धर्म धन्य मो देख ।

धन्य सुकुल निर्दिष्ट जन्म भयो ॥

धन्य सुतात धन्य मो माय । संतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥१॥

प्रथम हृदय अहो नो करै । आचारगत नय अनुसरै ।

नदा नदा हरिवंश के ॥

रसिकन ही सेवा नय देय । प्रीति अछित भुजहु सय देय ।

(१) डैन धर्म हरिवंश के ॥

(२) डैन सुरीति (३) डैन आचर्य ।

(४) डैन सुकृत निर्दिष्ट पावै जगल ।

(५) डैन हरिवंश कृपा करै ॥

तय सय धर्म कबौ समुदाय । संतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥२॥

(१धर्म) प्रथम गु मेवहु गुरु के यगन । बिन यह धर्म कबौ सय करन ।

नाम प्रताप यताभयो ॥

नो हरिवंश नाम अनुमरहु । निशि दिन गुरु डै मेवन करहु ।

(२ प्रीति) सकल समर्पण गाय धन ॥

(३आचर्य) गुरु मेवा तबि करहि नो पानि । यहै अपर्मा यहै सय डानि ।

(४सुकृत) डानि न रसिकनि मे रहै ॥

नोट—आचार्य गुरु ही शरण लेने के पीछे रसिक बनने की सेवा कर अछित प प्रथम भूँछे, आगे के छन्द मे कमश. पायौ प्रथ के अंशानुसार उत्तर श्रीसेवक भदागन ने ही कृपा कर यताये हैं ।

—श्रीहितउप अधिकारी.

(પદ્મ)ગુરુ ગોવિન્દ ન ભેદ કમલ । સંતત સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૩॥

ગુરુ ઉપદેશ મુનહુ સખ ધર્મ । શ્રીહરિવંશ નામ ફલ મર્મ ।

ભર્મ ભગ્યૌ બચનનિ મુનત ॥

શુકે મુખ વચન શુ શ્રવણુ મુનાવહુ । તમ શ્રીહરિવંશ મુનામ કહાવહુ ।

મન મુખિનુ મિસરૈ નહીં ॥

હરિ ગુરુ ચગ્ધુ મેવા અનુસમહુ । અર્ચન વન્દન સંતત કરહુ ।

દાસ-તનિ હરિ મુખ લહૌ ॥

સાખ્ય સમર્પણુ ભક્તિ બદાય । સંતત સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૪॥

ગુરુ ઉપદેશ ચવહુ યદિ ચાલ । જૈસી ભક્તિ કરહુ બહુ દાલ ।

યે નવ લક્ષણુ ભક્તિ કે ॥

યહ હરિ ભક્તિ કરૈ જગ્ય કોય । તમ શ્રીહરિવંશ નામ ગતિ હોય ।

યહ શુ બહુત હરિ કી કૃપા ॥

હરિ હરિવંશ ભેદ નહિં દૈ । શ્રીહરિવંશ નામ કુચ્ચૈ ।

લખુ લખુ પ્રતિ વિમરૈ નહીં ॥

પ્રીતિ મદિત યહ નામ કહાય । મંતન સદૃશ મુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૫॥

ગુરુ ઉપદેશ ચવહુ યદિ ગતિ । શ્રીહરિવંશ નામ પદ પ્રીતિ ।

પ્રેમ મુક્ત યહ નામ દે ॥

प्रेमी रसिक जयत यह नाम । प्रेम भगन निज जन विग्राम ।

श्रीहरिवंश जहा रहै ॥

प्रेम प्रवाह पड़े जन मोय । तज को लोक वेद सुधि होय ।

जय श्रीहरिवंश कृपा करी ॥

मत संयम तज डैन कराय । सतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥६॥

जय यह नाम हृदय आय है । तज सज सुज सम्पति पाय है ।

श्रीहरिवंश सुयश कहै ॥

अरु अपनी प्रलुता नहि सदै । तज न नीय अपनपौ कहै ।

शुभ अरु अशुभ न जनकी ॥

समुझै नही कछ कृत कर्म । सुना यल्ले आपनो धर्म ।

रसिकन सौ प्रीतम कहै ॥

कण्हूँ काल वृथा नहिं जय । मतत सकल सुनहु यित लाय ।

श्रीहरिवंश प्रताप यश ॥७॥

जय श्रीहरिवंश नाम जानि है । तज समझी तें लखु मानि है ।

हंसि जोलै जहु मान है ॥

तनु सभ भजन शिखता होय । परम उदात्त कहै सज होय ।

मोय न मन कण्हूँ करै ॥

श्रीहरिवंश सुयश मन रहै । कोभव वयन व्यन सुज कहै ।

यग्न सुयस सज को सदा ॥

દુષ્ટ અચન કળહૈં ન દહાય । સતત સકલ સુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૮॥

પ્રગટ ધર્મ જૈસૈ જાનિયૈ । શ્રીહરિવ શ નામ જા હિયૈ ।

નામ સિદ્ધ પઢિયાનિયૈ ॥

શ્રીહરિવ શ નામ સજ સિદ્ધિ । મળૈ રસિક બિલસૈ નવ નિદ્ધિ ।

જુગતૈ દૈહિં ન જાચહૌ ॥

પોપણુ બરાણુ ન ચિત કરાહિં । શ્રીહરિવ શ વિભવ મિત્રસાહિં ।

શ્રીવૃન્દાવન કી માધુરી ॥

ગુણુ માવત જુ રસિક સચુપાય । સતત સકલ સુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવંશ પ્રતાપ યશ ॥૯॥

શ્રીહરિવ શ ધર્મ જે ધરહિં । શ્રીહરિવ શ નામ હમ્યરહિં ।

તે મગ શ્રીહરિવ શ કે ॥

અવણુ સુનહિં જે શ્રીહરિવ શ । મુખ વગણુત વાણી હરિવંશ ।

મન મુમરણુ હગ્નિ શ કૌ ॥

પેસે રસિક કૃપા જા કરૈ । તૌ હમ સે મેરક નિસ્તરૈ ।

જૂઠન લૈ પાર્વૈ સદા ॥

સેવક શરણુ રહૈ ગુણુ ગાય । સતત સકલ સુનહુ ચિત લાય ।

શ્રીહરિવ શ પ્રતાપ યશ ॥૧૦॥

॥ ઇતિ શ્રીહિત હરિવ શ નામ પ્રતાપ તૃતીય પ્રકરણુ કી

જય જય શ્રીહિતહરિવ શ ॥૩॥



॥ हित बानी प्रताप चतुर्थ प्रकरण ॥ ४ ॥

गग भाइ, यरखकुलह छन्द हुपछ, घोह आह ।

ममजौ श्रीहन्विश सुबानी ।

रसद मनोदग् संग गग जनी ॥

कोमल मधुर ललित पद ऐनी ।

रसिकनि को गु पम मुख हैनी ॥

श्रीहन्विश नाम, उर्याग ।

नित्य विदाग् रस क्लौ अपाग ॥

श्रीगृन्दावन भूमि वषानै ।

श्रीहन्विश हडे तै जनै ॥

श्रीहन्विश गिग रस संधी ।

हधु नहिं हदौ आपनी जूधी ॥

श्रीहन्विश कृपा भति पाउ ।

तग रसिकनि को गय सुनाउ ॥३॥

श्रीहन्विश गु श्रीमुख बाणी ।

मे जन भूमि सित मे राणी ॥

हौ लधु भति नहिं लहौ प्रमाना ।

जनत श्रीहन्विश सुमाना ॥

नव पवन प्रय हूल अनन्ता ।

महा रहत अतु शब्द जनन्ता ॥

શ્રી પૃન્દાવન મુન્દગાર્ધ ।

શ્રીહરિવંશ નિત્ય પ્રતિ ગાર્ધ ॥૨॥

શ્રીપૃન્દાવન નવ - નવ કુંળ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રસ પુન્ન ॥

શ્રીહરિવંશ દગ્ધ નિત્ય ડેલી ।

દાશુ-દાશુ પ્રતિ નવ-નવ રસ ડેલી ॥

દગ્ધુક નિર્મિત તરલ દિગ્દાસ ।

મૂલત કૂલત દરત દલોલા ॥

દગ્ધુક નવ દલ સેજ રચાર્ધ ।

શ્રીહરિવંશ સુરતિ રતિ ગર્વ ॥૩॥

મુગ્ધાન્ત છવિ અગ્ધી ન જાગ્ધ ।

દાશુ દાશુ પ્રતિ હરિવંશ જુ ગાર્ધ ॥

આજ સંભારત નાહિ ન ગોરી ।

અંગ અંગ છવિ દલો મુ ઘોરી ॥

નૈન વૈન જૂપજુ ગિદિ લોતી ।

યદ છવિ મોપૈ વગ્ધી ન જાતી ॥

પ્રેમ પ્રીતિ ગ્મ રીતિ બદાર્ધ ।

શ્રીહરિવંશ વચન સુખદાર્ધ ॥૪॥

વંશ બન્ધવ વિમોહિત નારી ।

બોલી સંગ મુ નિત્ય બિહારી ॥

પરિરંબન સુખ્યન રસ ફેલી ।

વિહરત કુંવરિ ઠંઠ ભુજ મેલી ॥

સુન્દર રાસ રચ્યો બન માંડ્યો ।

યમુના પુલિન કલ્પતરુ છાંડ્યો ॥

રાસ રંગ રતિ બરણી ન જાઈ ।

નિત નિત શ્રીહરિવંશ જુ ગાઈ ॥૫॥

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રમ ગાના ।

રસિક વિમોહિત પરમ સુખના ॥

અંશનિ પર ભુજ દિયે વિમોહત ।

તૃપ્તિ ન સુન્દર મુખ અવિસોક્ત ॥

ઠંદુ બદન દીપત બિબિ ઓરા ।

ચારુ સુલોચન તૃપિત ચકેરા ॥

ઠરત પાન રસ મત્ત સદાઈ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રતિ ગાઈ ॥૬॥

શ્રીહરિવંશ સુરીતિ સુનાજો ।

શ્યામા શ્યામ હૃદ સંગ ગાજો ॥

ક્ષણ ઇંક કબલું ન અન્તર હોઈ ।

પ્રાણ સુ હૃદ દેહ હૈ હોઈ ॥

રાધા સંગ જિના નહિ શ્યામ ।

શ્યામ જિના નહિ રાધા નામ ॥

ક્ષણ ક્ષણ પ્રતિ આરાધત રહ્યો ।

ગદ્ય નામ સ્થાન તબ કહ્યો ॥

લલિતાદિક્ષિ સ ગ સચુ પાવે ।

શ્રીહરિવંશ સુરત રતિ આવે ॥૭॥

શ્રીહરિવંશ ગિરા યશ ગાયે ।

શ્રીહરિવંશ ગદ્ય સચુ પાવે ॥

શ્રીહરિવંશ નામ પર સંગા ।

શ્રીહરિવંશ ગાન ઇક સંગા ॥

મન કમ વચ્ચ કહો નિત ટેરે ।

શ્રીહરિવંશ પ્રાણ ધન મેરે ॥

મેવક શ્રીહરિવંશ હિ ગાયે ।

શ્રીહરિવંશ નામ ગતિ પાવે ॥૮॥

કરખા છન્દ કશ ।

જમતિ જગદીશ જશ જગમગત જગત ગુરુ—

જમત બદિત સુ હરિવંશ આણી ।

મધુર કેમલ સુપદ પ્રીતિ આનન્દ રસ—

ત્રેમ વિમ્ભરિત હરિવંશ આણી ॥

રસિક રમ મત્ત શ્રુતિ સુનત પીવન્ત ગન—

ગસનિ ગાવન્ત હરિવંશ આણી ॥

કહત હરિવંશ હરિવંશ હરિવંશ લિત—

જમત હરિવંશ હરિવંશ આણી ॥૯॥

કહી નિત મેલિ રસ-ખેલિ જન-સાવિપિન—

કુંજ તૈં કુંજ ડોલનિ બખાની ॥

પટ ન પરસંત નિકસંત વીચિન સધન—

પ્રેમ વિદ્વલ સુ નહિં દેહ માની ॥

મગન જિત જિત ચલત જિન સુ દગમગ મિલત—

પન્થ બન દેત અતિ હેત જ્વની ॥

રસિક હિત પરમ આનન્દ અવલોક તન—

સરસ વિસ્તગિત હરિવંશ વાની ॥૨॥

વંશ રસ નાદ મોહિત સકલ સુન્દરી—

આનિ રતિ માનિ કલ છાડિ દાની ॥

વાહુ પરિવંબ નીચી કિરબ પરસિ હૈસિ—

ઉમગિ રતિપતિ રમિત રીતિ બાની ॥

વથ મુવલિન ખમિત રાસ મંડલ રચિત—

માન ગુણુ નૃત્ય આનન્દ દાની ॥

વત થેઈ થેઈ કરત ગતિવ નૌતન ધરત—

રાસ રસ રચિત હરિવંશ વાની ॥૩॥

રામ રસ રચિત બાણી જુ પ્રગટિત જગત—

શુદ્ધ અવિરદ પરસિદ્ધ બાની ॥

સ્વામ સ્વામા પ્રગટ પ્રગટ અક્ષર નિકટ—

પ્રગટ રમ શ્રવત અતિ મધુર બાની ॥

સો જુ બાણી રસિક નિત્ય નિશિ દિન રત—

કહત અરુ સુનત રસ રીતિ જાની ।

તાહિ તજિ ઔર ગાજિ ન કબહૂં કહૂ—

પ્રાણ રમિ રહી હરિવંશ વાની ॥૪॥

ભાગ અનભાગ જાનત જુ નહિ આપનો—

કૌન ધો લાભ અરુ કૌન હાની ।

પ્રગટ નિધિ છાંડિ કત દિરત રૂંકા કરત—

ભરમ બટકત સુ નહિ જૂલ જાની ॥

પ્રીતિ બિનુ રીતિ રૂપી જુ લાગત સંકલ —

જુગતિ કરિ હોત કત કવિત માની ।

રસિક જો સઘ આહત જુ રસ રીતિ ફલ—

તો કહૌ અરુ સુનો હરિવંશ વાની ॥૫॥

યહૈ નિત કેલિ ચેઈ જુ નાયક નિપુણ—

યહૈ બન ભૂમિ નિત નિત બખાની ।

બહુત રચના કરત રાગ રાગિનિ ધરત—

તાન બંધાન સખ ઠાનિ આની ॥

જ્યોં મૂંદ નહિ મિલત ટકસાર તો બાહિરી—

લાખ મેં ગૈર મુહરી જુ જાની ।

યો જુ રસ રીતિ બરણુત ન કાંઈ મિલત—

જો ન ઉચ્ચગત હરિવંશ જાની ॥૬॥

રસિક બિનુ કહૈ સખ હી જુ માનત ખુરૈ—

રસિકઈ કહૈા કેસૈ જુ જાની ।

આપની આપની ઠૈર જોઈ તહા—

આપની બુદ્ધિ કે હોત માની ॥

નિપટ કરિ રસિક જો હોહુ તૈસી કહૈ—

અખ જુ યહ સુનૌ મેરી કહાની ।

જૌડરુ તુમ રસિક રસ રીતિ કે ચાહિસે—

તૌડરુ મન દોહુ હરિવંશ વાની ॥૭૭॥

વેદ વિદ્યા પદ્મત કર્મ ધર્મન કરત—

જલ્પ તન કલ્પ કી અવધિ આની ।

આરુ ગતિ છાડિ, સસાર બટકત ભ્રમત—

આગ કી પાશ નહિં તોગિ જાની ॥

સકલ સ્વારથ કરત રહત જન્મત મરત—

દુ ખ અઝ સુખ કે હોત માની ।

છાડિ, જંગલ કેસૈ ન નિરચય ધરત—

એક દિન રમત હરિવંશ વાની ॥૮૦॥

પૃથા બલગન કરત ઘૌસ ખોવત સકલ—

સોવતન ગતિ નહિં જાત જાની ।

એસૈ હી જાતિ સમુજૌ ન કબહૂં કહૈ—

કૌન સુખ દુ ખ કે લાજ હાની ॥

તથ સુખ હરિવંશ ગુચ્છ નામ રસના રહત—

ઐર બહુ વચન અતિ દુઃખ દાની ।

હાનિ હરિવંશ કે નામ અનંતર પરે—

સાબ હરિવંશ ઉચ્ચરતે વાની ॥૮૫॥

નામ બાની નિકટ સ્થામ સ્થામા પ્રગટ—

રહત નિશિ દિન પરમ પ્રીતિ જાની ।

નામ બાની સુનત સ્થામ સ્થામા સુખસ—

ગસદ માધુર્ય અતિ પ્રેમ દાની ॥

નામ બાની જહા સ્થામ સ્થામા તહા—

સુનત ગાવંત મો મન જુ માની ।

બલિત શુભ નામ વલિ વિશદ દીરતિ જગત—

દૌ જુ બલિ બહે હરિવંશ બાની ॥૯૦॥

❀ ❀ ❀

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ નામ બલિ બલિત વિમલ વશ ।

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ કર્મ પ્રત કૃત સુ નામ વશ ॥

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ વરણ ધર્મિત ગતિ જાનત ।

બલિ બલિ શ્રીહરિવંશ નામ કલિ પ્રગટ પ્રમાણત ॥

હરિવંશ નામ સુ પ્રતાપ બલિ બલિત જગત દીરતિ વિશદ ।

હરિવંશ વિમલ વાની સુ બલિ મુદુ કર્મનીય સુમધુર પદ ॥૯૧॥

ઇતિ શ્રીહિત હરિવંશ બાની પ્રતાપ ચતુર્થ પ્રકરણ કી

જમ જમ શ્રીહિત હરિવંશ ॥૯૪॥

॥ સર્વ શાસ્ત્રસાર શ્રીહિતદ્વિષ્ણુસાધન પ્રકરણ ૫ ॥

૭-૬ ગાથા ।

પ્રથમ પ્રણમ્ય સુરમ્ય મતિ, મન યુધિ ચિત્ત પ્રસંસ ।

ચરણ શરણ સેવક સદા, સુ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ વિપુલ ગુણ મિષ્ટ ।

શ્રીહરિવંશ ઉપાસિક ઇષ્ટ ॥

શ્રીહરિવંશ કૃપા મતિ પાઠી ।

શ્રીહરિવંશ વિમલ ગુણ ગાઠી ॥

ગાઠી હરિવંશ નામ યશ નિર્મલ શ્રીહરિવંશ રમિત પ્રાણી ।

કારજ હરિવંશ પ્રતાપ મુદ્ધિત કારણ શ્રીહરિવંશ બળી ॥

વિદ્યા હરિવંશ મન્ત્ર ચતુરક્ષર જપત મિદ્ધ બલ ઉદ્ધરણી ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણી ॥૧॥

હરિ રિતિ અક્ષર બીજ ઋષિ વંશી શક્તિ સુ અંશ ।

નમ શિષ્ય સુન્દર ધ્યાન ધરિ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ સુ સુન્દર ધ્યાન ।

શ્રીહરિવંશ વિસદ વિજ્ઞાન ॥

શ્રીહરિવંશ નામ ગુણ સૂપ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રેમ રસ રૂપ ॥

રસમય હરિવંશ પરમ પરમાક્ષર શ્રીહરિવંશ કૃપા સદન ।

આત્મા હરિવંશ પ્રગટ પરમાર્જુન શ્રીહરિવંશ પ્રમાણ મન ॥

જીવન હરિવંશ વિપુલ સુખ સંપતિ શ્રીહરિવંશ બલિત વરણું ।
જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણુ શરણું ॥૨॥

શરણુ નિરાપદ પદ રમિત, સકલ અશુભ શુભ નંશ ।

દેત સહજ નિશ્ચય ભગતિ, જય જય શ્રીહરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ મુદિત મન લોભં ।

શ્રીહરિવંશ વચન વર શોભં ॥

શ્રીહરિવંશ કાયકૃત કારં ।

શ્રીહરિવંશ ત્રિશુદ્ધ વિચારં ॥

પૂજા હરિવંશ નામ પરમારથ શ્રીહરિવંશ પ્રિયેષ્ઠ પરં ।

ધીરજ હરિવંશ વિરદ બલ બીરજ શ્રીહરિવંશ અભદ્ર હરં ॥

તૃપ્તિ હરિવંશ મુયશ રસ લંપટ શ્રીહરિવંશ કર્મ કરણું ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર શ્રીહરિવંશ ચરણુ શરણું ॥૩॥

શ્રીહરિવંશ મુગોત કુલ, દેવ જાતિ હરિવંશ ।

શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ હિત, ઋદિ સિદ્ધિ હરિવંશ ॥

શ્રીહરિવંશ વિદિત પ્રિયિ વેદં ।

શ્રીહરિવંશ જી તત્વ અભેદં ॥

શ્રીહરિવંશ પ્રકાસિત યોગં ।

શ્રીહરિવંશ મુકૃત સુખ ભોગં ॥

પ્રજ્ઞા હરિવંશ પ્રતીતિ પ્રમાણુત પ્રીતમ શ્રીહરિવંશ પ્રિયં ।

ગાથા હરિવંશ ગીત મુણુ ગોચર ગુપ્તિ ગુણિત હરિવંશ ગિયં ॥

સેવક હરિવંશ સાર સંચિત સખ—

શ્રીહરિવંશ ધર્મ ધરણી ।

જય જય હરિવંશ જગત મંગલ પર—

શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણ ॥૪॥

✽ ૭૫૫ ✽

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર દિગ્ગ વર કુલ ખંડન ।

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર દક્ષિ તમ ભવ ખંડન ॥

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર અક્ષરક પ્રકાશિત ।

જય જય શ્રીહરિવંશ ચન્દ્ર મંથ જગ આભાસિત ॥

હરિવંશ ચન્દ્ર અમૃત જરણિ, સદૃશ જન્તુ તાપનિ હરણી ।

સેવક મંથીપ મંતર રહ્યું, શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણ ॥

મતિ સર્વશાસ્ત્રસાર શ્રીહિત છટ્ટારાધન પંચમ પ્રકરણ કી

જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૫॥



॥શ્રીહિત ધર્મિન કૃત્ય વર્ણન ષષ્ઠ પ્રકરણ॥૬

છન્દ તોટક । સંખ્યા ચૌદક ॥

પહિલું હરિવંશ સુનામ કહો ।

હરિવંશ મુધર્મિનિ સંગ લહો ॥

હરિવંશ સુનામ સદા તિનકે ।

મુખ્ય સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧॥

हरिवंश सुनाम कहौ नित है ।

मिल ही कहौ कृत सुधर्मिनि है ॥

हरिवंश उपासना है तिन है ।

सुख सम्पति दम्पति जू जिन है ॥२॥

हरिवंश गिरा रस गीति है ।

सुकृती जन संगति नित्य रहै ॥

अधु धर्म विरह नहीं तिन है ।

सुख सम्पति दम्पति जू जिन है ॥३॥

हरिवंश प्रशंसित नित्य रहै ।

रम रीति विचरित कृत्य रहै ॥

‘ जू कह कुल कर्म नहीं तिन है ।

सुख सम्पति दम्पति जू जिन है ॥४॥

हरिवंश सुनाम जू नित्य रहै ।

दायु याम समान न नैक धरै ॥

विधि और निषेध नहीं तिन है ।

सुख सम्पति दम्पति जू जिन है ॥५॥

हरिवंश सुधर्म जू नित्य रहै ।

हरिवंश कही सु नही भिसरै ॥

हरिवंश सदा निधि है तिन है ।

सुख सम्पति दम्पति जू जिन है ॥६॥

हरिवंश प्रतापहि जनत है ।

हविश प्रभोध प्रभाजित है ॥

हविश सु सर्वसु है तिनई ।

सुख सम्पति हम्पति नू निनई ॥७॥

हविश जियार परे नु गदै ।

हरिवंश धम्म धुरा निनई ॥

हविश निवाहक है तिनई ।

सुख सम्पति हम्पति नू निनई ॥८॥

हविश रसायन पीरत है ।

हविश हँ सुख अवत है ॥

हविश पतिव्रत है तिनई ।

सुख सम्पति हम्पति नू निनई ॥९॥

हविश गिरा रस रीति नन ।

हविश हँ हविश सुनै ॥

हविश हृदय वृत है तिनई ।

सुख सम्पति हम्पति नू निनई ॥१०॥

हविश कृपा हविश कहे ।

हविश कहे हविश कहे ॥

हविश सुखान सदा तिनई ।

सुख सम्पति हम्पति नू निनई ॥११॥

हरिवंश परायण प्रेम नरे ।

हविश सु भन्त नपे सुधरे ॥

હરિવંશ સુ ધ્યાન સદા તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૨॥
નિત શ્રીહરિવંશ સુ નામ કહે ૧

નિત રાધિકા સ્થામ પ્રસન્ન રહે ॥
નિત સાધન ઔર નહીં તિનકે ।

સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૩॥
જમ્પ રાધિકા સ્થામ પ્રસન્ન ભયે ।

તમ્પ નિત્ય સમીપ સુ ખેંચ લયે ॥
હરિવંશ સમીપ સદા તિનકે ।
સુખ સમ્પતિ દમ્પતિ જૂ બિનકે ॥૧૪॥

✽ છંદપય ✽

નિત નિત શ્રીહરિવંશ નામ ક્ષણ ક્ષણ જુ રટત નર ।
નિત નિત રહત પ્રસન્ન જહા દમ્પતિ કિશેર વર ॥
જહા હરિ તહા હરિવંશ જહા હરિવંશ તહા હરિ ।
એક શબ્દ હરિવંશ નામ રાખ્યા સમીપ કરિ ॥
હરિવંશ નામ સુ પ્રસન્ન હરિ હરિ પ્રસન્ન હરિવંશ રતિ ।
હરિવંશ ચાણુ ખેંચકે જિતે મુનહુ રસિક રમ રીતિ ગતિ ॥૧૫॥

ધતિ શ્રીહિત ધર્મિન કૃત્ય વર્ણન પદ પ્રકરણ છી

જમ્પ જમ્પ શ્રીહિતહરિવંશ ૧૬૫



॥શ્રીહિત રસરોતિ વર્ણન સપ્તમ પ્રકરણ॥૭॥

છન્દ રઠદા । અન્તર્ગત પ્રમ ખ્યા ।

બ્યાસ નન્દન જગત આધાર—

જગમગત યશ સખ જગ વન્દનીય જગ બપ વિહડન ।
જગ શોભા જગ સમ્પદા જગ જીવન સખ જગ મડન ॥
જગ મંગલ જગ ઉદ્ધરન જગ નિધિ જગત પ્રશસ ।
ચરણ શરણ સેવક સદા સુ જય જય શ્રીહરિવંશ ॥૧॥

જયતિ ધમુના ખિમલ વર ખાગિ—

શીતલ તત્તલ તર્ંગિણી રત્ન બદ્ધ મિત્રિ તટ બિરાજત ।
પ્રકુલિત વિવિધ સરોજગણ ચક્રવાદિ કુચ હસ ગજત ॥
કૃદ્ધ વિશદ વન દ્રુમ સઘન લતા બચન અતિ ગમ્ય ।
નિત્ય કેલિ હર્ગિવંશ દિત સુ બ્રહ્માદિકૃતિ અગમ્ય ॥૨॥

સુધગ સુન્દર મુખતિ સર્વદ—

મંત્રત સદ્ગજ સદા સદન મધન કુંજ સુખ પુંજ ખરપત ।
ઝાગસ સગસ મુખન ચપન મજિત શયન સચુ રગ હરપત, ॥
કેલિ મિશદ આનંદ રસદ ખેલિ બડેત નિત યામ ।
હેલિ નિગમ મગ પગ મુખગ ખેલિ કુમર વર વામ ॥૩॥

ગસિન્દ્ર ગમ્ની રસદ ગમ ગસિ—

રસ સીવા રસ સાગરી ગસ નિકુંજ સુખ પુંજ ખરપત ।

ગસ નિધિ મુવિધિ રસસ રસ રેખ રીતિ રસ પ્રીતિ હરપત ॥
 ગસ મૂરતિ સૂરતિ સરસ રસ બિલસનિ રસ ગંગ ॥
 ગસ પ્રવાહ સરિતા મગસ રતિ ગસ લહરિ તંગ ॥૪॥

સ્થામ સુન્દર ઉગમિ બનમાલ—

ઉરગ જોગ ભુજદંડ વર કમ્પુ ધંક મણિગણ ગિરાજત ॥
 કુચિત કચ મુખ તામસ મહુ લમ્પટ જનુ મધુપ રાજત ॥
 શીશ મુકુટ કુંડલ શ્રવણ મુગલી અધગ ત્રિભંગ ॥
 દનક કપિશ પટ શોભિઅતિ જનુ ધન દામિનિ સંગ ॥૫॥

મુખમ મુદિતી સહજ શ્રુગા—

સહજ ગોખા સર્વાંગ પ્રતિ મહજ રપ તૃપમાનુનન્દિની ॥
 સહજનનદ દાદ મિની સહજ બિધિનિ વગ ઉદિત અદિની ॥
 ગહજ કેવિ નિત નિત નળલ સહજ ગંગ મુખ ચૈન ॥
 સહજ માધુરી અગ પ્રતિ મોર્ષ કહત બનૈ ન ॥૬॥

બિધિનિ નિર્વત ગસિક ગસ રાસિ—

દમ્પતિ અતિ આનદ વશ પ્રેમ મત નિશક કીડત ॥
 અચલ કુડવ દર ચમ્પુ નયન ભોલ ગતિ રગ ખાડત ॥
 ઝટકત પટ ચુટકિન ચટક લટકત લટ મહુ હાસ ॥
 પટકત પદ ઉધટત શનદ ગટકત ભૂકુટિ વિલાસ ॥૭॥

નવલ નાગનિ નવલ યુગજ—

નન નન વન ધન કીડત નવ નિકુંજ વિલસત સર્વસ ॥

नव नव रति नित नित अद्भुत नयै नेह नव रंग नयै रस ॥
 नव विलास कल हास नव मधु सरस मृदु जैन ।
 नव किशोर हरिवंशदित सु नवल नवल सुभ जैन ॥८॥

✽ छाप्य ✽

नवल नवल सुभ जैन हेन आपने आप बस ।
 निगम लोक मर्याद भंगि कीडंत रंग रस ॥
 सुरत प्रसंग निशंक कन्त जेह जेह भावत मन ।
 ललित अंग बलि भंग भाव लज्जित सु कोकमन ॥

अद्भुत विहार हरिवंश दित—

निगमि हाम सेवक जियत ।

विस्तन्ति सुनत गावत रसिक—

सु नित नित लीला रस पियत ॥९॥

धति श्रीहित रमरीत वर्णन सप्तम 'हरणु' टी

नय नय श्रीहितहरिवंश ॥१०॥



॥ अथ श्रीहितधर्म अनन्यटेक प्रकरण ॥ ८ ॥

॥ द्वादश मंत्र ॥ पदावति ३० मात्रा २ गुरु ॥

धर्म धर्म कोड करु वेद विधि—

कोड अडु विधि देवतन विपारी ।

કોઉ તીરથ તપ યાન ધ્યાન વૃત—

અરુ કોઉ નિર્ગુણુ અક્ષ ઉપાસી ॥

કોઉ ચમ નિયમ કરત અપની રુચિ—

કોઉ અવતાર કદમ્બ ઉપાસી ।

મન કમ વચન ત્રિશુદ્ધ સકલ મત—

હમ શ્રીહિતહરિવંશ ઉપાસી ॥૧॥

જાતિ પાતિ કુલ કર્મ ધર્મ વૃત—

સંપ્રિત હેત અવિઘા નાસી ।

સેવક રીતિ પ્રતીતિ પ્રીતિ હિત—

વિધિ નિષેધ શ્રુંખલા વિનાસી ॥

અળ ભેદ દહી કરે હમ સોઈ—

આયુષ લિયે ચલે નિજ દાસી ।

મન કમ વચન ત્રિશુદ્ધ સકલ મત—

હમ શ્રીહિતહરિવંશ ઉપાસી ॥૨॥

(સવૈયા સુગત)

જો હરિવંશ કો નામ સુનાવૈ—

તન મન શ્રાણુ તામુ બલિહારી ।

જો હરિવંશ ઉપાસિક મેવૈ—

સદા સેઉ તાકે ચરણુ વિચારી ॥

જો હરિવંશ ગિરા યશ ગાવૈ—

સર્વસ્વ દેહુ તામુ પર પારી ।

જો હરિવંશ કૈા ધર્મ સિખાવે—

સોઈ તૌ મેરે પ્રભુ તૈ પ્રભુ બારી ॥ ૩ ॥

[માલતી છન્દ]

શ્રીહરિવંશ સુનાદ વિમોહી—

સુનિ છુનિ નિત્ય તહાં મન દેહૈં ।

શ્રીહરિવંશ સુનન્ત ચક્ષી સંગ—

હૈં તિન સય નિત્ય પ્રતિ જૈહૈ ॥

શ્રીહરિવંશ વિલાસ રાસ રસ—

શ્રીહરિવંશ સંગ અનુભૈહૈં ।

જો હરિ નામ જગત સિરોમણિ—

વંશ બિના કપહૈ નહિ લૈહૈ ॥ ૪ ॥

[મંદિરા છન્દ]

પ્રેમી અનન્ય ભજન્ન ન હોષ—

જો અન્તાડ્યામી જનૈ મન મેં ।

જો ભજિ દોખૈયૌ યસોદા કૈા નન્દન—

તૌ વિશ્વ દિધાય સમૈ તન મેં ॥

શ્રીહરિવંશ સુનાદ વિમોહી—

તે શુદ્ધ સમીપ મિલીં છન મેં ।

અથ યામેં મિલૌની મિલૌ ન ક્ષુ—

જગ્ન ખેલત રાસ સદા જન મેં ॥ ૫ ॥

માલતી છન્દ ।

જો બહુ માન કરે કોણ મેરૈ—

ક્રિયે બહુ માનત નાહિ બઢાઈ ।

જો અપમાન કરે કોણ કેઈ—

ક્રિયે અપમાન નહીં લધુતાઈ ॥

શ્રી હરિવંશ ગિરા રસ સાગર—

માઝ મગન્ન સવૈ નિધિ પાઈ ।

જો હગ્વિંશ તજો બજો ઔગઢિ—

તો મોહિ શ્રીહરિવંશ દુહાઈ ॥ ૬ ॥

[પદ્માવતિ છન્દ ૩૨ માત્રા ૨ ગુર]

કહી વન કેલિ નિકુંજ નિકુંજનિ —

નવ દલ નૂતન મેજ ગગાઈ ।

નાથ બિરમિ બિરમિ કહી તખ —

સો ગતિ તૈસીઘૌ કેસૈ ભુલાઈ ॥

સત્વર ઉઠે મહામધુ પીવત—

માધુરી વાણી મેરે મન બાઈ ।

જો હગ્વિંશ તજો બજો ઔગઢિ—

તો મોહિ શ્રીહરિવંશ દુહાઈ ॥ ૭ ॥

[માલતી છન્દ]

જુગ અંશનિ દીન્હે બિસોકિ ગહે -

મુખ ચન્દ કમપ મધુ પાન કરાઈ ।

आप भिसोकि हृदय दियै मान—

यिमुक्त सुयार प्रक्षोभ मनाई ॥

श्रीहरिवंश भिना यह हेत—

को जनै, दडा, को दसै समुझाई ।

जो हरिवंश तजौ तजौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥ ८ ॥

श्रीहरिवंश सुनाइ सुरीति—

सुगान भित्ते अन माधुरी गार्ध ।

श्रीहरिवंश अयनन रयनन—

सु नित्य किशोर किशोरी लडाई ॥

श्रीहरिवंश यिग रस रीति—

सु यित्त प्रतीति न आन सुहाई ।

जो हरिवंश तजौ भजौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥ ९ ॥

श्रीहरिवंश को नाम सु सर्मसु—

जनि सु गण्यौ मैं यित्त समाई ।

श्रीहरिवंश के नाम प्रताप को—

साब लखौ सु कलौ नहिं नगई ॥

श्रीहरिवंश कृपा ते त्रिशुद्ध के—

सांख्यी यहै गु मेरे मन भाई ।

जो हरिवंश तजौ भजौ औरहि—

तौ मोहि श्रीहरिवंश दुहाई ॥ १० ॥

દેખે જુ મેં અવતાગ મયે બનિ—

તહા તહા મન તૈસા ન ભઈ ।

ગોકુલનાથ મદા વજ વૈભવ—

લીના અતેક ન ચિત ખટાર્થ ॥

પ્રહિ ગીતિ પ્રતિતિ બૈધૈ મન—

મોહિ સં મ હરિવંશ બજાર્થ ।

ને હરિવંશ તત્તે બત્તે ઐગદિ—

તૈ મોદિ શ્રીહરિવંશ દુહાર્થ ॥ ૧૧ ॥

નામ અગદ દરે અધપુજ—

જગત દરે હરિ નામ બદાર્થ ।

સો હરિવંશ સમેત મૈપૂજ—

પ્રેમી અનન્યનિ કૈ મુખદાર્થ ॥

શ્રીહરિવંશ દદંત મુનંત—

સણ સણ દાલ વથા નદિં જ્યાર્થ ।

ને હરિવંશ તત્તે બત્તે ઐગદિ—

તૈ મોદિ શ્રીહરિવંશ દુહાર્થ ॥ ૧૨ ॥



અપ્ય ।

શ્રીહરિવંશ મુખાણ મુખન હરિવંશ અનિન્તે ।

શ્રીહરિવંશ મુચિત મિત હરિવંશ અનિન્તે ॥

શ્રીહરિવંશ સુ બુદ્ધિ બરણ હરિવંશ નામ જસ ।

શ્રીહરિવંશ પ્રકાશ વચન હરિવંશ ગિરારસ ॥

શ્રીહરિવંશ નામ બિસરે ન લક્ષ્ય શ્રીહરિવંશ સહાય ભલ ।

હરિવંશ ચરણ સેવક સદા સુ શપથ કરી હરિવંશ બલ ॥૧૦॥

ઇતિ શ્રીહિતધર્મ અનન્ય દેક શપથ વર્ણન નામ અષ્ટમપરજી કી

જમ જમ શ્રીહિતહરિવંશ ॥૭॥



શ્રીહિતઅકૃપા શ્રીહિતકૃપા નવમ પ્રકરણ ।૧।

શ્રીહિતઅકૃપા લક્ષ્ય વર્ણન—સોરઠા ૧૦ ।

સખ જગ દેખ્યો ચાહિ, કાહિ કહો હરિ ભકિત બિનુ ।

પ્રીતિ કહો નહિ આહિ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૧॥

ગુપ્ત પ્રીતિ કો ભંગ, સંગ પ્રચુર અતિ દેખિયત ।

નાહિન કિયજત રંગ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૨॥

મુખ પરણત રસ રીતિ, પ્રીતિ ચિત્ત નહિ આવઈ ।

ચાહત મંથ જગ કીર્તિ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૩॥

ગાવત ગીત રસાલ, બાલ તિલક શોભિત ધના ।

બિનુ પ્રીતિહિ બેહાલ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૪॥

નાચત અતિહિ રસાલ, તાલ ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।

જન બીધે જંગલ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૫॥

માનત અપનો ભાગ, ગગ કરત અનુગમ બિનુ ।
 દીખત સકલ અભાગ શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૧॥
 પહોત જુ વેદ પુરાણ, દાન ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।
 ખીધે અતિ અભિમાન, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૨॥
 દરશન ભક્ત અનૂપ રૂપ, ન શોભિત પ્રીતિ બિનુ ।
 ભરમ ભટકત જૂપ, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૩॥
 સુંદર પરમ ગ્રીણ, લીન ન શોભિત પ્રીતિ વિનુ ।
 તે સખ દીખત દીન, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૪॥
 ગુણ માની સમાગ, ઔર સકલ ગુણ પ્રીતિ વિનુ ।
 બહુત ધરત શિર બાર, શ્રીહરિવંશ કૃપા બિના ॥૬૫॥
 ॥ ઇતિ શ્રીહિત અકૃપા લક્ષણ સ્વરૂપ વર્ણન સોરઠા ॥૬૦॥



અથ શ્રીહિતકૃપા સ્વરૂપ, લક્ષણ વર્ણન સોરઠા ૧૦ ॥

મુખ વરણુત હરિવંશ, ચિત્ત નામ હરિવંશ ગતિ ।
 મન મુખિરણુ હરિવંશ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૬૬॥
 સખ જીવનિ મૈ પ્રીતિ, રીતિ નિબાહત આપની ।
 અવણુ કથન પરતીતિ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૬૭॥
 શત્રુ મિત્ર સખ જાનિ, માનિ માન અપમાન સમ ।
 કુખ મુખ લાભ ન હાનિ, યદ જુ કૃપા હરિવંશ કી ॥૬૮॥

નિત ઇક ધર્મિન મંગ, રંગ બદત નિત નિત સરસ ।

નિત નિત પ્રેમ અમંગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૪॥

નિરખત નિત્ય બિહાર, પુલકિત તન રોમાવલી ।

આનંદ નયન મુદાર, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૫॥

દાણુ દાણુ રુદન કરંત, દાણુ માવત આનંદ બર ।

દાણુ દાણુ હલર હસંત, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૬॥

દાણુ દાણુ બિહગત સંગ, દાણુ દાણુ નિરખત પ્રેમ બરિ ।

દાણુ મશ કહત અમંગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૭॥

નિરખત નિત્ય દિશેર, નિત્ય નિત્ય નવ નવ સુરતિ ।

નિત નિરખત છવિ ભોર, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૮॥

વૃષ્ટિ ન માનત નૈન, કુંજ રંધ અવશેષિ તન ।

યહ સુખ કહત બૈન, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૧૯॥

કહા કહો અડ ભાગ, નિત નિત રતિ હરિવંશ હિત ।

નિત વર્દિત અનુરાગ, યહ જી કૃપા હરિવંશ કી ॥૨૦॥

✽ અધ્યય ✽

નિત વર્દિત અનુરાગ ભાગ અપનો હરિ માનત ।

નિત્ય નિત્ય નવકેલિ નિરખિ નૈનનિ સસ્ય માનત ॥

નિત નિત શ્રીહરિવંશ નામ નવ નવ રતિ માનત ।

નિત નિત શ્રીહરિવંશ કહત સ્રોઘ સોઘ શિર માનત ॥

આપુનો ભાગ આપુન પ્રગટ થતો જુ શ્રીહરિવંશ વલ ।

હરિવંશ બરોસે બળે નિહર--

સુ નિત ગર્જત હરિવંશ વલ ॥૧૧॥

ઇતિ શ્રીહિતકૃપા અકૃપા અન્વયઅતિરેક વર્ણન નામ

નવમ પ્રકરણુ ઠી જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥૧૨॥



॥ અથ શ્રીહિત ભક્ત મજન દશમ પ્રકરણ ॥ ૧૦ ॥

(વાઠસિ કુંડલિયા) (પ્રથમ સિદ્ધાન્ત ઠી ૧૧)

શ્રીહરિવંશ સુ ધર્મ દહ, અરુ સમુજત નિજુ રીતિ ।

તિનકૌ હૈ સેવક સદા સુ મન ક્રમ વચન પ્રતીતિ ॥

મન ક્રમ વચન પ્રતીતિ પ્રીતિ દિન ચરણુ પખારૌ ।

નિત પ્રતિ જુઠન ખાઠે વરણુ બેદહિ ન વિચારૌ ॥

તિનકૌ સંગતિ રહત જાતિ કુલ મદ સખ નંશહિ ।

સંતત સેવક સદા બજત જે શ્રીહરિવંશહિ ॥૧॥

સખ અનન્ય સાચે સુવિધિ સખકૌ હૈ નિજુ દાસ ।

સુમિરણુ નામ પવિત્ર અતિ દરશ પરસ અધ નાસ ॥

દરશ પરસ અધ નાસ ખાસ નિજુ સંગ કરૌ દિન ।

તિન મુખ હરિ યશ સુનત શ્રવણુ માનૌ ન તૂસિ છિન ॥

કલિ અબદ્ર વરણુત સહસ કલિ કામાદિક દંદ વખ ।

સેવક ચરણુ સદા રહૈ સુવિધિ સાચે અનન્ય સખ ॥૨॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।
 રસિક અનન્ય સખતિ ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ॥
 ભલી ભલી તખ હોય જખહિ હરિવંશ ચરણ રતિ ।
 ભલી ભલી તખ હોય રચિત રસરીતિ સદા માત ॥
 ભલી ભલી સખ હોય ભક્તિ ગુરુ રીતિ અગાધા ।
 ભલી ભલી સખ હોય ભજત ભજિ શ્રીહરિ રાધા ॥૩૥॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।
 અશુભ અનર્ભલિ સંગ જન, બિમુખ તજૈ સખ કોય ॥
 બિમુખ તજૈ સખ કોય ગૂઠ બોલત સચુ માનત ।
 કોય કરત નિઃસંક રંક કરિ સંતાન જનત ॥
 અભિમાની ગર્વિષ્ઠ લોભ મદ મત અગાધા ।
 દુષ્ટ પરિહરૈ દુરિ ભજત ભજિ શ્રીહરિ રાધા ॥૪૥॥

રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।
 જિતે વિનાયક શુભ અશુભ, વિધન કરૈ નહિ કોય ॥
 વિધન કરૈ નહિ કોય હરૈ કલિ કષ્ટ કાલ ભય ।
 હરૈ સકલ સંતાપ હરપિ હરિ નામ જપત જય ॥
 શ્રીવૃન્દાવન નિત્ય કેલિ કલ કરત અગાધા ।
 હિત હરિવંશ કિશોર ભજત ભજ શ્રીહરિ રાધા ॥૫૥॥
 રાધાવલ્લભ ભજત ભજિ, ભલી ભલી સખ હોય ।
 ત્રિવિધિ તાપ નાશહિ સકલ, સખ સુખ સખતિ હોય ॥

મુખ મુખ સમ્પતિ હોય હોય હગિવંશ ચગળુ રતિ ।
 હોય વિપય વિપ નાશ હોય ઘનદાવન બસ ગતિ ॥
 હોય સુદઢ સતસંગ હોય ગસ રીતિ અગાધા ।
 દોય સુચર જગ પ્રગટ દોય પદ પ્રીતિ સુ રાધા ॥૬॥
 ગાવાવ્યભ ભગત ભજિ, ભવી ભવી મમ હોય ।
 બીઠ મિટ્ટે બટ ચમન છી, બય બ જન હરિ સોય ॥
 બય ભંજન હગિ મોય ભગ્ન બૃથૌ બટકત કતિ ।
 ભગવત ભક્તિ વિચાર વેદ ભાગવત પ્રીતિ ગતિ ॥
 ભક્ત ચગળુ ધગિ ભાવ તગત ભવસિન્ધુ અગાધા ।
 દિત હગિવંશ પ્રથમ ભગત ભજિ શ્રીહગિ રાધા ॥૭॥
 ગાવાવ્યભ ભગત ભજિ ભવી ભવી સખ હોય ।
 અન્ય દેવ મેરી સદન, ચલત પુંછ સી ખોય ॥
 ચવન પુંછ મી ખોય, રોય ઝપિ દોસ ગેવાવતિ ।
 મોય હવન સખ ઈન જોય દપિ સમ જુ નચાવતિ ॥
 ભોય વિપમ વિર વિપય પ્રાઇ સત્ગુરુ નહિ લાધા ।
 ધોય મહત્વ દયિ દયુર દોન ભજિ શ્રીદરિ ગાધા ॥૮॥
 ગાવાવ્યભવાય મિતુ જીવન જનમ અદત્ય ।
 ભાધા મમ કુવ દર્મ કૃન, પુનઃ ન લાગે દત્ય ॥
 પુનઃ ન લાગે દત્ય સત્ય સમગ્ય ન મિથૌ તન ।
 માય ધુનત દરિ વિમુખ મંગ ચમપંચ ચલત જમ ॥

માથ વિમલ શુભ ગાન કૃત્ય યશ શ્રવણ અગ્રીધા ।
 નાથ અનાથનિ હિત સમર્થ મોહન શ્રીરાધા ॥૮॥
 કર્મકં કંદિન સસ્ય નિત, ઓચત શીશ ધુનંત ।
 શ્રીહર્ષિંશ જુ ઉદરી, સોધ ગ્સ રીતિ મુનંત ॥
 સોધ ગ્સ રીતિ મુનંત અનંત અનમંદન કંત સખ ।
 જન જન જિવનિ વિચાર સાગ માનત મન મન તખ ॥
 ક્ષણ ક્ષણ લોભુષ ચિત સમર્થ છોકત તારં શક ।
 કંત ન સંત સમાજ જિતે અભિમાની કર્મકં ॥૧૦॥

હિત હરિન શ પ્રશ સ મન, નિત સેવન વિશ્રામ ।
 ચિત નિષેધ નિધિ મુધિ નહીં વિતુ સચિત નિધિ નામ ॥
 વિતુ સચિત નિધિ નામ કામ મુભિગ્ન દાસ તન ।
 ચામ ઘટી ન વિલમ્બ જામ કૃત કંત નિકટ જન ॥
 ગ્રામ પથ આરણ્ય દામ દૃઢ પ્રેમ અચિત નિત ।
 તા મતિ ગત મુખ્ય ગસિ વામ દશ નવકિશોર હિત ॥૧૧॥

(કુંડલિયા ગ્સ કા ૧૧)

શ્રીગદા આનન કમલ, હરિ અલિ નિત સેવંત ।
 નવ નવ ગતિ હરિવ શહિત, વૃન્દાવિધિન ખસંત ॥
 વૃન્દાવિધિન ખસંત પરપર બાહુ દૃઢ ધરિ ।
 અનંત અણુ મતિ મત કંઠિ ગગગગ ગર્વ ભરિ ॥

કુજ લવન નિત કેલિ કરત નન નનલ અગાધા ।
 નાના દામ પ્રસંગ કરત મિલિ ઓહરિ રાધા ॥૧૦॥
 મુખ મિહસત હરિવ શહિત, રખ રસ રાસિ પ્રવીન ।
 સુખ સાગર નાગર શુર, પુહુપ શયન આસીન ॥
 પુહુપ શયન આસીન દીન નિશુ પ્રેમ કેલિ બસ ।
 ખીન ઉરજ વગ પગસિ બીન નવ સુરત રંગ રસ ॥
 ખીન નિગમિ મદ મદન દીન પાનત શુ બિલખિ દુખ ।
 મીનકેતુ નિર્જિજ્જત સુ લીન પ્રિય નિરખિ બિહસિ મુખ ॥૧૩॥
 ગસ સાગર હરિવ શહિત, લસત સરિત વર તીર ।
 યશ જગ વિપદ સુ નિસ્તરિત, યસત શુ કુજ કુતીર ॥
 બસત શુ કુજ કુતીર બીર નન રંગ ભામિનિ ભર ।
 ચીર નીચ ગૌરાગ સગસ ઘન તન પીતામ્બર ॥
 ધીર બહત દક્ષિણ સમીર કલ કેલિ કરત અસ ।
 નીરજ શયન સુરચિત રીંગ વગ મુગતર ગ રસ ॥૧૮॥
 પ્રિય વિચિત બન હરપિ મન, જિયયશ વેલુ કનજીત ।
 તિય તરણી સુનિ તુષ્ટ ધુનિ, કિયૌ તહા ગમન તુરત ॥
 કિયૌ તહા ગમન તુગન્ત કન્ત મિલિ મિલસત સર્વસ ।
 તત ગસમ કલ શુરન્ત રસ નિર્ત રંગ રસ ॥
 સતત સુર દુન્દુભિ મજત પરપત સુમન ક્ષિય ।
 અંત કેલિ જલ જનુકિ મત ધલિરાટ કરિણિ પ્રિય ॥૧૫ ॥

હરિ વિહરત જન યુગલ જનુ તડિત સુગધ ધન સ ગ ।
 કરે દિશવય દન શયન લલ હરિ અનુરાગ અભંગ ॥
 હરિ અનુરાગ અભંગ ૨ ગ અપને સચુપાવત ।
 અંગ અંગ મજિ મુલત જંગ મનસિજહિ લગવત ॥
 પંગુ દૃષ્ટિ લલિતાદિક ત ક નિગ્ધત ગંધન દરિ ।
 મગ આદિ ગચિ ગિચિય સજત ઉચંગ ધગત હરિ ॥૧૬॥

ગ્યામ સુભગ તન ગિપિનધન ધામ ગિચિત જનાય ।
 તામહિ સંગમ યુગલ જન કામ કેલિ મચુપાય ।
 કામ કેલિ સચુપાય દાવ ૨ ન પ્રિયદિ ગિઝાવત ।
 ધાય ધગત ઉગ અંદે લાન ગન કોક લગવત ॥
 ચાવ ચવગુન ચતુર ગય ગસ ગતિ સંધામહિ ।
 ડાય મુશય જગ પ્રગટ માય મુણુ જનત શ્યામહિ ॥૧૭॥

સરિતા તટ મુર દુમ નિકટ, અલિતા મુમન મુવામ ।
 લલિનાદિક રસનનિ વિવસ, ચલિતા કુજ નિરાસ ॥
 ચલિતા કુજ નિરાસ આસ તવ હિત મગ પરપત ।
 રાસમથવ ડામ વિધામ સચિ મિલિ મન હગ્ધત ॥
 તામુ વચન મુનિ ચિત કુવાસ મિગ્ધજ કુખ ગલિતા ।
 દામન્તન કુલ યુવતિ મામ માધવ મુખ સલિતા ॥૧૮॥

પન્પત પુલિન મુલિન ગિગ, કરપત ચિત સ્વર ધોગ ।
 હરપત હિત નિત નવલ રસ, વન્પત યુગલ દિશોગ ॥

વર્યન યુગલ દિશોર જોગ નવકુંજ સુરત ગન ।
 મોર ચન્દ્ર ચપ ચલન ડોર કય શિયિય સુભગ તન ॥
 ચોર ચિત્ત લલિતાદિ દોર રંધ્રનિ નિવૃત્ત નિગ્મત ।
 યોગ પ્રીતિ અન્તર ન બોર દમ્પતિ છવિ પગ્મત ॥૮૧૧૫॥
 ઋતુ બસંત બન ક્વચ સુમન, ચિત પ્રસન્ન નવ કુંજ ।
 દિત દંપતિ ગતિ ક્વચ મતિ, બિતુ સંચિત સુખ પુંજ ॥
 બિતુ સંચિત સુખ પુંજ ચુંજ મધુકર સુનાદ ધુનિ ।
 રંજ મૃદંગ વિપંગ ધુજ દદ મંજિ તાલ મુનિ ॥
 મંજુ યુવતિ ગગ ગાન લુંજ દમ ખગ તદા બિચદિતુ ।
 લુજત ગમ રિવાસ કુંજ નવ મયિ વસંત ઋતુ ॥૮૧૧૬॥
 દદત દદન ન દન્તી પરે ગદત જુ મનદિ વિચાર ।
 મદન મદત બાદે બગતિ શૂદ તન ગુરુ દિન ગાર ॥
 શૂદ તન ગુરુ દિત ગાગિ હાગિ અપની દર માનન ।
 ચાર વેદ સુસ્મૃતિ જુ ચાર કમ કર્મ ન જાનન ॥
 ડાગિ અનિષ્ટા દરિ રિગાગ ચિત દિત દરિવંશદિ ।
 નાગિ ગસિદ હદ બન બિદાર મદિમા ન પરે દદિ ॥૮૧૧૭॥
 નવક શ્રીદન્વિંશ કે, જગ બાજત ગુણ ગાય ।
 નિશિ દિન શ્રીદન્વિંશદિન, દગિ ગરખ ચિનલાય ॥
 દગિ ચગ્ન ચિનલાય જપન દરિવંશ ગિગ વશ ।
 મનસિ જયસિ ચિન લાય જપન દરિવંશ નામ વશ ॥

श्रीहरिवंश प्रताप नाम नौका निष्ठु जेवक ।

लवसागर सुभ तरत निकट हरिवंश तु सेवक ॥११॥२२॥

इति श्रीद्विजस्य लवण नाम दशम प्रकरणे श्री

नम्य नम्य श्रीद्विजहरिवंश ॥१०॥



श्रीहित ध्यान गुरा प्रकाश एकादश प्रकरण ११

(गाढान्तर्गत छद्गाढा छन्द)

सज्जति हरिवंशयन्त्र, नामोन्म्यार पर्वित सदा मुमुक्षु-
रसिद्ध अनन्य प्रधान सत्तु साधु भंडोली भंडोली नमति ।

नम्य नम्य श्रीहरिवंश द्वित, प्रथम प्रशुद्धि शिर नाथ ।

परम रसद निर्विघ्न ह्वै, नैसै द्वित शिराय ॥

मुष्टवि विवित्र अनिज्जै समय प्रथम्य जन ।

मुष्टवि विवित्र अनिज्जै हरि यश लीन मन ॥

आता सोर्ध परम सुगम सुनत यित रति करै ।

सोर्ध रसिद्ध अनन्य विमल यश अस्तदै ॥

सुयश सुनत वरसुत सुभ पायौ ।

धीर जंग नारद शुद्ध गाथौ ॥

श्रीरुन्दावन सण सुभदानी ।

रतन जटित वर लुभि रमानी ॥

વર શ્રુતિ રમાનિ સુખદ દુમ વદલી—

પ્રકુલિત ક્ષલિત વિવિધિ અરણ્યં ।

નિત રાગ અસંત મત મધુકર કુલ —

વડુ પતત્રિ નાદલિ દરણ્યં ॥

નાના દુમ કુંજ મંછ વગ બીધી—

અનગિદાર ગધાગમણ્યં ।

તદા સંતત મહત ગ્યામ ગ્યામા મંગ—

શ્રીહરિવંશ ચરણ્ય સરણ્યં ॥ ૧ ॥

મદત સદા સખિ સંગં રાસ રંગ રસ રમાસ વિલાસં ।

લીલા લલિત રસાય મમ સ્વર તાલં અરપત સુખ પુંજં ॥

અત્થલિત રસ અરપત સદા, સુખનિધાન અન્યાસિ ।

અદ્ભુત મહિમા મહિ પ્રગટ સુન્દરતા હી રાસિ ॥

સુન્દરતા હી મસિ કનક કૃતિ દેહ રચિ ।

વાગિનિ બદન પ્રસન્ન લાસિ મૃદુ રંગ શુચિ ॥

સુમ સુખ સલાટ પદ સુન્દર દરણ્યં ।

નયન કૃપા અવલોકિ પ્રભુતિ આરતિ દરણ્યં ॥

સુન્દર મૌલ વર્તમ અનમાલં ।

ચાગ અંશ વર બાદુ વિશ્રાલં ॥

વદન મુનાભિ ચાગ દટિ દેશં ।

ચાગ જાનુ શુભ ચરણ્ય મુવેશં ॥

શુભ ચરણ સુવેશ મત્ત ગજવર ગતિ—

પર ઉપકાર દેહ ધરણું ।

નિજ ગુણ વિસ્તાર અધાર અવનિ પર—

વાણી વિરાદ સુવિસ્તરણું ॥

કરુણામય પરમ પુનીત કૃપાનિધિ—

રસિદ અનન્ય સભા ભરણું ।

જય જગ ઉદ્યોત વ્યાસકુલદીપક—

શ્રીહરિવંશ ચરણ ચરણું ॥ ૭ ॥

(ગાહાન્તર્ગતગાહ છન્દ ઉપગીતિ)

સારાસાર વિવેકી પ્રેમપુંજ અદ્ભુત અનુરામ ।

હરિ યશ રસ મધુ મત્ત સર્વ ત્યજ્વા દુરત્યજ કુલ કર્મ ॥

કર્મ છાંડિ કર્મક બજે, જ્ઞાની જ્ઞાન બિહાય ।

પતધારી મત્ત તન્નિ બજે, અવણાદિક ચિતલાય ॥

અવણાદિક ચિત લાય શેમ જપ તપ વજે ।

ઔરૈ કર્મ સકામ સકલ તન્નિ સખ બજે ॥

સાધન વિવિધ પ્રયાસ તે સકલ બિહાવહી ।

અવણુ કથન સુભિરણુ સેવન ચિત લાવહી ॥

અર્ચન વંદન અટ દાસતન । સખ્ય ઔર આદમા સમર્પન ।

થે નવ લક્ષણુ ભક્તિ બદાઈ ૨ તજ તિન પ્રેમલક્ષણુ પાર્શ્વ ॥

પાઈ રસ ભક્તિ ગૂઢ, યુગ યુગ જગ—

દુર્લભ ભવ ઇન્દ્રાદિ વિધિ ।

આગમ અરુ નિગમ પુરાણ અજોચર—

સહજ માધુરી રૂપ નિધિ ॥

અનભય આનન્દકન્દ નિજ સમ્પતિ—

ગુપ્ત સુરીતિ પ્રકટ કરણ ।

જય જમ ઉદોત વ્યાસકુલ દીપક—

શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણ ॥ ૩ ॥

(માહાન્તર્ગત બિગાદા છન્દ)

પ્રગટિત પ્રેમ પ્રકાશ, સકલજંતુ શિશરી કૃત ચિત્ ।

ગત કલિ તિમિર સમૃદ્ધ, નિર્મલ અક્લંક હિદિત જગ ચંદ્ર ॥

વિપદ ચન્દ્ર તારા તનય, શીતલ કિરણ પ્રકાસિ ।

અમૃત સીંચન મમ હૃદય, મુખમય આનંદ રાસિ ॥

મુખમય આનંદ રાસિ મકલ જન શેષ હર ।

લમજિ ને આગે શરણુ તે ડરત ન કાલ ડર ॥

દિયો દાન તિન અબમ દુઃક દુષ્ણ સળ ઘટે ।

નિત નિત નવ નવ પ્રેમ, કર્મ બંધન કટે ॥

કટે કર્મ બંધન સંસારી । સુખ સાગર પૃથિત અતિ બારી ॥

વિધિ નિષેધ શ્રુત્ત્વ જીવે નિજ આત્મ જન આનિ બસાવે ॥

આવય જન વસત સંગ પારસ કે—

આવસ કનક સમાન ભય ।

માગૌ મન મનસિ દાસિ અપની કરિ—

પૃગ્ણ કામ મદા હૃદયં ॥

સેવક ગુણ નામ આસ કૃગિ બગૈ—

અમ નિશ્ચ દાસિ કૃપા ક-ણં ।

જય જય કિલોત વ્યાસકુલ દીપક—

શ્રીહરિવંશ ચગ્ણ શ-ણં ॥ ૪ ॥

(છાંદસ)

પદ્મત ગુનવ ગુણ નામ સદા સતસંગતિ પાવૈ ।

અરુ બાદૈ રસ રીતિ વિમલ વાણી ગુણ ગાવૈ ॥

પ્રેમ લક્ષણા બક્ષિત સદા આનંદ હિતકારી ।

શ્રીગદાધુગચગ્ણ પ્રીતિ બ્રજૈ અતિ ભારી ॥

નિજ મહલ દલલ નવકુજ મેં—

નિત સેવક શ્રેયા કૃણં ।

નિશિદિન સમીપ સતત મૈ—

મુ શ્રીહરિવંશ ચરણ શરણં ॥ ૫ ॥

ઇતિ શ્રીહિતહરિન શયન્દ્ર ધ્યાન ગુણપ્રકાશ પદાદય પ્રકરણ કી

જય જય શ્રીહિત હરિવંશ ॥ ૬ ॥

અથ શ્રીહિત મહાસ્ત્ર ગાન દ્વાદશ પ્રકરણ ૧૨ ।

(છન્દ ચાગ ગગ સુદા બિલાવલ)

જય જય શ્રીદગ્ધિંશ વ્યાસકુલ મંડના ।

ગસિદ અનન્યનિ મુખ્ય ગુર જન ભય ખંડના ॥

શ્રીકૃષ્ણવન વાસ ગસ રસ બુધિ જહાં ।

કીડત આમા સ્વામ પુલિન મંજુલ તહાં ॥

પુલિન મંજુલ પગ પાવન ત્રિવિધિ તહાં માગત જહૈ ।

કુજ્જવન વિચિત્ર શોભા મન્ન નિત મેવત રહૈ ॥

તહા સંતત આમનન્દન ગહત કનુપ બિહંડના ।

જય જય શ્રીદગ્ધિંશ વ્યાસકુલ મંડના ॥૧॥

જય જય શ્રીદગ્ધિંશચન્દ્ર ઉદિત સદા ।

દ્વિજકુલ કુમુદ પ્રકાશ વિપુલ સખ સંપદા ॥

પર ઉપદાર વિચાર સુમતિ જગ વિસ્તરી ।

કરણાસિધુ કૃપાય કાલ ભય સખ દરી ॥

દરી સખ દસિ કાલ હી ભય કૃપારૂપ જુ બપુ ધરૂયૌ ।

કગત જે અનગહન નિદેહ સિનહું પૈ અનુથર કરૂયૌ ॥

નિગભિમાન નિર્વૈગ નિગમ નિષ્કલંક જુ મર્વદા ।

જય જય શ્રીદગ્ધિંશચન્દ્ર ઉદિત સદા ॥૨॥

જય જય શ્રીદગ્ધિંશ પ્રસસિત સખ કુની ।

માગસાગ વિરેદિત કેવિદ બહુશુભી ॥

गुप्त रीति आचरण प्रगट सज्ज नग द्वि ।

‘गान धर्म वृत्त कर्म भक्ति हितकर द्वि ॥

१ भक्त ने हित सखि आये कन्ध दोष गुप्त सज्ज धरे ।

कर्म कर जिन अभय दीने कर्म पन्धन सज्ज धरे ॥

परम सुख सुशील सुन्दर पाछि स्वामिनि भक्त धनी ।

नय नय श्रीहरिवंश प्रशंसित सज्ज दुनी ॥३॥

‘नय नय श्रीहरिवंश नाम गुण गाथ है ।

प्रेम लक्षणा भक्ति सुख, करि पाय है ॥

अरु पाठ, रस रीति प्रीति मित ना छरे ।

छत विषम भंसार कीर्ति नग निस्तरे ॥

निस्तरे सज्ज नग विमल झरति साधु संगति ना छरे ।

पास वृन्दाविधि पावै श्रीराधिका नू कृपा करै ॥

अनुर युगलकिशोर सेवक दिन प्रसादहि पाय है ।

नय नय श्रीहरिवंश नाम गुण गाथ है ॥४॥

धति श्रीहित भंगल गान द्वादश प्रकरण की

नय नय श्रीहितलक्ष्मिवंश ॥१२॥



१ ‘भक्ति हित ने’ यह भी पाठ है । कहीं कहीं ‘भक्त हित ने’
ऐसा भी पाठ है, पर ये सरलार्थक नहीं मान्य पड़े ।

અપુનર્જીવ સ્વર્ગ જે નાહિં બરાબર—

તો મુખ મર્ત્ય કહો કબર તૈ ॥

કહો કહે પ્રમાણ વચન બિસારત—

પ્રેમી અનન્ય બધે જાય તૈ ।

તથા શ્રીહરિવંશ કહી જુ કૃપા કરિ—

સૌંચૌ પ્રબોધ મુન્યૌ અખ તૈ ॥૫॥

(સવૈયા સુગત)

શ્રીહરિવંશ કહી જુ સ્યામ સ્યામા પદ—

કમલ સંગી શિર નાયૌ ।

તે ન વચન માનત ગુન્દોહી—

નિશિ દિન કરત આપનૌ બાયૌ ॥

ઇત વ્યવહાર ન ઉત પરમારથ—

ખીચ હી ખીચ જુ જનમ ગમાયૌ ।

જો ધરમિનિ સૌ પ્રીતિ કરત નહિ—

કહા બયૌ ધર્મા જુ કહાયૌ ॥૬॥

(સુમુખી જન્મ)

કરૌ શ્રીહરિવંશ ઉપાસિક સંગ—

જુ પ્રીતિ તરંગ મુરંગ બહૌ ।

કરૌ શ્રીહરિવંશ કી રીતિ સબૌ—

કુલ લોક વિરહ જુ જન્ય સહૌ ॥

हरै श्रीहरिवंश के नाम सों प्रीति—

न नाम प्रताप धरम्भ लखौ ।

न धरम्भी धरम्भ स्वरूप दखौ—

भिसरै निन श्रीहरिवंश दखौ ॥ ७ ॥

(छिरीट छन्द)

श्रीहरिवंश धरम्भ न जनत—

प्रीति ही ग्रंथि तहीं मिल जेसत ।

श्रीहरिवंश धरम्भनि भाज—

धरम्भी मुहात धरम्भ लै जेसत ॥

श्रीहरिवंश धरम्भ कृपा करै—

तासु कृपा रस भादक डोसत ।

श्रीहरिवंश ही वाणी समुद्र डो—

भीन भैंस गु अगाध दखोसत ॥ ८ ॥

(छन्द दुर्मिला)

प्रत संयम धर्म सु धर्म जिते—

सय शुद्ध विरद्ध पिछानत हैं ।

अपनी अपनी करतूत करै—

रस भादिक संद न आनत हैं ॥

हरिवंश गिरा रस रीति प्रसिद्ध—

प्रतीति प्रगट प्रमाणत हैं ।

जलि जगि अपने धरम्भनि ही—

न धरम्भी धरम्भहि जनत हैं ॥ ९ ॥

કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જાનત ॥૭૭॥

જાન્યૌ ધરંમ દેખી રસ રીતિ—

જુ નિજુર ખોલત બદન પ્રકાશિત ।

એસે ન વૈસે રહે મઝ રૈદવ—

પાછિલી યો જુ કરી નિરખાસિત ॥

હવે હે દેરિ જૈસે કે તેસે હમ—

બારે તૈ આયે સન્યાસિન માનત ।

કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જાનત ॥૮૦॥

એક રિસાને સે રખે સે દીખત—

પૂજત રીતિ ભભૂકત ધાખત ।

એક રગમજે ખોલત ચાલત—

મામિલે હું બપુરે જુ જનાવત ॥

એક બદન કે સાચી સાચી કહૈ—

ચિત્ત સચાર્ધ હી એકૌ ન આનત ।

કાચે ધરમિન કે સુનૌ છન્દ—

ધરમી ધરંમ મરંમ ન જાનત ॥૮૩॥

એક ધરંમ સમુજઝે બિના ડવ—

અસાર્ધ કે હવે જુ જગત પુજાવત ।

મૂલ ન મન્ન ટોરા ડી રીતિ—

ધરંમિનિ પૂછત બદન દુરાવત ॥

૧૬ મુલમ્મા સૌ દેત ઉધારિ—

જુ વસ્ત્રમ સૌ વસ્ત્રમ પરમાણુત ।

કાચે ધરંમિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૨૦॥

૧૭ ગુરુન સૌ બાદ કરંત—

જુ પડિત માની હૃવૈ જમહિ પેંકત ।

૧૮ દરબ્ય કે જોર બરબ્યટ—

આમન આપિ સમા મધિ બૈકત ॥

૧૯ જુ ફેરિ રીતિ ઉપદેશત—

૧૯ બડે, હૃવૈ ન બાત પ્રમાણુત ।

કાચે ધરંમિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૧૧॥

૨૦ ધરંમી અનન્ય કહોય—

બડાઈકૌ ગારીયે વાજી સી માંડત ।

ઐર કે બાપ સૌ બાપ કહંત—

દ્રવ્ય કે કાજ ધરંમહિ જાડત ॥

બોલત બોલ બટાણી સે લાગત—

હૃવૈ ગુરુ માની ન બાત પ્રમાણુત ।

કાચે ધરંમિનિ કે સુનૌ છન્દ—

ધરંમી ધરંમ મરંમ ન જનત ॥૧૨॥

(૭૫મું)

પ્રગટત શ્રીહરિવંશ શરૂ દુંદુભિ યજ્ઞય બલ ।
 મદન મોહ મદ મલિત નિદરિ નિર્દલિત દંભ દલ ॥
 ભર્મ ભાગ્ય ભય બીત ગર્વ દુર્ગર્જન રજ ખંડન ।
 લોભ ક્રોધ દલિ કપટ પ્રબલ પાખંડ બિહંડન ॥
 તૃષ્ણા પ્રપંચ મત્સર વ્યસન સર્વ દંડ નિર્બલ કરે ।
 શુભ અશુભ દુર્ગ વિધ્વંશ તબ જયતિ જયતિ જગ ઉચ્ચરે ॥૧૮

મતિ બી કાગે ધર્મી ધર્મ નામ ચતુર્દશ પ્રકરણ કી
 જય જય શ્રીહિત હરિવંશ ॥૧૪॥



શ્રીહિત અલમ્બ્ય લાભ પંચદશ પ્રકરણ ॥ ૧૫ ॥

(નારાય ૭૬)

હરિવંશ નામ દૈ જહા, તહા તહા ઉદારતા—

સકામતા તહા નહીં, કૃપાહુતા વિશેષિયે ।

હર્ષિવંશ નામ લીન જે, અખતશયુ તે સદા—

પ્રેમ ચ દંભ આદિ દૈ તહા કહ્ન ન પેખિયે ॥

હરિવંશ નામ જે કહ્ન, અનન્ત સુઃખ તે લહ્ન—

દુરાખ્ય પ્રેમ હી દશા તહા પ્રત્યક્ષ દેખિયે ।

સાઈ અનન્ય સાધુ, મો જગત્ર પૂજિયે, સદા—

સુ ધન્ય ધન્ય વિશ્વ મેં જનમ્મ સત્ય લેખિયે ॥૧૫॥

હરિવંશચન્દ્ર જો કહી સુચિત હવે સખે લહી—

વચન્ન ચારુ માધુરી સુ પ્રેમ સૌ પિઠાનિથે ।

સુને પ્રપન્ન જો ભયે અબદ્ધ સર્વ કે ગયે—

તિન્દ્રે મિલે પ્રસન્ન હવે ન જાતિ બેદ માનિયે ॥

સુભાગ લાભ પાપ હૈ પ્રશન્નિ દદ લાપ હૈ—

સિગય નૈન દેખિ કે અબેદ બુદ્ધિ આનિયે ।

કૃપાલુ હવે સુ ભાખિ હૈ ધરમ્મ પુષ્ટ રાખિ હૈ—

શીવ્યાસનન્દ નામ કૌ અલક્ષ્ય લાભ જાનિયે ॥૨॥

હરિવંશ નામ સર્વસાગ છાદિ, સેત બહુત ખાર—

ગજ વિભવ દેખિ કે બિપય વિપમ્મ બોલ હૌ ।

સુ જો હોત સાધુસંગ આનિ કૃત પ્રીતિભંગ—

માન કાજ ગજસીન કે જુ મુકજ જોનહી ॥

જહા તહાં જુ અન્ન ખાત સખી કહત આપ માત—

સકલ ઘોસ દંદ જાત ગત્રિ સર્વ મોવહી ।

પ્રસિદ્ધ વ્યામનન્દ નામ જાનિ ખૂઝિ છોડ હી—

પ્રમાદ તૈ લિયે જિના જનમ્મ બાદ બોવહી ॥૩॥

હરિવંશ નામ હીન, ખીન, હીન દેખિયે મદા—

કહા બપૌ બહુ હવે પુરાણ વેદ પદ્ધતી ।

કહા બપૌ ભયે પ્રતીણ જાનિ માનિયે જનવ —

સોદ રીઝિ મોભ કૌ જનાય જાત ગદ્દહી ॥

कहा भयो किये करम मग दान देत देत—

श्रवनि पाय उभय उभय देवदौष्ट यदुद्धो ।

परुषो प्रवाद ठाल के कदापि छूटि है नहो—

श्रीव्यासनन् नाम जो प्रतीति सो न रदु (ह) हो ॥१॥

धति श्रीहित अलङ्काराज प सदश प्रकरण श्री

जय जय श्रीहितदशिवंश ॥२॥

हित अवोलनौ सिद्धान्त पौडश प्रकरण । १६ ।

(दोहा)

वाणी श्रीदशिवंश श्री, सुनहु गसिह मित लाय ।

निदि विधि भयो अणोलनौ, मो सज्ज कहे समुदाय ॥१॥

श्रीदशिवंश शु कयि कही, मोर सुनाजो गाय ।

वाणी श्रीदशिवंश श्री, नित मन रही समाय ॥२॥

श्रीदशिवंश अणोलनौ, प्रगट प्रेम रस सार ।

अपनी बुद्धि न द्यु कहे, सो वाणी उच्चार ॥३॥

दितदशिवंश शु कीडहो, दंपति रस समवृक्ष ।

सदज समीप अणोलनौ, करत शु आनंद भूख ॥४॥

हादे हो डारति भागिनी, हो शु दहति छंद जात ।

नेक जहन सन्भुष करै, क्षय क्षय करै सिरात ॥५॥

વે ચિતવત તુવ વદન બિધુ, તૂ નિજ ચરણુ નિહારૂતિ ।
 વે મુદુ ચિયુક પ્રસોબહી, તુ કર સૌં કરઠારૂતિ ॥૬॥
 બચન અધીન સદા રહે, રૂપ સમુદ્ર અગાધ ।
 પ્રાણુરમણુ સૌં કત કરત, બિનુ આગસ અપરાધ ॥૭॥
 ચિતૈ કૃપા કરિ ભામિની, લીને કંક લગાય ।
 સુખ સાગર પૂરિત બચે, દેખત દિવૌ સિરાય ॥૮॥
 સેવક શરણુ સદા રહે, અનત નહીં વિત્રામ ।
 વાણી શ્રીહરિવંશ છી, કે હરિવંશહિ નામ ॥૯॥

ઇતિ શ્રીહિત અખોલનૌ સિદ્ધાન્ત નામ ષોડશ પ્રકરણુ છી
 જમ જમ શ્રીહિતહરિવંશ । ૧૦ ॥

ઇતિ શ્રીનાદકુલ મંડન હિત પથ અજન રસિક સંભા બુધણુ
 શ્રીરાધિકાવતાર શ્રીહામોદરણુ (સેવકણુ) કૃત
 શ્રીમત્ સેવકવાણીણુ છી જમ જમ
 શ્રીહિતહરિવંશ ।

ૐ

॥ ફલસ્તુતિ છપ્પય ॥

(ભાવના પરાયણુ શ્રીકૃષ્ણદાસણુ કૃત)

જયતિ જયતિ હરિવંશ નામ રતિ સેવક વાની ।
 પરમ પ્રીતિ રસ રીતિ રહસિ કલિ પ્રગટ જખ્યાની ॥
 પ્રેમ સંપત્તી ધામ સુખદ વિત્રામ ધરમ્મિનિ ।
 બલુત ગુણુત ગુણુ ગૂઢ, બકત ભમ ભજત કરમ્મિનિ ॥

શ્રીવ્યાસનન્દ અગવિંદ ચરણ મદ તાસુ રંગ રસગંધર્થી ।
શ્રીકૃષ્ણદાસ હિત હેત સૌ જે સેવક વાણી બાચડી ॥૧૧॥

❀ ૭૫મ ❀

કે હરિવંશહિ નામ ધામ વૃન્દાવન બસ ગતિ ।
વાણી શ્રીહરિવંશ સાર સંચૈ મેવક મતિ ॥
પઠન શ્રવણુ જો કરે પ્રીતિ સૌ સેવક વાની ।
બવ નિધિ દુસ્તર યદપિ હોય તિહિં ગોપદ ખાની ॥
શ્રી વ્યાસનન્દ પગસાદ લહિ સુગલ ગહસ દરસે જુ હો ।
બાનિ વૃન્દાવન હિત રૂપ બલિ સુખ નિલસે બાપુક ધામ ધુર ॥૧૨॥
અન્ય સિન્ધુ તે સોધિ રંગ દલિ આદિ બઢાપૈ ।
પદ હિત કૃપા પ્રમાદ અગી બાજન બરિ પાપૈ ॥
રસિક મનૌ સુર મખા આનિ તિનકૌ દરસાપૈ ।
શ્રી સેવક નિજુ ગિગ મોહિની બાટિ પિનાપૈ ॥
પઠન શ્રવણુ નિશિ દિન કરે દમ્પતિ સુ ધામ સુખ લહે બલિ ।
વાણી સ્વરૂપ હરિવંશ તન બનિ વૃન્દાવન હિત રૂપ વલિ । ૩૧॥
સકલ પ્રપચ બિનાશ હોત પદિ સેવક વાણી ।
શ્રીવૃન્દાવન બાસ હોત પદિ સેવક વાણી ॥
વ્યાસનન્દ પદ પ્રીતિ હોત પદિ સેવક વાણી ।
શ્રી રાધાવદનન મીત હોત પદિ સેવક વાણી ॥
પદિયે નિત હિત રંગ સૌ સેવક વાણી પ્રેમ ભર ।
સેવક વાણી હી કૃપા સેવક વાણી દહે સુ કર ॥૧૩॥

(૫૬)

સેવક સેવક વાણી બોલો ।

૩૫ રંગ રસ મદ મેં જાકે કુંજનિ કુંજનિ ડોલો ॥

જાકે પટે સુનેં આરુ ગાયે ઉપજત પ્રેમ અમેલો ।

રસિક મુકુંદ સુમિર હિત ચિત મેં કપટ કપાટનિ બોલો ॥૫૫॥

છપ્પમ

જૈસેં તેસેં જો કહે વક વાર હરિવંશ ।

પાવનુ માયો દૈ રહે જિન જિન કરૈ પ્રશંશ ॥

કપટ ૩૫ હરિવંશ કો હાસ હેત ધરિ આવૈ ।

૫૬ રજ મેં લોટ્યો કરૈ વાર વાર શિર નાવૈ ॥

અસુવનિ ધારા યૌ ચલે જ્યૌ પિયઠારી જનિ ।

સેવક કી રતિ જો ભઈ કેસેં કરૌ બખાનિ ॥૫૬॥



હરિવંશ નામ કે સુનત હી રોમ રોમ ભરિ આવૈ ।

હરિવંશ ઉપાસિક જો મિલે પદરજ તત લપટાવૈ ॥

હિય સોં રહત લગાય મુઠખ કણુ બોલિ ન આવૈ ।

અભ્યન્તર અકુશાનિ બુદ્ધિ ગતિ કસેં પાવૈ ॥

શિર નાવૈ ચહુ દિશિ દિરૈ જિન જિન લેત બલાય ।

સેવક કી ગતિ જો ભઈ સુ મોપૈ કહી ન જાય ॥૫૭॥



શ્રીહિત રૂપચન્દ્રો વિજયતે

શ્રીસેવક-ઉત્કર્ષ

❀ ૭૫૫ ❀

હિતકૌ લાડ, લડાયો નીકેં હિતકૌ ધ્યાયો ।
 હિત બિન ઔર ન ગાયો અરબસ દિય પ્રગટાયો ॥
 હિતકૌ મિહોં સ્વરૂપ ગિગ મધિ પ્રગટ બતાયો ।
 હિતકૌ બાંકો પંથ કૃપા કરિ તાહિ જતાયો ॥
 હિત ધર્મ સર માંચો સદૃત શ્રીસેવક છી સર કો કરૈ ।
 હિત અરણ્ય કમલ મકરંદ કૌ મધુપ બયો હિત ઉચ્ચરૈ ॥૧॥

શ્રીહરિવંશ શુ તજો (તો) મોહિ હરિવંશ દુહાઈ ।
 શ્રીહરિવંશ ન બજો (તો) મોહિ હરિવંશ દુહાઈ ॥
 હિત બિન ઔર ન ગાજો ધ્યાજો યદ પ્રણુ કાયો ।
 હીયો ધનિ, બિન વંશ બિના હરિ નામ ન લીયો ॥
 હિત ધર્મ શીર બાકો રમિક અલિ બલિત વિજય ડંકો દિયો ॥
 જિહિ ઉધરિ મિતે હરિવંશ જુ—

અલિ અલિ કિશોરિ અસ કો દિયો ॥૨॥

જહોં લો ધામી ધામ સદલ હિત હી કો ગાયો ।
 હિત હી રમામ રમામ હિતહિં સખ રમિત બતાયો ॥

હિત હી વિદ્યા મન્ત્ર સુ હિત હી દારણ દારણ ।
 હિત હી પરમ સ્વતન્ત્ર સુ હિત હી જે આચારણ ॥
 જિન વત અનન્ય ઔઠી સિયો જય શ્રી સેવક હિત ધર્મ ધુર ।
 હિત રમિ સુ રણી તન મન હિયે—
 અર રોમ રોમ રણી હિત સુ પુર ॥૩૥॥

॥ ઇતિ કલસ્તુતિ ક્રી જય જય શ્રીહિતહરિવંશ ॥

ॐ

શ્રીઆચાર્ય મહાપ્રભુ શ્રીહિતહરિવંશચન્દ્રજી કૃત— શ્રીયમુનાષ્ટક ।

અભધિરાજન-દનાશુભમગત્ત્ય-દના—
 નુલેષગંધવાહિની ભવાન્ધિગીજ્ઞાદિનીમ્
 જગત્ત્રયે વસસ્ત્રિની લસત્સુવંપવસ્ત્રિની—
 બન્ને કલિન્દનન્દિની દુર તમેલ્લભંજિનીમ્ ॥૧॥

(ગ્લોષ દેઐ અર્થ) દવિત ।

મગરાજન-દન દેઐ મેધ રયામ માત તમે' ચન્દન ક્રી ખૈર
 ચિત્ર રચના રચાવે દેઐ । મૌર્ધ અનુલેષ અંગરામ દેઐ પ્રવાહ બહૈ
 બવસિન્ધુ શીત નિસ્તેષ દેઐ જરાવે દેઐ ॥ ત્રીન લોક માંજ ભકે

जस के वितान तन्यौ नुमा सभ जल कीड। जुगल करायै है ।
ता कलिनन्दनी के भजे दिनचन्द जो दुरंत मोह भेद वन
सम्पति लप्पावै है ॥२॥

रमैकसीमगाधिका पदाब्जज्जितसाधिका—
तदंगगमर्षिजग्रभातिपुंनमंजुलाम् ।
स्वरोयिमातिशोभिता कृतां जनाधिगंजनां—
भजे कलिनन्दनीं दुरन्तमोहभंजिनीम् ॥२॥

(श्लोक के अर्थ) कवित ।

रमझी है एक सीव सदा गंधारपारीजु ताके खननि की
सुभक्ति के सचावै है । प्रिया अंगगग सों विचित्रन प्रभाकै
धरै अति मंजु पुंन छवि नव मग्सावै है ॥ अपनी सुश्रुति
कहि सोभित मग्स उप अजन के मंजन करत छवि छावै है ।
ता कलिनन्दनी के भजे दिनचन्द जो दुरंत मोह भेद वन
सम्पति लप्पावै है ॥२॥

पूजेन्द्रसुवराधिकाहृदिप्रभुर्गमाख्यो—
भंडारसाब्धिपूग्घोशिवातितीक्ष्णगेन ।
भद्रिःसमुच्चयनप्रवादपिण्डीमहं—
भजे दायद-नन्दनीं दुर तमोदभजिनीम् ॥३॥

(श्लोक के अर्थ) कवित ।

नित्य गंधावह्नय के द्विय भाऊ पुरि देखौ भंडारस-सागर

સદા હી ઉમગાવૈ હૈ । તાહી કો નો યૂગ સો સખનિ હૈ દર તાકો
અતિ તીવ્ર વેગિ સૌ દગ દરસાવૈ હૈ ॥ ખાહર હૈ ઉજલ હૈ નવલ
પ્રગાહ રૂપ અતિ હી અનૂપ પરિકર હૈ રિઝાવૈ હૈ । તા કલિંદ-
નન્દિની હૈ બજૌ દિતયન્દ નો દુગંત મોહ બેદ વન સમ્પતિ
લખાવૈ હૈ ॥૩૩॥

વચિત્રગ્નજ્વલસત્તટદ્વયબિગોળવનો—

વિચિત્રહ સમારસાધનન્તપક્ષિસંકુલામ્ ।

વિચિત્રમીનમેખલા કૃતાતિદીનપાલિતા—

બજે કલિંદ-નન્દિની દુરંતમોહબંજિનીમ્ ॥૪૧॥

(ગ્લોહ કો અર્થ) કવિત્ત ।

ગતન જરિત ટોહી તટનિ કી શોખા અતિ ઉજ્જવલ અનંત
નો સગમ છવિ જાવૈ હૈ । ચિત્ર ઔ વિચિત્ર હ સ સારસ કો
આદિ લૈ અનેક પછી ડોહૈ તિન્હે મોદ ઉપજાવૈ હૈ ॥ નાના
જાતિ મીન તે તૌ કરત કલોલ જામે દીનન કે પાલન કો વિગદ
બદાવૈ હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કો બજૌ દિતયન્દ નો દુગંત
મોહાબેદ વન સમ્પતિ લખાવ હ ૪૧

વહંતિકા શ્રિયાહરેમુંદા કૃપાસ્વરૂપિણી—

વિશુદ્ધભક્તિમુજ્જવા પરેશ્વાત્મિકા વિદુઃ ।

સુધાશ્રુતિસ્વલૌકિકી પરેશર્ણરૂપિણી—

બજે કલિંદનન્દિની દુરંતમોહબંજિનીમ્ ॥૫૧॥

(શ્લોક કૈા અર્થ) કવિત્ત ।

હરિજી હી શોભા તાકોં બહત સદાહી રહેં અતિ હી કૃપાં
સ્વરૂપ કહત ન આવૈ હૈ । બકિત જો વિશુદ્ધ સોઈ ઉજવલ મહા હૈ
દ્રેષ રસ હી છી મુરતિ જાનિ હિય સુખ પાવૈ હૈ ॥ નિત હી
અલૌકિક સુધાકૈા અવૈ પ્રેમ દ્રવૈ રયામ કૈા વરન ધરૈ જીવિ દરસાવૈ
હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કૈા બજૈાં હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ વન
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૫૥॥

સુરેન્દ્રવૃન્દાવન્દિતાં રસાદધિષ્ઠતેવને—

સદોપલબ્ધમાધવાદ્ભુતૈકસંદ્રશોન્મદામ્ ।

અતીવવિહ્વલામિલચલત્તરંગદોર્લતાં—

બજે કલિંદનન્દિની દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૫૬॥

(શ્લોક કૈા અર્થ) કવિત્ત ।

શિવ વિધિ ઇન્દ્ર જાકોં વન્દન કરત સદા સો તૈા રસ રૂપ
ધામ હી મેં સચુપાવૈ હૈ । માધવ સોં પાયો જો અદ્ભુત લક
રસ તાસોં સદા ઉન્મત્ત રહ છકનિ છકાવૈ હૈ ॥ અતિસૈ વિહ્વલ
હવૈ ઉજલે તરંગ માનોં જોંચી જુજ લતાં કરિ મિલન કૈાં આવૈ
હૈ । તા કલિંદ-નન્દિની કૈાં બજૈાં હિતચન્દ જો દુરંત મોહ ભેદ
વન સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૫૬॥

પ્રકુલપંજરાનનાં લસનવોત્પલેશજા—

રયાંગનામયુગ્મકસ્તનીમુદારહંસિકામ્ ।

નિતંવચારુરોધસા હરે પ્રિયા રસોન્નલા—

બજે કલિંદનન્દિનીં દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૭॥

(શ્લોક કૌ અર્થ) કવિત્ત ।

પ્રકુલિત કંજ સો વદન માતો સોભા દેત ઉત પલ નૈનસો
કટાક્ષ બરસાવૈ હૈ । ચકવા ઐ ચક્રી થો રાજત હૈ કુચ દોગી
હંસ બોલેં સોઈ છુદ્ર ધ રિકા બળાવૈ હૈ ॥ મુન્દર જો વિવિ તટ
તેઈ હૈ નિતંવ પિય પ્યારી કૌ ઉન્નલા રસ રૂપ દરસાવૈ હૈ ।
તા કલિંદ-નન્દિની કૌ બજૌ હિતચંદ જો દુરંત મોહ ભેદ વન
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૭॥

સમસ્તવેદમસ્તકૈરગમ્ય વૈભવા સદા—

મહામુનીન્દ્રનારદાદિભિ સદૈવ ભાવિતામ્ ।

અતુલ્યપામરૈરપિ શ્રિતા પુમર્થશા દા—

બજે કલિંદનન્દિનીં દુરંતમોહભંજિનીમ્ ॥૮॥

(શ્લોક કૌ અર્થ) કવિત્ત ।

શાસ્ત્ર ઐ પુરાણ વેદ ઉપનિષદાદિ જાકે વૈભવ કૌ ગાવૈં ભેદ
હર મેં ન આવૈ હૈ । મહા જો મુનીન્દ્ર ઐર નારદાદિ ભક્ત સદા
દિય માઝ ધ્યાવત પૈ મન ન અધાવૈ હૈ ॥ પામર અતુલ્ય જાકો
આશ્રય કરત માત્ર સખ પુરુષાર્થ હી કે સાર કૌ પાવૈ હૈ ।
તા કલિંદ નન્દિની કૌ બજૌ હિતચંદ જો દુરંત મોહ ભેદ વન
સમ્પતિ લખાવૈ હૈ ॥૮॥

વૃન્દાવન દુતિપત્ર કી, ઉપમા કૈં કહ્યુ નાહિં ।
 કોટિ કોટિ ઐકુંઠ હ, તેહિં મર્મ કહે ન જાહિં ॥૧૩॥
 લતા લતા સખ કટપતરુ, પાગ્નિત સખ ફૂલ ।
 સહજ પદરસ રહત હૈં, ઝલકત યમુના ફૂલ ॥૧૪॥
 કુંજ કુંજ અતિ પ્રેમ સૌં, કોટિ કોટિ રતિ મૈન ।
 દિનહિં સૌંભારત રહત હૈં, શ્રી વૃન્દાવન હોન ॥૧૫॥
 વિપિનરાજ રાજત દિનહિં વરપત આનંદ પુંજ ।
 લુપ્ધ સુગધ પરાગ ગસ, મધુપ કરત મધુ ગુંજ ॥૧૬॥
 અપરણુ નીલ સિત કમલ કુવ, રહે ફૂલિ બહુરંગ ।
 વૃન્દાવન પહિરે મનૌ, બહુ વિધિ વસન સુરંગ ॥૧૭॥
 હિતસૌ ત્રિવિધિ સમીર બહૈ જૈસી રચિ જિહ્વા કાલ ।
 મધુર મધુર કલ કોકિના, ફૂંજત મોર મરાલ ॥૧૮॥
 મહિત યમુના વાગિ યૌ, ગજત પરમ ગસાલ ।
 અતિ સુદેસ સોખિત મનૌ, નીલમણિન કી માલ ॥૧૯॥
 વિપિન ધામ આનન્દ કૈં, ચતુર્ઘ્યચિત્રિત તાહિ ।
 મદન કેલિ સમ્પતિ સદા, તેહિં દરિ પૂરણુ આહિ ॥૨૦॥
 દેવી વૃન્દાવિપિન કી વૃન્દા સખી મરૂપ ।
 જોદિવિધિ રુચિ હોઇ કુન્ડ કી, તેહિંવિધિ કરત અનૂપ ॥૨૧॥
 ઊન ઊન વન કી છવિ નર્મ, નનવ યુગલ કે હેત ।
 સમુજિ બાત સખ જીય કી, સખિ વન્દા સુખ દેત ॥૨૨॥

ગાવત વૃન્દા વિપિન ગુણુ, નવલ લાડિલી લાલ ।
 સુખદ લતા ફલ ફલ દ્રુમ, અદ્ભુત પરમ રસાય ॥૨૩॥
 ઉપમા વૃન્દા વિપિન કી, કહિ ધૈ દીગૈ ઠાહિ ।
 અતિ અમૃત અદ્ભુત સગસ, શ્રીમુખ વચ્ચુત તાહિ ॥૨૪॥
 આદિ અન્ત જાકૈ નહીં, નિત્ય સુખદ બન આહિ ।
 માયા ત્રિગુણુ પ્રપચ દી, પવન ન પરસત તાહિ ॥૨૫॥
 વૃન્દાવિપિન સુહાવના, રહત એક રસ નિત ।
 પ્રેમ સુગ રંગે તહા એક પ્રાન દૈ મિત ॥૨૬॥
 અતિ સ્વરૂપ સુકુમાર તન નવ કિશોર સુખરાસ ।
 હરત પ્રાણુ સખ સખિન કે, કરત મન્દ મૃદુ હાસ ॥૨૭॥
 ન્યારૈ હૈ સખ લોક તે, વૃન્દાવન નિજ ગેહ ।
 એલત લાડિલી લાલ જહૈ, બીજે સરસ સનેહ ॥૨૮॥
 ગૌર ગ્યામ તન મન રંગે, પ્રેમ સ્વાદ ગમ સાર ।
 નિકસત નહિં તિહિ પેનતૈ, અટકે સરસ વિહાર ॥૨૯॥
 બન હૈ જાગ સુહાગ કૈ, રાખ્યૌ રસ મેં પાગિ ।
 રૂપ રંગ કે ફલ દોક, પ્રીતિ લતા રહિ લાગિ ॥૩૦॥
 મદન સુધા કે ગસ બારે, ફૂલિ રહે દિન રૈન ।
 ચડુ દિશ ભ્રમત ન તજત ઊન ભૃગ સંખિન કે નૈન ॥૩૧॥
 કાનન મે રહે ઝવઝિ કૈ, આનન વિવિ વિધુ કાતિ ।
 સહજ ચકોરી સખિન દી, અખિયા નિરખિ મિગતિ ॥૩૨॥

એસે રસ મેં દિન મમન, નહિં જનનત નિશિ જોર ।
 વૃન્દાવન મેં પ્રેમ છી, નદી બદ્ધ ચડું જોર ॥૩૪॥
 મહિમા વૃન્દાવિપિન છી, કેસે કે કહિજાય ।
 એમે રસિક દિશોર દોડ, જામે રહે લુભાય ॥૩૫॥
 વિપિન અલૌકિક લોક મેં, અતિ અભૂત રસકંદ ।
 નવ દિશોર ઇંદ વૈસ દ્રુમ, કૂચે રહત સુહંદ ॥૩૫॥
 પત્ર ફૂલ ફલ લતા પ્રતિ, રહત રસિક પિય આદિ ।
 નવલકુવરિ દગ છટા જલ, તિહિ દર સંગે આદિ ॥૩૬॥
 કુવરિ ચરણ અંકિત મરણિ, દેખત જોહિ જોહિ દોર ।
 પ્રિયા ચરણ રજ જાનિ કે, લુકત રસિક સિરમોર ॥૩૭॥
 વૃન્દાવન પ્યારે, અધિક, યાતે પ્રેમ અપાર ।
 જામે ખેલત લાડિલી, મર્વસ પ્રાણ અધાર ॥૩૮॥
 સમૈ મખી સખ સૌજ લૈ, રંગી યુગલ ધ્રુવ રંજ ।
 સમૈ સમૈ છી જાનિ રચિ, લિયે રહત હૈ સંગ ॥૩૯॥
 વૃન્દાવન વૈભવ જિતૌ, તિતૌ કલૌ નહિં જાત ।
 દેખત સમ્પતિ વિપિન છી, કમલા હ લલયાત ॥૪૦॥
 વૃન્દાવન છી લતા સમ, કોટિ કંપતરુ નાહિં ।
 રજ છી લુલ ઝેકુંડ નહિં, જોર લોક દિહિ માહિં ॥૪૧॥
 શ્રીપતિ શ્રીમુખ કમલ કલૌ, નારદ સૌ સમુદાય ।
 વૃન્દાવન રસ સખન તેં, રાખ્યૌ દૂરિ દુરાય ॥૪૨॥

અંશ દલા અવતાર જો, તે સેવત હું તાહિ ।
 જેસે વૃન્દાવિપિન કૌ, મન બચકે અવગાહિ ॥૪૩॥
 શિવ વિધિ ઉદય સખનિ દે, યહ આસા હૈ ચિત્ત ।
 શુભ સતા હૃવૈ સિર ધરૈ; વૃન્દાવન રજ નિત ॥૪૪॥
 ચતુરાનન દેખ્યૌ કહ્ય, વૃન્દાવિપિન પ્રભાવ ।
 દ્રુમ દ્રુમ પ્રતિ અન સતા પ્રતિ ઔરૈ બન્યૌ બનાવ ॥૪૫॥
 આપ સહિત મળ ચતુર્ભુજ, સખ હા ગ્લૌ નિદાર ।
 પ્રભુતા અપની ભૂલિ ગયૌ, તન મન કૈ રહ્યૌ હાર ॥૪૬॥
 લોક ચતુર્દશ હકુરધ, મંપતિ સદસ સમેત ।
 મળ તજિ બસ વૃન્દાવિપિન, ગસિકન કૌ રસખેત ॥૪૭॥
 સકહિ તૌ વૃન્દાવિપિન બસિ, છિન છિન આયુ બિહાત ।
 જેસૌ સમય ન પાઠદૈ, બચી બની હૈ ધાત ॥૪૮॥
 છાડિ સ્વાદ મુખ હેલ કે, ઔર જગત છી લાજ ।
 મનહિ મારિ તન હારિ કૈ, વૃન્દાવન મે ગાજ ॥૪૯॥
 વૃન્દાવન કે બમત હી, અન્તર જો કરૈ આનિ ।
 તિહિ સમ શત્રુ ન ઔર કોકિ, મન બચકૈ યહ બનિ ॥૫૦॥
 વૃન્દાવન કે બાસ કૌ, જિનકે નાહિ હુલાસ ।
 માતા મિત્ર સુવાદિ તિય, તજિ દ્રુવ તિનકૌ પાસ ॥૫૧॥
 ઔર દેગ કે બસત હી, અધિક બજન જો હોય ।
 ઇહિ સમ નહિ પૂજત તબી, વૃન્દાવન રદૈ મોય ॥૫૨॥

વૃન્દાવન મેં જો કળહું, બજન કહી નહિં હોય ।
 રજા તો ઉડિ લાગે તનહિં પીરે યમુના તોય ॥૫૩॥
 વૃન્દાવિપિન પ્રભાવ મુનિ, અપનો હી ગુણ દેત ।
 જૈસેં બાલક મયિન કૈ, માત જોદ ભરિ લેત ॥૫૪॥
 ઐગ હોગ જો યતન કરૈ, હોત બજન તજી નાહિં ।
 વા (યહા) ફિરૈ સ્વાગ્ય આપને બજન ગહે ફિરૈ બાહિં ॥૫૫॥
 ઐગ દેશ કે બગત હી, ઘટત બજન કી બાત ।
 વૃન્દાવન મેં સ્વાગ્યૌ, ઉવટિ બજન હવૈ જાત ॥૫૬॥
 યદ્યપિ સખ ઐગુણુ બર્યૌ, તદપિ કગત તુવ મંદિ ।
 હિતમય વૃન્દાવિપિન કૈ કૈસે દીજૈ પીઠ ॥૫૭॥
 વૃન્દાવન તૈ અનત હી, જોતિદ ઘૌસ બિડાત ।
 તે દિન લેખે જિન લિખૌ, વૃથા અકારય જાત ॥૫૮॥
 બજન ગસમથી વિપિન ધગ, સમુજિ બસ જો કોય ।
 પ્રેમ બીજ તેહિ ખેત તે, તગહી અકુગ રોય ॥૫૯॥
 યદ્યપિ ધાવત વિપૈ કૈ, બજન ગહત મિય પાનિ ,
 એસે વૃન્દાવિપિન કી, ચરણ ગહી ધ્રુવ આનિ ॥૬૦॥
 બસિઐ વૃન્દાવિપિન કૈ, જિહિં તિહિં વિધિ દૃઢ હોય ।
 નહિં ચૂકે એસૌ સમૌ, જાતન દીજિયૈ સોય ॥૬૧॥
 કહૌ તૂ કહૌ વૃન્દાવિપિન, આનિ બન્યૌ ભવ વાન ।
 યહૈ બાત જિય સમુજિ કૈ, અપનો છાડિ સમાન ॥૬૨॥

કાણુ ભંશુ તન જાત હૈ, છાડિ વિપૈ અસોલ ।
 કોડી બદલે લેહિ તૂ, અદ્ભુત રતન અમોલ ॥૧૭૮॥
 કોટિ કોટિ હીંગ રતન, અરુ મન વિવિધ અનેક ।
 મિથ્યા લાલચ છાડિ કૈ, ગહિ વૃન્દાવન પદ ॥૧૭૯॥
 નહિં સૌ માતા, પિતા નહિં, મિત્ર, પુત્ર કોઈ નહિં ।
 ઇનમેં જો અન્તર કરૈ, અસત વૃન્દાવન માહિં ॥૧૮૦॥
 નાતે જોતે જગત કે, તે સન મિથ્યા માન ।
 સત્ય નિત્ય આનન્દમય વૃન્દાવન પહિયાન ॥૧૮૧॥
 બસિઝૈ વૃન્દાવિપિન મેં દેસૌ મન મેં રાખ ।
 પ્રાણુ તજૌ વન ના તજૌ રહૌ બાત કોઈ લાખ ॥૧૮૨॥
 અવત ક્ષિપ્ત સુનિયત યહૈ, (શ્રી) ગધાવધ્યમવાલ ।
 દેસૈ વૃન્દાવિપિન મે, બસત રહૌ સન કાલ ॥૧૮૩॥
 બસિઝૌ વૃન્દાવિપિન કૌ, યહ મન મે ધરિ સેહુ ।
 કીજૈ દેસૌ નેમ દહ, યા રજ મેં પગૈ દેહ ॥૧૮૪॥
 ખંડ ખંડ હૈ જન્ય તન અંગ અગ સત દ્રેક ।
 વૃન્દાવન નહિં છાડિયે, છાડિવૌ હૈ બડી ચૂક ॥૧૮૫॥
 પટતર વૃન્દાવિપિન કી, કહિં ધૌ દીજૈ કાહિ ।
 જોહિ વન કી ધ્રુવ રેણુ મે, મરિઝૌ મંગલ આહિ ॥૧૮૬॥
 વૃન્દાવન કે ગુણુનિ સુનિ, હિત સૌ રજ મે લોટ ।
 જોહિ સુખ કૌ પૂજત નહીં, મુકિત આહિ સત કોટ ॥૧૮૭॥

મુરપતિ પશુપતિ પ્રજાપતિ, રહે જૂલિ તેહિ ઘૌર ।
 વૃન્દાવન વૈભવ દેહો, કૌન જાનિ હૈ ઐર ॥૭૩॥
 યદ્યપિ રાજત અવનિ પર, સખતે જોયો આદિ ।
 તાકી સમ દહિયે દહા, શ્રીપતિ વંદત તાહિ ॥૭૪॥
 વૃન્દાવન વૃન્દાવિપિન, વૃન્દાકાનન જેન ।
 છિન છિન રસના ગટો કર, વૃન્દાવન સુખદેન । ૭૫॥
 વૃન્દાવન આનન્દ ધન, તો તન નરવર આદિ ।
 પશુ જ્યો પોવત વિપૈ રસ, દાદિ ન ચિંતત તાહિ ॥૭૬॥
 વૃન્દાવન વૃન્દા દહત, દુરિત વૃન્દ દુરિ જાદિ ।
 નેહ બેસિ રસ ભજન કી, તથ ઉપજૈ મન માહિ ॥૭૭॥
 વૃન્દાવન અવલુનિ મુનહિ, વૃન્દાવન કૌ ગાન ।
 મન જ્યકૈ અતિ હેત સૌ, વૃન્દાવન હર આન । ૭૮॥
 વૃન્દાવન કૌ નામ રટિ, વૃન્દાવન કૌ દેખિ ।
 વૃન્દાવન સૌ પ્રીતિ દરિ, વૃન્દાવન હર લેખિ ॥૭૯॥
 વૃન્દાવિપિન પ્રણામ કરિ વૃન્દાવન સુખજાનિ ।
 જો આહત વિશ્રામ ધ્રુવ, વૃન્દાવન પહિંચાનિ ॥૮૦॥
 તજિ દ વૃન્દાવિપિન કૌ ઐર તીર્થ જો જાત ।
 જાંડિ વિમલ ચિંતામણી, કૌડી કૌ લલચાત । ૮૧॥
 પાય રતન ચીન્હો નહીં, દીનો કર તેં ડાર ।
 યદ્ ભાયા શ્રીકૃષ્ણ કી, મોહ્યો સખ સંસાર ॥૮૨॥

પ્રગટ જગત મેં જગમગે, વૃન્દાવિપિન અનૂપ ।
 નૈન અછત દીસત નહીં, યહ માયા કૌ રૂપ ॥૮૩॥
 વૃન્દાવન કૌ યશ અમલ જિહિ પુરાણ મેં નાહિ ।
 તાકી બાની પરં જિનિ, કવહૂં શ્રવણ નાહિ ॥૮૪॥
 વૃન્દાવન કૌ યશ સુનત, જિનકે નાહિ હુલાસ ।
 તિનકૌ પરસ ન કીજિયૈ, તજિ દ્રુવ તિનકૌ પાસ ॥૮૫॥
 ભુવન ચતુર્દશ આદિ દૈ, હવૈ હૈ મખકૌ નાશ ।
 ઇક છત વૃન્દાવિપિન ધન, સુખ કૌ મહજ નિવાસ ॥૮૬॥
 વૃન્દાવન યહ વિધિ અસૈ, તજિ કૈ સખ અભિમાન ।
 તૃણ તૈ નીચૌ આપ કૌ, જનૈ સોઈ જન ॥૮૭॥
 કામલ ચિત સખસૌ મિલૈ, કખહૂં કકોર ન હોય ।
 નિસ્પ્રેક્ષી નિવૈરતા, તાકૌ શત્રુ ન કોય ॥૮૮॥
 ફળે તીજે જો જીરૈ, સાક પત્ર કણુ આય ।
 તાહી સૌ સતોપ કવિ, રહૈ અધિક સુખ પાય ॥૮૯॥
 દેહ સ્વાદ છુટિ જાહિ સખ, ક'શુ હોય ક્ષીણ શરીર ।
 પ્રેમ રંગ ઉર મેં બઢૈ, વિહરૈ યમુના તીર ॥૯૦॥
 યુગલ રૂપ કી ઝલક ઉર, નૈન રહૈ ઝલકાય ।
 જેસે સુખ કે રંગ મેં, રાખૈ મનહિં રગાય ॥૯૧॥
 આવૈ છવિ કી ઝલક ઉર, ઝલકૈ નૈનનિ બારિ ।
 ચિંતત સાવલ ગૌર તન, સંકહિ ન તનહિં સંબારિ । ૯૨॥

જગન પટ, અતિ દીન લટ, દિગ્ધે સરસ અનુરાગ ।
 બિવસ મધન વન મેં ફિરૈ, ગાવત યુગલ મુકાગ ॥૯૪॥
 ગમ મેં દેખન ફિરૈ બન, નૈનનિ બન રહૈ આછ ।
 હટ્ટું હટ્ટું આનંદ રંગ બગિ પરૈ ધગનિ ચકરાછ ॥૯૫॥
 ઘેસી ગતિ હવે હૈ દગ્ધટ્ટું, મુખ નિસગત નદિ બૈન ।
 દેખિ દેખિ વૃન્દાવિપિન, બરિ બરિ દારૈ નૈન ॥૯૬॥
 વૃન્દાવન તરુ તરુ તરૈ, દરૈ નૈન મુખનીર ।
 ચિંતત ફિરૈ આવેમ બમ, સાવલ ગૌર શરીર ॥૯૭॥
 પગમ સમ્મિદાનંદ ધન, વૃન્દાવિપિન મુદેશ ।
 નભેં દગ્ધટ્ટું હોત નદિ માયા દાસ પ્રવેશ ॥૯૮॥
 શાગદ બો સત કોટિ મિલિ, દલપન હરૈ વિચાર ।
 વૃન્દાવન મુખ રંગ હૈ દગ્ધટ્ટું ન પારૈ પાગ ॥૯૯॥
 વૃન્દાવન આનંદ ધન, સખ તૈં કિતમ આદિ ।
 મોતે નીચ ન ઔર કોર, હૈનૈં પૈદોં તાદિ ॥૧૦૦॥
 શ્રવ બૈના આદૈશ ફલ, ચાલત દૈ મન માલિ ।
 તાદોં ગદ કૃપા બિના, ઔર ચનન દડુ નાદિ ॥૧૦૧॥
 કુવરિ દિગોરી નામ મૈ, કલ્યાણ ૬૬ વિન્યામ ।
 દગ્ધનિધિ મૃદુ ચિત્ત અતિ, તારૈ બદૈ નિય આસ ॥૧૦૨॥
 જિનહી વૃન્દાવિપિન હૈ, કૃપા તિનદિ હી દોષ ।
 વૃન્દાવન મેં તજદિ તૈ, ગ્દન પાવદે મોષ ॥૧૦૩॥

વૃન્દાવન સત રતન હી, માલા ગુહી બનાય ।
 બાલ બાગ બંધે લિખી, સોઈ પહિરૈ આય ॥૧૦૩॥
 વૃન્દાવન સુખ ગંગા હી, આશા બે ચિત હોય ।
 નિશિ દિન કંઠે ધરૈં ઘડૈ, છિન નહિં ટારૈં મોય ॥૧૦૪॥
 વૃન્દાવન સત બે ઠહૈ, સુનિહૈ નીકી ભાતિ ।
 નિશિ દિન તોહિ ઉર જગમગૈ, વૃન્દાવન હી કાતિ ॥૧૦૫॥
 વૃન્દાવન કો ચિંતવન, યહૈ દીય ઉર ખાર ।
 કોટિ જન્મ કે તમ અપહિં, કાટિ કરૈ ઉજિયાર ॥૧૦૬॥
 બસિકૈ વૃન્દાવિપિન મેં, ધતનૌ ખડૌં સયાન ।
 યુગલ ચરણ કે જનન બિન, નિમિષ ન દીજૈ જન ॥૧૦૭॥
 સહજ વિરાજત પદ રસ, વૃન્દાવન નિજ ધામ ।
 લલિતાદિક સખિયન સહિત, કીડત શ્યામાસ્થામ ॥૧૦૮॥
 પ્રેમ સિન્ધુ વૃન્દાવિપિન, બકૌં અન્ત ન આદિ ।
 જહા કલોલત રહત નિત, યુગલકિશોર અનાદિ ॥૧૦૯॥
 ન્યારૌં ચૌદહ લોક તૈ, વૃન્દાવન નિજ લૌન ।
 તહા ન કબહૂં લગત હ, મહા પ્રલય કી પૌન ॥૧૧૦॥
 મદિમા વૃન્દાવિપિન હી, કહિ ન સકત મમ જીહ ।
 બંધે રમતા હૈ સહસ, તિનહૂં કાદી લીહ ॥૧૧૧॥
 જતી મતિ મો પૈ કહા, શોભા નિધિ બનરાજ ।
 દીકૌં કૈ કબુ કહત હૌ, આવત નહિં ગિય લાજ ॥૧૧૨॥

મતિ પ્રમાણુ આદત દલૌ, સોજી દહત લખત ।
 સિંધુ અગમ જોદિ પાર નહિ, કેસે સીપ સમાત ॥૧૨૩॥
 યા મન કે અવલંબ હિત, ઠી-દાં આદિ ઉપાય ।
 વૃન્દાવન રસ દહન મેં, મતિ કબહુ ઉરઝાય ॥૧૨૪॥
 મોલહ સૈ મુવ છયાસિયા, પૂન્યો અગહન માસ ।
 યદ પ્રબન્ધ પૂરજી બયૌ, સુનત હોત અથ નાસ ॥૧૨૫॥
 દોદા વૃન્દાવિપિન કે, ઇકમત પોડશ આદિ ।
 જો આદત ગસ રીતિ રૂપ, છિન છિન મુવ અવગાદિ ॥૧૨૬॥

૩। ઇતિ શ્રીકૃતિદ્રુવદાસજીકૃત શ્રીવૃન્દાવન સત લીલા કી
 જય જય શ્રીકૃતિદરિવંશ ॥



આગ્યશ્વપદનિર્માતા ચાચા શ્રીવૃન્દાવનદાસજી કૃત

॥ અથ કરુણા વેલી ॥

વ્યાસમુવન ૧ કરુણા અગ દરૌ । મો સિર ચારુ ચરન રજ ધરૌ ॥
 શ્રીકૃતિ રૂપ કૃપા કી આસા । યાચત કર ધગિ બાડૌ દુસાસા ॥
 કરુણાનિધિ તુમ નામ દદાવે । મોમો દીન ચગ્ગ ગતિ પાવે ॥
 પ્રથમ દરૌ કરુણા ગુરારજ । જિનકોં ચગ્ગ મદે કી લાજ ॥
 પુનિ યે ગમિદ સુદિ નિદારૌ । મો પે કરુણા ગદા રિચારૌ ॥
 કરુણા દયા સાધુ ગુરુ દરિ દે । મો લગ તાપ નિમિત્ત મગ્ગ દરિ દે ॥
 શ્રી ગુરુ સાધુ જનદિ અપનાવે । તેઈ જન દરિ કે મન બાવે ॥

जिनको विरह विहित जग भाई । अमय करें पकरें नवाही ॥
 हे हरिश्चन्द्रनिधि करुणा दीजै । अम निज शरणा रावरी दीजै ॥
 ऐसी सदा विचारै यित दी । हों तब कृपा मनावत नित दी ॥
 विनती सुनौ साधु मन गंजन । तुम यह कमल मकल दुष्मंगजन ॥
 अहो नाथ तुम दीनदयाला । अपने को दीजै प्रतिपाला ॥
 मो हरनी नहिं यित मे घरिये । अपनी कृपा ओर ही दरिये ॥
 जे भम अमृगुण ग्रहण करैजे । अपने विरह आप विसरैजे ॥
 हरिश्चन्द्रभय यह विरह जगद्वै । जे हम से दीनन अपनावै ॥
 अहो कृष्ण यह रति अम पाछे । मुगल केहि हल प्रीति गाछे ॥
 देहु कृष्ण यह भक्ति सुधन है । तुम दासन के हिय हृद पनहै ॥
 भक्तन की अभिलाषा दायक । हो राधापति तुम सज सायक ॥
 देहु देहु करुणा कर यह रति । तुम समान को त्रिभुवन में पति ॥
 हे मन्मथि सीस दीजै यह । तुम हो प्रभु दया करुणा हृद ॥
 करै अनुग्रह अपने जन को । जैसे गड आहत वञ्छन को ॥
 यो हरि देहु भक्ति वगदानै । नारी रति हों जगत अपानै ॥
 हे गोकुलविधु वदन दिभावै । नैन यकौन सुधा पिवावै ॥
 निरभ सखल हूँ हूँ हूँ मेरे । पावन गुन गाछे मैं तेरे ॥
 अहो अहो त्रिभुवन के स्वामी । तुम हो सज के अन्तर्यामी ॥
 पातै अपनी ओर निहारै । मेरी दाय न यित मे धारै ॥
 मिलन आस ही जेलनि पाछे । ऐसी करै ज्यु अक्षन न नार्थ ॥
 तुम यह दर्शन पुरख दल है । है सत संगत सौख्य जल है ॥

યહ અભિલાષ રહત મન નિત દૈ । પ્રાણનાથ મમ આગત ચિત દૈ ॥
 તુમ સમગ્ય દૈ દીન મદાર્જ । સગ્ય ગદે છી તુમ બડાર્જ ॥
 હો વગ દુનદ નદ ફુસારે । કષ્ણ જેહી દગ આગે પ્યારે ॥
 નહિ જનૈ દિદિ છિન દગમૈગે । તપત દિયે કમ સુખ બગમૈગે ॥
 કાનન મધન રીચિમન માહી । નિગખૌ પ્રિયા અ શગવાહી ॥
 પૂરિત નેહ વચન સુનિ હૈ જવ । નવલુ લાભ ફલ હગિ ગનિહૈ તવ ॥
 હે જુન્દાવનચદ રિનોદી । દે દાન દૈ ઝોટત ગોદી ॥
 બાત તુમારી જીવન મેરી । સમ વિધિ પૂજૌ આશ મવેરી ॥
 પરમ દમા કે મહિર તુમ હૌ । યાતૈ શરણુ ગદત હૈ હમ હૌ ॥
 રાખૌ નાથ કૃપા કરિ નેરૈ । અહો કૃપાનિધિ હમ નિત ટેરૈ ॥
 તુમ શુભુ ગદર કમલ દલ લોચન । અપને જન કે મમ દુખ મોચન ॥
 હે સુન્દર વગ તુમ હૈ નગધગ । દીજૈ અમય દાન સિગ કર વગ ॥
 સુનૌ કાન દે વિનતી હો હગિ । તુમહિં સુખજી બહુત ખાતિ ટર ॥
 અપને છી સુધિ આપુ ન લીજૈ । જેસી કહા નિહંગતા કીજૈ ॥
 ઝોગ બાત નહિ ચિતહિ પ્રિયારૈ । કૃપા દષ્ટિ મમ ઝોગ નિહારૈ ॥
 યહિ વિધિ નાથ નુમહારૈ જસ હૈ । જો વિસરૈ તૌ કહ મમ વસ હૈ ॥
 અહો કૃષ્ણ જો દાસ કહાવૈ । સા ઝો જગત માહિ દુખ પાવૈ ॥
 યહ તૌ બડી ત્રાસ આવત હૈ । કૃપા અવધિ કમે તોહિ બાવત હૈ ॥
 કવદુ ન કરૌ દયાલ જેસી અબ । આહત શગ્યુ તુમહારી હમ સમ ॥
 અપને જન છી લજ્જા ગહિવૈ । બહુત ન આવત હૈ પ્રભુ કહિવૈ ॥
 જાકૌ અનુગ મો ન સુચિ લેહી । વહ ન કહાવૈ નાથ સનેહી ॥

અગણિત દુન્દ દેહ કે પથ હો । તુમ વિન ઠારન કે સમરથ હો ॥
 વાગ વાર હરિ હમ મહ વાયો । તુમ પદ છાડિ અન્ત નહિ રાયો ॥
 એસી સુમતિ દેહુ કરણાનિધિ । કહૌ પ્રાણપતિ મિલિ હૌ દિહિ વિધિ ॥
 કળ ઉપજોગી યહ મન માહી । ગખોગે મોહિ ચરણન છાહી ॥
 મેં તૌ નિશ્ચય યહો કરી હૌ । તુમ ઘો જિય મેં કહા ધરી હૌ ॥
 ખોટૌ ખરૌ પરી જો સરની । કહા દેખવે તાકી કરની ॥
 વિરદ તુમારૌ વિદિત રસાલા । અમ તૌ કરે બનૌ પ્રતિપાલા ॥
 કમ એહૌ ઇન નૈનનિ આગે । કમ થે રૂપ તિહારે પાગે ।
 હૌ ગધાપતિ તુમ પદ દરસૌ । સુયશ રાવરૌ ગાવત મરસૌ ॥
 હે અભિગમ શ્યામ વન વાસી । કવ પરસૌ વે પદ સુખ ગસી ॥
 અખ હર આશા અપિક ભઈ હૌ । તુમ ઘો મન મે કહા ઠઈ હૌ ॥
 દેહુ ન નાથ અનાહની મોસૌ । અપની વિથા મુનાઈ તોસૌ ॥
 ભલી લગૌ મો કરિ હૌ પ્રજપતિ । મેરૌ તૌ તુમહી હૌ હગિ ગતિ ॥
 અહો જુગપ વિધુ મો દગ ભૂપન । કળ સૌચોગે પ્રેમ પિધૂપન ॥
 કોણુક મિથુન સકલ સુખ એના । બન ઘન અમત નિહારૌ નૈના ॥
 નિમૂત કુંગતૌ નિકસૌ જળ હી । મેરી દષ્ટિ પડૌગે તમ હી ॥
 કમ હૌ હૌ વહ મ ગલ વિગિયા । આવત સુગય અ શ જુજ ધગિયા ॥
 અમ કટુ કહત પરસ્પર વાની । સૌ તૌ પગ્મ નેહ રસ સાની ॥
 તાહિ સુનત વદલૌ ગતિ તન કી । પૂજૌ અભિવાપા સજ મન કી ॥
 હે સુખરાસિ દાસ્ય અમ પાજી । હૌ પ્રભુ તુમ પદ કૃપા મનાજી ॥
 કાનન કમની કેલિ વિલોકૌ । નિરખત પવક ધરનિ ગતિ રોકૌ ॥

જેસા બાનક બન હૈ કળ હૈ । કરુણામય વિનતી સુન અબહૈ ॥
 અતિ અગિરામ સ્થામ સુખદાતા । તુમ પતિતન પાવન વિખ્યાતા ॥
 અહો અકિંચન જન મન બાવન । ભક્તન ઉર આનન્દ બદાવન ॥
 દાસન ભીગ સદા લાગત દો । અબ કહુ નાથ દૂર ભાગત દો ॥
 જો તુમ કહો કર્મ તુમ ખોટ । તો તુમ હગિ દિહિ વિધિ દો મોટ ॥
 કર્મન કે બસ તુમ જન હોઈ । કહો તુમ ભજન કરૈ ક્યો કોઈ ॥
 જો તુમ બડે કર્મ હંદરાવૌ । તો તુમ ક્યો જગ ઈશ કહાવૌ ॥
 જ કે દડ જગત ચે નાચૈ । સોઈ ધની કહાવૈ સાચૈ ॥
 જો હરિદ્વસ કર્મ બસ કહિયૈ । તો પ્રભુ તુમહિં ન જેસી ચહિયૈ ॥
 નીતિ અનીતિ આપડી દેખૌ । હમકો યાકો બડૌ પરેખૌ ॥
 ઉત્તમ કર્મન કર જો તગિયૈ । તો તુમકો કાહે અનુસગિયૈ ॥
 ચે હક છાડિ દેઉ અમ હગિ કિન । કર્મન લાગ વહાવૌ પ્રભુ જિન ॥
 માડુ સમા કે તુમ હી મડન । દરૌ દટાક્ષ કર્મ હોય ખડન ॥
 હો વ્રજનાથ સાથ દેઉ મેરૌ । ખંચૌ પકગિ વાહ, દૌ તેરૌ ॥
 દૌ જુલૌ સસાર વિપવ વન । ભ્રમત દિરૌ પાજૌ પીડા તન ॥
 તુમ સૌ દયાલ દેખ ઊટકારૌ । કહો કૃષ્ણ કો પાગ લગારૌ ॥
 પદ ગતિ દેખ જો ન કર્મકૌ મન । તો હગિ કહા કહાયે તો જન ॥
 અપને કૌ સ્વામી જો તજિ હૈ । લેડુ મિચાર કૌન હરિ લજિ હૈ ॥
 જો અમતિન કી ગતિ ના કગિ હૈ । કહો કૃષ્ણ કો ફોટ પમગિ હૈ ॥
 અબ ચિતવૌ ગંચક સુદષ્ટિ કૌ । અગિય જીવન તો જાય નાથ તૌ ॥
 જાકો જાગન કહો કર્મકૌ હૈ । રચા દયા હદય ધીરૌ હૈ ॥

તુમ તૌ દીનદયાલ પ્રભુ અતિ । હૈં હિત રૂપ ચરણ પાછૌં રતિ ॥
 તુમ હરિ ઉર આનન્દ ભરન હૌ । ભક્તન કી આરતિ જુ હરન હૌ ॥
 અખ ન ગહર કીજૈ ઇત દેખૌ । જૈમૈ ટરૈ કર્મ કી રેખૌ ॥
 હૌ દુખ દમન રસિક રાધાપતિ । ભક્તિ દાન કીજૈ ઉદાર મતિ ॥
 દાતા દેત કષ્ટ નહિં રાખૈ । શ્રી ગુરુ સંત ભાગવત બાખૈ ॥
 રેડુ રેડુ પદ મેવ સદાઈ । તુમ દાની, હૈં કૃપણ મહાઈ ॥
 મળ જગ માહિ વિદિત યહ ગાથા । જો અનાથ સૌ કિયે સનાથા ॥
 તાતૈં વિરદ પુરાતન ગહિયૈ । તુમ સૌ બાર બાર હરિ કહિયૈ ॥
 વૃન્દાવન હિત રૂપ ગવરૈ । કમ્પ પગિ હૌ મમ દૃષ્ટિ સાવરૈ ॥
 રાધારસિક કહાવૌ નાગર । ભક્તન કી ગતિ કરણા સાગર ॥
 બગન સુનાઈ વેલી કરના । અખ તૌ નાથ કૃપા દિસ કરના ॥
 હૈં નહિં લોક ભમન તૈં ડરૌઈ । છક બાત કૌ સંશય કરૌઈ ॥
 વિસરૌ જિન ઉગ્તે ભગવંત । મુગ્ધા વસ તન ધરૌ અનંત ॥
 જો કાક જાડી સરની આવૈ । યદપિ ઔગુણી દંડ ન પાવૈ ॥
 અહો શરણાગતિ પાલક ગિરિધર । અખ મો લાજ રાખ સુન્દરવર ॥
 સતી ચક્રી સર અગ્નિ ન જારૈ । કહૌ નાથ વહ કહા યુગરૈ ॥
 ખામે કૌ જલ નદી ન દેઈ । તૌ હરિ કહૌ કૌન સુધિ લેઈ ॥
 પ્રકુલિત કમલ રોપ રવિ દાનૈ । યહ દુખ વાગ્નિ કહા વખાનૈ ॥
 અન્ન ચક્રોરન તૈં દુર રહિ હૈ । હૌ હરિ વ્યથા કહા વહ કહિ હૈ ॥
 દીપક મન્દિર હરૈ ન તમ કૌ । તૌ પ્રભુ તુમ વિસરાવૌ હમ કૌ ॥
 જો જલ કાક ન તરૈ ચુસાઈ તર વર વૈદન દેય ન ઠાઈ ॥

સુના પ્રાણપતિ તો દેહ વમ દે । જો પૈ જન મન ધર્યો વિરમે દે ॥
 યે જન તર્જે તો અચરજ નાદો । પૈ ન સંભરે પ્રભુ તુમ માંદો ॥
 અરો કૃપા અમ કરો ન જેસો । જૈસી તુમ જી વિચારો તૈસી ॥
 નૈક સુદિષ્ટિ દગે મમ ઓગી । દારજ દોષ બાત વદ ધોરી ॥
 હે બચીગ મીગ મતિ પન કે । ગ્રહ સદા આપને જન કે ॥
 ત્રાહિમાન શગ્ગાગતિ આપો । ત્યામ ન બચિન જી બૃત્ય દેહો ॥
 સુના દાન દે દાનનવાસી । અમ જિન જગત દરાયો દારી ॥
 તુમ જી જ્ઞાન પન ત્રિભુવન ઈમો । અભય દર કમન ધરો મમ સીમો ॥
 મે વિનતી પ્રભુ દરી ધનેરી । દેહી ગચિ દૈની પ્રેમ પહેરી ॥
 સુનકે નાય ધરી મન માહી । જૈતૈ પર્યો રદો પદ છાટી ॥
 તુમ સાયક દાયક સખરી મુખ । દેશાંબો દોડે ન સુન્દર મુખ ॥
 પાણે વદ પ્રમાદ શોભાધર । દૂતપતિ નન્દન દો ગધાવર ॥

દોહા—શ્રીદશવિંશ પ્રતાપ તૈ, વરણી દરણા વેલિ ।

વૃન્દાવન ગધાધની, દરસારો રસ કેલિ ॥

સંવન સૈ દશ આકાશ, ચાર વરણ ઉપરંત ।

કૃષ્ણદરસ અભિમાય હિત કથી સુનો દરિ સંત ॥

જોક વદી પાયે સુ દિન, બસિ હિત રૂપ વિચાર ।

દરિ શુર સાધુ કૃપા કરી, રંગ્યો વદ મુખ સાર ॥

દીનજન્મુ દરણા અવધિ બક્ષત વત્સલ વદ નામ ।

વૃન્દાવન હિત લેકે સુધિ, બિરદ બદે જયો શ્યામ ॥

ધૃતિ શ્રીકૃષ્ણા વેળી સંપૂર્ણ દી જય જય શ્રીહિતદશવિંશ ॥

॥ નેહી શ્રીહિત નાગરીદાસજી કૃત શ્રીહિતાષ્ટક પ્રારબ્ધ ॥

કરખા છન્દ ॥

રસિક હરિવંશ સર્વંશ શ્રીરાધિકા રાધિકા સર્વંશ હરિવંશ
વંશી । હરિવંશ ગુરુ શિષ્ય હરિવંશ પ્રેમાવલી હરિવંશ ધન ધર્મ
રાધા પ્રસંશી ॥ રાધિકા દેહ હરિવંશ મન રાધિકા રાધિકા હરિવંશ
મમ શ્રુતિવતંશી । રસિક જન મનનિ આભરણ હરિવંશ હિત
હરિવંશ આભરણ કલ હંસ હંસી ॥૧॥

રસિક હરિવંશ રસલાડિલી લાલ વસ લસત વન અંગ છક
રંગ રંગી । શ્રીરાધિકાવલ્લભો વલ્લરી પ્રાણ ધન સુધન નિરખત રહો
સુરત રંગી ॥ લલિત સખી કુંજ સુખ પુંજ વરપત યુગલ લલિત
મન ફક તન ચારિ ગૌરાંગી । રૂપ લાવણ્ય અનુરાગ અંગ માધુરી
કેલિ કલ કલિત તરલિત તરંગી ॥૨॥

રસિક હરિવંશ મન લાડિલી લાલ તન લલિત અનુરાગ વધુ
કરન લીને । ખામ જુજ લોલ દક્ષિણ જુજ લાડિલી લલિત ગતિ
ચલત મલ્લકત પ્રવીને ॥ રસદ વૃન્દાવિપિન મોદ મંકરંદ સદ માધુરી
ખ્યાય પીવત નીને । યુગલ ધક રંગ ચતુરંગ પુલિન રચલી યમુના
કલ કુંજ રતિ રંગ બીને ॥૩॥

રસિક હરિવંશ મન ફક તન ચારિ હૈ તૌ વેણુ વાણી વિમલ
મોલ લીની । વાંહો છદ્દો છાંહ કરિ છદ્દો પદરજ શિરધર અખિયાં
છદ્દો છડીં છવિ રહોં અધીની ॥ અલ્પ પલ ઝોટ શત કલ્પ વીતત
બિન્હોં દિવ્ય કૈશોર હદિ દષ્ટિ દીની । નાગરી નવ રંગ નિકુંજ

હિત દૃષ્ય તરતીર છવિ બીર અંગનિ નવીની ॥૪૮॥

રૂપહદ લાહિલી લાલ લાવણ્ય હદ નેહ હદ હરિવંશ વિપિન
આસક્તિ હદ । વય સંધિ મુક વર્ણ્ય અન વર્ણ્ય વરણ્યત ખનન ન
તરણ્ય સૈસવ વિભા વિલસે સૌંદર્ય સદ ॥ નયનામૃત મંજરી
મૃદુલ અલિ રાજ યુગ યુગલ મુક રંગ રંગ પુલિન ઠાલિંદિ નદ ।
નાગિરી નવ રંગ નિકુંજ હિત દૃષ્ય તરુ પત્ર ફલફલ સર્વાંગ
ગૌરાગિ પદ ॥૫૦॥

યુગલ રસ સિંધુ સેવે પુલિન રસ સિંધુ કેાં નલિન હરિવંશ
આનંદ લહરી । લલિત વાણી વિમલ પાર અર વારનાહિ થાલ કહુ
નાહિ અતિ નિપટ ગહરી ॥ અનન્ય જન મીન આધીન હૃદયે
અનુસરે પ્રેમ અંજન દિયે દૃષ્ટિ હહરી । નાગિરી નવરંગ નિકુંજ
હિત દૃષ્ય તરુ પલક પલ લલક પરી રૂપ હહરી ॥૫૧॥

રસિક હરિવંશ વર વિમલ કલ દૃષ્ય તરુ પ્રેમ ફલ ફલિત
અનુગમ વાની । કેલિ કલ ફલિત અતિ લલિત આમોદ વન
અવણ્ય પુટ પિવત નવ રંગ રાની ॥ રસિક મંડલ વિમલ ઝૂંમિકા
ઝૂંમિ રહે શ્રીરાધિકાવલ્લભ અમાન દાની । પરમહંસ આધાર રમ
સાર ધારા અવત બજન વક્રાંત જિત મન સમાની ॥૫૨॥

રસિક રસ સગસ સર હંસ હરિવંશ જુ કેલિ મુક્તા યુગત
મન નયન દીને । પ્રાણુન કે પ્રાણુ સુ મેરે પ્રાણુ જીવન સુધન દૃષ્ટિ
પ્રતિ દૃષ્ટિ આલિંગન નનીને ॥ સદલ સુખ ધામ વિશ્રામ વન
નિલમિ હૃસિ યમુના, કલ ફલ અંગ અરગજન બીને ।

दि य आभरण वसन ललित अंग माधुरी त्रेम पर्यंक अंकनि
मे सीने ॥८॥

धति श्रीगसिद्ध यू३।भण्डि श्रीमद्वित नागरीदासजी कृताष्टक संपूर्णम्

अथ श्रीमद्वित चन्द्रलालजी महाराज कृत

गसिद्ध नामावलीध्वनि लिप्यते ॥

जय जय राधावल्लभ गुरु हरिवंश । गौरीदा राधावल्लभ
द्वित हरिवंश ॥ छपीदा राधावल्लभ धारौ हरिवंश । रसीदा
राधावल्लभ छवन हरिवंश ॥ श्री वृन्दावन रानी राधानक्षत्र नृपति
प्रेमश । द्वितके वस यश गस हर धरिये हरिये श्रुति अवतंश ।
वंशीवट यमुना तट धीर समीर पुलिन सुभ पुन । विहरत रग
गौरीदे द्वितसे भुव सेवा कुन ॥ ललित विशाखा यपक यित्रा
तुंगविद्या रंगेरी । छंदुमेधा सुदेरी सज्जी मणी यूथ द्वित सेरी ॥
श्रीवनचन्द्र श्रीकृष्णचन्द्र श्रीगोपीनाथ श्रीमोहन । नाद निंद परिवार
रंगीदा द्वित से नित छवि जेहन ॥ नरवाहन ध्रुवदास व्यास
श्रीसेवक नागरीदास । वीर्य मोहन नरल छपीये द्वित यरण्युन ही
आस ॥ छन्दास नाहरमय गोविंद जयमल सुनन सुमन ।
भगमे न हरिव शदाभ परमानन्द के द्वित हर प्रान ॥ गंगा यमुना
कर्माही अर भागमनी ये आर् । द्वित के यरण्यु शरण्यु हूँ के हन
हंपति स पति पाछ ॥ दास यतुर्बुन छन्दस्वामी अर प्रमोष
हृन्दास । रर भीनाल हमोहर पुँकरि सुन्दर द्वित हर आन ॥
हरीदास तुलानार और यशवंत भडा भति नागर । रसिकदास

हरिभूषु होइ ये प्रेम भक्ति के सागर ॥ मोहन माधुरीदास
 द्वारिकादास परम अनुरागी । श्यामशाह तूभर कुच हित सो दंपति
 मे' भति पागी ॥ श्रीद्वित शरथु भये अरु अथ हँ ईरहु जे जन
 दूँ हँ । प्रेम भक्ति उर भाव आन सो वृन्दावन निधि पै हँ ॥
 रसिक मंडली मे' या तन कै नीके दंग लगावै । दंपति यश गावै
 हयोंवै हित सो रीज रिझावै ॥ देवन हो दुर्लभ नगदेखी सो तँ
 सहजहि पाछ । मन भाछ निधि पाछ मो क्यो जन भूज विसरार्छ ॥
 एक अछंता भमता ये हँ जग मे' अति दुषदाछ । ये जव श्रीगु
 ही जोर लगै तथ होत परम सुषदाछ ॥ मात तात सुत फर देद
 मे' मत अरु भतिभदा । श्रीद्वित किशोर हो हँ अठार तू सधि
 श्रीवृन्दावन यन्दा ॥१॥

धति श्रीद्वित रसिक नामावली संपूर्णम् ॥

अथ श्रीमद्वितकुचकमलद्विवाकर श्रीराधावधमनाल के सर्वाधिकारी
 श्रीमद्गोस्वामी अनन्त श्रीयुक्त किशोरीलालछ महाराज के
 जन्मोत्सव कैमंगवधार्छ लिख्यते ॥ मंगव ॥

मंगल श्रीहरिवंश नाम शुभु गाछये । पिय प्यारी हो हेतु
 सुताहि लडाछये ॥ विपिन अलौकिक धाम लता गूढ राजहो ।
 अंघनि दंपति लसत सुरतिरथु सोनहो ॥ सोनहो जहा सुरति
 हीड । श्रीकिशोरी लावरी । प्रेम विह्वल गात कमनी उमंग हित
 कर मालगी ॥ गंध भग छवि किरणु प्रगगी सभिनु हग भधि छाछये ।
 मंगल श्रीहरिवंश नाम शुभु गाछये ॥१॥

જય જય શ્રીહિત વ્યાસ સુવન કરુણા ભરે । રસિક મુકુટ
 મણિ લાલ અમય પ્રણતનુ કરે ॥ શ્રીરાધાવલ્લભ લાલ સુવસ
 પ્રથાપ્રયો । પિય ખારી ઉપદેશ નિદેશ લખાપ્રયો ॥ લખાપ્રયો હિત
 કેલિ નિજુકી કુંજ નિમૃત સુહાવની । રસિક જન મન મોદ દાખનિ
 નવલ રચિ ઉપજાવની ॥ જળ ઘટત નિમ્ન ધર્મ જાનો દરિ અનુમદ
 અવતરે । જય જય શ્રીહિત વ્યાસ સુવન કરુણા ભરે ॥૨॥

જય જય શ્રીહરિવંશ વિપિન ચૂડામની । ઉપકારક અવતંશ
 રસિક જીવન ધની ॥ કોમલ પરમ કૃપાલ સુગલ હિત રંગરી । દુઃ
 ચિતવન રસભરી મુનિર્મલ અંગરી ॥ અંગ નિર્મલ હૃદય શીતલ
 અધમ જન કલિ દારણે । ધરૂયો અદ્ભુત રૂપ મિત્ર વિવિત્ર ચરણ
 ઉદારણે ॥ શ્રીકૃષ્ણારીલાલ હિત વપુ નામ પાવન મુખ બની ।
 જય જય શ્રીહરિવંશ વિપિન ચૂડામની ॥૩॥

જય જય જનની કૃષ્ણ સદૃશ હિત રસ ભરી । પ્રગટયો કુમર
 અનૂપ લગી આનંદ ઝરી ॥ તિથિ આડે શુદ્ધિ ભાદ્ર મહરત શુભ
 ધરી । વૃન્દાવન હિત ધામ રહમ વર્ષો કરી ॥ ઠરી હિત રસ રહસ
 વર્ષો નૃત્ય સુવતી જન કરે । મંગલ કુલાહલ અગર મધિ વાદ્યંત્ર
 ધ્વનિ હિત હિત ઝરે ॥ પદ્મ નિગમન ઋચા વિપ્ર સુ ચૌક સથિયા
 શુભ ધરી । જય જય જનની કૃષ્ણ સદૃશ હિત રસ ભરી ॥૪॥

જય જય શ્રીહરિલાલ ભવન ભૂપલુ મહા । પ્રગટે વિજય
 સ્વરૂપ અનૂપમ છવિ અહા ॥ કોવિદ રસિક રસય હૃદય હિત મિત
 બહે । મુખ અંબુજ દગ ભૂંગ પિવત રસ ચિત રહે ॥ રહે હિત
 ચિત ચિત રસ ભર શબ્દ જય જય જોલહી । જનની મનોહરિ
 ગોદ બાલક લખિ મુદિત મન ડોલહી ॥ કીરતિ કુમરિ કે જન્મ

દિન પ્રદેશી પરમ આનંદ લહા । જય જય શ્રીહિતલાલ મન
બુધજી મહા । પા ।

જય જય શ્રીહિત રૂપ દિશોરી લાલરી । દંપતિ વધુ વક્તવ્ય
રસિક જન પાલરી ॥ હિત અલિ આગા પાય સુયશ મ્મ વિસ્તરે ।
શરણાગતિ પ્રતિપાલ અભય કર વર ધરૂયો ॥ ધરૂયો કર વર જાસુ
કે શિર ગૃથિ કર્મન કી દટી । અલિભાવ બાવુક બહુ દિયે સુખ ભરત
હિય રવિજા તટી । પાદાબજ પગશત મરસ તન, મન પરત હિત
છવિ જાલરી । જય જય શ્રીહિત રૂપ દિશોરી લાલરી ॥૬॥

જય જય શ્રીહિતલાલ સુવન નિર્ભય દિયો । શ્રીગદાવલ્લભ
લાલ લડાઈો હિત પિયો ॥ અધિકારી, હિત કોશ, મુદ્દલ વચનાવલી ।
હૈંસત હરત મન મનહુ ઝરત સુમનાવલી ॥ સુમનાવલી મનુ ઝરત
શ્રીહરિવંશ હિત રટના લગી । રહત કુંજન સુખ મને જહા હિત
અલી ગસ મે પગી ॥ કુગિલ કામી વિપય ગત સહ દાસ પ્રીતમ
ગહિ લિયો । જય જય શ્રીહરિલાલ સુવન નિર્ભય દિયો । જા ।

(વધાર્ધ)

બધાર્ધ આજ બાજત રંગ કરી । બાદો સુદો મહા તિથિ
આઠે જન્મે શુભગ ધરી ॥ ગાવત વધુ સોહિલે ગયિ રયિ માનહુ
મેઘ ઝરી । ધગત સવાસિનિ કલશ સાચિયે નેગિન નેગ અરી ।
મંગલ સુખી ગતિન સો નિર્તત તાનનિ લેત ખરી । બજત
મુદગ ધિક્કિટ ધિક્કિટકિટ પરનન કગ્ગ દરી । શુષ્કિયન બીગ દ્વાગ શુભ
ગાવત બિગ્દનિ સુખ હયરી ॥ વિપ્રનિ ત્રાયા પઢાય વેદ ધ્વનિ નામ
કરણ વિતરી । શ્રીયુત નામ દિશોરીલાલ હિત વંશી બેલિ ફરી ॥
દગિહૈં ધર્મ પ્રચુર પુહમી મેં જગ જન શલ હરી । રાધાવલ્લભવાય

લડેહૈં ઠણ સુદૃષ્ટિ કરી ॥ દંપતિ હિત અવતાર રસિક રસિકન
જાનિ પરી । હિત પ્રીતમ હરિલાલ સુવન મુખ નિરખત પલ
ન ઠરી ॥૧॥

વિમુખ મુખ ભંજિકૈ રસિક મન રંજિકૈ જયતિ હરિલાલ
સુત પરમ નિર્મલ હિયૌ । શ્રી રાધિકાચરણ રસ ઇષ્ટ બલ પાયકૈ
પ્રણુત જન જાન, હૈ અભય જગતૈ કિયૌ ॥ નામ સુદિ મિષ્ટ હરિવંશ
ઉર ધ્યાત ધર કુંજ કીડ, મગન લગન હિત રસ પિયૌ । જયતિ જય
જયતિ શ્રીલાલ કૈશોર જૂ નવેલિ હિત શરણ લખિ પાદ
જ્યાવત જિયૌ ॥૨॥

સરસ વધાર્થ રસનિધિ માર્ધ । જયતિ કિશોરીલાલ દયાનિધિ
પ્રકટે સખ મુખદાર્ધ ॥ શ્રી હરિવંશ વંશ કલ્પ દ્રુમ કૂલ્યૌ ફૂલ
મહાર્ધ । મહાકિ ઉડી સૂદૃષ્ટી રસ જગ કી અહા અહા ધ્વનિ રહી છાર્ધ ॥
ભાદોં શુભલ અહમી પ્રકટે શ્રીરાધા કાન્તિ સવાર્ધ । શ્રી હિત શરણ
મહા મંગલ કી કણ્ઠક પ્રસાદી પાર્ધ ॥૩॥

છતિ વધાર્ધ સમાપ્તમ્ ॥



અથ શ્રીહિતાવતાર ગોસ્વામી શ્રીકિશોરીલાલાત્મજ
શ્રીમદ્ગોસ્વામી અનન્ત શ્રીયુત્ શ્રીહિતરૂપલાલજી મહારાજ
શ્રીમન્દિર અધિકારીજી કી જન્મોત્તમ મંગલવધાર્ધ ॥

જય જય શ્રીહિત અલિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૌ ।
શ્રીરાધાવલ્લભ લાલ લડાવત રસ પગૌ ॥ શ્રીરૂપલાલ દિગ બોલિ
કુંજ, હિત ચો કહી । પુનિ પ્રકટૌ જગ માહિ સરસતા ના રહી ॥
પદી આગા પાયકૈં શુભ ધરી શુભ દિન જન બયૌ । શ્રીહિત

કિશોરીલાલજી કે પ્રકટ મંગલ હૈ ગયો ॥ શ્રીરૂપલાલ મુદાવનૌ
શ્રીરાધિકા હિત રંગ ગંગૌ । જય જય શ્રીહિત આલિ અંશ પ્રકટ
જગ જગમગૌ ॥૧॥

જય જય રસે હી ખેલિ કેલિ પ્રિયા લાય હી । ફૂલી બહુરિ
બસંત રસિકતા ખ્યાલ હી ॥ મરસ સુગંધ અપાર ગસિક ચિત
આલિ બનૌ । મડરાવત દિન રૈન સુવશ રસ મુખ બનૌ ॥ શ્રીરૂપલાલ
રૂપાલ હી અખ પ્રના પુનિ નિસ્તૃત મર્ધ । સરસ રસ દૌ મિન્ધુ
કિમડ, ધૌ દહિનતા જગ મો ગઈ ॥ જિતે નીરસ દરશ દીન્હૌ
સરસતા કે હિંગ લગૌ । જય જય શ્રીહિત આલિ અંશ પ્રકટ
જગ જગમગૌ ॥૨॥

જય જય હિત દૌ રૂપલાલ મન મોહના । સુન્દર સુખદ સુખને
મસીલા મોહના ॥ ટહલ ખવાસી ચોગ્ય સદાયક જાનિકૌ । હિત
આલિ પગ્મ પ્રસન્ન બર્ધનિજ માનિકૌ ॥ જિયૌ આશિષ દેત સજની
સખૌ ઝવિ પૈ વલિ ગઈ । લાલ નયનનિ દિયૌ કમરા બાલ દાતી
દૌ દઈ ॥ યુગલ દીપ્ત નિહાર બેગહિ કવી કલ્મષિ સખ મગૌ । જય
જય શ્રી હિત આલિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૌ ॥૩॥

જય જય શ્રી રૂપલાલ મુખદૈન રૂપા દૌ દીજિયૌ । શ્રીવૃન્દાવન
હિત ફેરિ જગત દૌ દીજિયૌ ॥ ખૂડ, ત યા ભવસિંધુ ઉવારૌ જીવ દૌ ।
દગશાવૌ માધુર્ય સરસ રસ સૌંદ દૌ ॥ આય પ્રકટે સરસ પરિકર
બેગ અખ પ્રકટામૈ । શ્રી રાધિકા વર લાલ કે નવ નિત્ય કોતુક
ગામૈ ॥ હિત શરણુ કી વિનય નિત નવ બાવ વૃત્તો હિય જગૌ ।
જય જય શ્રી હિત આનિ અંશ પ્રકટ જગ જગમગૌ ॥૪॥

अष्टयाम की सेवा के पद संक्षेप से

(भंगला समय) राग बैराग ।

प्रथम श्री सेवक पद सिर नाज ।

ठरौ कृपा श्री दामोदर मोधि श्रीहरिवंश अरखु रति पाजि ॥

गुणु गंभीर व्यासनन्दनजु के हुव प्रसाद सुयश रस गाजि ।

नागरीदास के हुमझी सदायक रसिक अनन्य नृपति मन भाजि ॥१

जयति जगदीश पश जगमगत जगत गुरु-

जगत वंदित सु हरिवंश वानी ।

मधुर केमल सुपद प्रीति आनन्द रस-

प्रेम विस्तरित हरिवंश वानी ॥

रसिक रस भक्त श्रुति सुनत पीअंत रस-

रसन गाअंत हरिवंश वानी ।

छहत हरिवंश हरिवंश हरिवंश हित-

जयत हरिवंश हरिवंश वानी ॥२॥

जयति वृषभानुज कुँवरि राधे ।

सख्यदानन्द धन रसिक शिर मार वर सकल वांछित सदा रहत

साधे ॥ निगम आगम स्मृती रहै अहु भाषि जहाँ छहि नहाँ

सकत गुणु गणु अगाधे । जय श्रीरघुनाथ हित पर करहु-करखु

प्रिये देहु वृन्दाविधि नित अवाधे ॥३॥

જય જય જય ગધિકે પદ સંતત અરાધિકે-

ગાધિકે શુક સનક શેષ નારદાદિ સેની ।

વૃન્દાવન વિષ્ણુલ ધામ ગતી નવ નૃપતિ સ્થામ-

અખિલ લોક પારદાદિ લલિતાદિક નેમી ॥

લીલા દર વિરિધિ બાઝ વરપત રમ અમિત ચામ-

કમલ પ્રાપ્ત ગુણ પગલ લાલન અલિ ખેતી ।

યુગ વર પદ કંજ આસ વાઙિત હિત કૃષ્ણ દામ-

કુવ ઉદાર સ્વામિનિ મમ સુન્દર ગુરુ દેની ॥૪॥

રાધિકા સમ નાગિગી પ્રતીન કેા નતીન સખી-

રૂપ ગુણ સુહાગ બાગ આગરી ન નારિ ।

વરણુ ઝોપ નામ ભૂમિ દેવલોક છી કુમારિ-

ધ્યારી જુ કે રૌમ હોપર ડારી સખ વારિ ॥

આનંદકન્દ નન્દનંદન જાકે રસ રંગ રચૌ-

અગ ભરિ સુધંગ નયૈ માનત હંસિ હારિ ।

જાકે બ્રહ્મ ગર્વ બરે રસિક વ્યાસ સે ન ડરે-

કર્મ ધર્મ લોક લેદ છાડિ, સુકિત ચારિ ॥૫॥

રાધા ધ્યારી કે ચરણાવિંદ શીતલ સુખદાઈ ।

કોટિ ચન્દ મન્દ કરત નખ વિધુ જુન્દાઈ ॥

તાપ શાપ રોગ દોષ દાગળુ દુખદારી ।

લોભ મેદ દુષ્ટ દમન કંજ ભવન ચારી ॥

રયામ હૃદય જુગલુ જિત દૂપણ દિત સંગી ।

વૃન્દાવન ધુગિ ધૂસર રાસ ગગિઠ ગંગી ॥

સરણાગત અમય વિગ્દ પતિત પાવન વાને ।

વ્યાસ સે અતિ અવમ આતુર કેા કેા ન સમાને ॥૫॥

વ્યાસનન્દન વ્યાસનન્દન વ્યામનન્દન ગાઠયે ।

જિનકૌ દિત નામ લેત દમ્પતિ રતિ પાઠયે ॥

રામ મધ્ય લસિતાદિઠ પ્રાર્થના જો કીની ।

કરતે સુકુમારી પ્યારી વંશી તણ દીની ॥

મોઈ દસિ પ્રકટ રૂપ વંશી વધુ ધારૈ ।

કુંજ બવન રામ રમન ત્રિભુવન ચિત્તારૈ ॥

ગોકુલ ગવલ મુ હામ નિકટ વાદ રાગૈ ।

સિદિત પ્રેમ રામ જન્મ ગસિઠન દિત કૈજૈ ॥

તિનકૌ પિય નામ સહિત મ ન દિયૌ શ્રીરાધે ।

સત્ સિત આનન્દ રૂપ નિગમ અગમ સાધે ॥

શ્રી વૃન્દાવન ઘામ તગનિબલ મુ તીગ બારી ।

શ્રીરાધાપતિ રતિ અનન્ય દગ્ત નિત ખગારી ॥

અદ્ભુત હરિ મુક્ત વંશ બખિત નામ સ્થામા ।

જવ શ્રીરૂપલાલ દિત ચિત દ પાયૌ ત્રિશામા ॥૬॥

(ગાગ ગ,મકલી)

‘અજમલિ બાલુક બાવ વિચારૈ ।

મન તન નવ કિશોર સહચરિ વધુ દિત મુર કૃપા નિહારૈ ॥

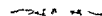
એક ચરન હિત સૌ સદરાવૈં । એક વચન પરિહાસ સુનાવૈં ॥
 હઠિ બેઠે દોઢિ બાલ રંગીલે । વિથુરી અલક સખૈ અંગ ઢીલે ॥
 ધૂમત ચરન નયન અનિયારે । ભૂપણુ વસન ન જાત સંભારે ॥
 ઠહું અંજન ઠહું પીક રહી ફિ । કેમે કહી જાત હૈ સો છવિ ॥
 હાર બાગ મિલકે અરજાને । નિશિ કે ચિન્હ નિરખિ મુસમ્યાને ॥

નિગખિ નિરખિ નિશિ કે ચિન્હન, રોમાંચિત હવૈ જાયૈ ।

માનો અંકુર મૈન કે, દ્વિર ઉપજે તન માર્હિ ॥૧૬॥

(મંગલા આરતી)

નિરખિ આરતી મંગલ ભોર । મંગલ શ્યામા શ્યામ કિશોર ॥
 મંગલ શ્રીવૃન્દાનન ધામ । મંગલ કુંજ મહલ અભિરામ ॥
 મંગલ ઘંટા નાદ સુહૈત । મંગલ ચાર મણિન હી જોત ॥
 મંગલ દુંદુભિ ધુન છવિ છાઈ । મંગલ સહચરિ દર્શન આઈ ॥
 મંગલ વીણા મૃદંગ બજાવૈં । મંગલ તાલ ઝાઝ ઝરલાવૈં ॥
 મંગલ સખી જૂથ કર જોરૈં । મંગલ ચમર લિયે ચહું ઝોરૈં ॥
 મંગલ પુષ્પાવલિ ખરસાઈ । મંગલ જોત સદલ બન છાઈ ॥
 જય શ્રીરૂપલાલ હિત હૃદય પ્રકાશ । મંગલ અદ્ભુત યુગલ વિલાસા ॥



(ધૂપ આરતી)

રતન જટિત સિંદાસન બેઠે દોઢિ આયકૈં ।

દરબન દિયે ફુલન કર સાદર નિઃખાત છવિ ચિત આયકૈં ॥

કમહૈં ન્યારે ન્યારે દેખત કબહૈં વદન મિલાય^{૨૧} ।
 અપને રૂપ આપહી મોહિત દહા મુનાજિ^{૨૨} ગાયક^{૨૩} ॥
 દોડિ તન સૌરભ ચગચિ સુધગ અલિ અગર ઘૂપ કરાચક^{૨૪} ।
 સુન્દરતા માગર મેં અલિ દમ નિકમત ગોતા ખાયક^{૨૫} ॥
 સુન્દર ભવન સુવાસિત કરક^{૨૬} ચૌદી દઈ બિજાયક^{૨૭} ।
 વૃન્દાવન હિત રૂપ પાક રચે જુગલ જિભાવત ચાયક^{૨૮} ॥૧૮॥

(નૃગાગ આરતી)

કગત હૈં જીંછ હિય કે બાય સો આરત કરત સબોઈ ।
 ગૌર શ્યામ પૈ મુદિત ઉતારત આનન જગમગ હોઈ ॥
 દોડિ જો જો પુન પુન ઉચગત ચૈવર દુરાનત દોય ।
 દોડિ પડુપામસિ ખારત દોળી વાર પિવત હૈં સોય ॥
 બાર બાર વાગત ને અપુનપૌ ચિત કો પ્રેમ સમોય ।
 વૃન્દાવન હિત રૂપ મિધુ દ્રગ ચૈવુરી સમાત ન સોય ॥૧૯॥

લડૈતો થેઇ થેન મુચ બાપૈ^{૨૯} ।

પરત નહીં ભૂમ માનો મડલ પેમ પદ ગપૈ^{૩૦} ॥
 દગ્ગન ચયત હૈલાગત મારત માનો શોભા સાપૈ^{૩૧} ।
 વૃન્દાવન હિત રૂપ ભરત પ્રીતમ મન અભિનાપૈ^{૩૨} ॥૨૦॥

(રાજબોગ) રાગ સારંગ ।

બોજન કૈ સમયૌ જાળ જાન્યૌ ।

તજ સખિઅન મણિમય ચૌહી પર પોઠઅર બિજ્યૌ મન માનૌ ॥

ઝારી ધરી ભરી શીતલ જલ કંચન ચાલ ધુળાપે ।

બેલા જાન ધરૌ બેલા અબલા નવ લાલ ખુલાપે ॥

ઠપુ ઠપુ બૂપણ વસન અસન કૈ સમયૌ જાન ઉતારે ।

રતન સુ ચૌહી પહુચી ધર પદુકા પટ ન્યારે ॥

દૈ આચરન પરોસત વ્યંજન બર્ણે કા પૈ જાઈ ।

ચંપકલતા ચતુર સજ વિધિ સૌ કરે ભરે મન લાઈ ॥

પાયસ ખૂરા ઔર ધૂત પૂરા બરા લેચઈ રાટી ।

ભાત પીત સિત જર કમોદ કૈ કડી પકોડી છોટી ॥

ઘોઆ દાર મુંગ સાજી પુન જરી કુલૈરી છીની ।

મીઠી કડી મુરખ્યા અમરસં પનૌ સિખરની દીની ॥

ફલા લવંગ કપૂર સુનાસિત પુનિ મેવા મધિ ડારી ।

બિચરી થૂલી ધૂત કર મિશ્રિત સ્વાદ અધિક રુચિકારી ॥

મઠા રાયતે ભાંતિ ભાતિ કે વિવિધિ સદાને આર્ને ।

પત્ર ફૂલ ફલ ફલી કંદ તરકારી ડારી જાને ॥

સાલન બહુત કરે બેસન કે ઝોલ પિટૌર બનાપે ।

ફલ દલ શાક મમેત હેત સૌં ફક દંધિ તક મિલાપે ॥

મખરે વ્યંજન બહુત બાંતિ કે કહાં લગ વસો જોતે ।
 પરસ બહુર મન છી રચિ કારન મેવા સુરસ સમેતે ॥
 નીજ આદૌ ચપર નારંગી મુરસ દાડમી દાને ।
 મેવ આમ સરદા બિડી ખીરા નાસપાતિ સરસાને ॥
 સુરસ દાખ મેવા આલિ જોતી ડાલી' બર બર કેતી ।
 કેજી લવન કેજી ખરા સોં કેજી જ્યોં છી ત્યોં તેતી ॥
 પૂઆ પુરી જાલેબી લાહુ ખાળ ખુરમા ફેની ।
 ચન્દ્રકલા વાવર અરુ ઘેવર અમૃતપુટી મુખ દેની ॥
 મોહન ભોગ દુધ છી રોટી જોઆ સેવ મલાઈ ।
 અમૃત મુટીકે અમૃત ખૂંદી મઠરિન હેત સરાઈ ॥
 મેવ સિંગારે કે ખુરમા જુલ સકરપારે પેરા ।
 મુઝિયાં ઔર પિરાક પાપરી પાપર તરે દરેરા ॥
 તાલી દ્યરિયાં બાતિ બાતિ છી નોંન મધુર રસ સાંને ।
 પેડા પિરતા તાલી' ચિરૌંજ પમે મખાને દાને ॥
 પક પક પકવાન અતેક વિધિ પરસ દ્યૌરી આતી ।
 સખિજન દેત હેત પિય પ્યારી હેત અધિક મન જાતી ॥
 વ્યંજન છીતે ચાર બાંતિ કે પટરસ રસ કર માન ।
 બસ જોલ્ય અરુ ચોખ્ય લેહવ યે રિવિધિ પ્રકાર જખાને ॥
 લવન કવાય વિકત કટુ અમલરુ મધુર વિવિધિ વિધિ કેતે ।
 રસિ અનુસાર ખનાયે રુચિ કર મિશ્રિત ન્યારે જોતે ॥

કૈંકરિમઠ જરા સૌં છોકે પુનિ પત્રજ સૌં કેતે ।
 સૌંદ્ર ગૌંધેલ દાલચીની સૌં કૈંકર લૌંગ સમેતે ॥
 પણા લવંગ કપૂર નયકર નાવિત્રી મધિનાઈ ।
 કેશરપુટ પુનિ નાગવેલિ રસ અતર કુશમ અધિકાઈ ॥
 ગિરી છુહારે દાખ ચિરૌજ પિરતા અરુ બાદામા ।
 યથા યોગ્ય સામિત્રી મિલિ યે અંધક ચતુર સુભામા ॥
 દૂલહ દુલહિન રાધાવલ્લભ ભોજન કરત વિરાજૈ ।
 હૈંસત પરસ્પર કૌર લેત મુખ દસન વસન છણિ છાજૈ ॥
 યહિ પ્રકાર ભોજન કરાયકેં પુનિ આચવન દિવાયૌ ।
 હાથ અગૌંછ ખવાબત ખીસી કરત આપનૌ બાયૌ ॥
 બૈંઠે નય સિંહાસન ઊપર સખિયન ચાર ઉડાયૌ ।
 રાજભોગ કી કરત આરતી જૈ શ્રીકમલનયન યશ ગાયૌ ॥૨૧॥

(રાજભોગ આરતી)

નવલ ધનસ્યામ નવ નવલ વર રાધિકા—

નવલ નવ કુંજ નવ કેલિ દાની ।

નવલ કુસુમાવલી નવલ સિન્ધ્યા રચિત—

નવલ કોઠિલ કીર બુંગ ગાની ॥

નવલ સહચરિ જન્દ નવલ વીજા મૃદંગ—

નવલ સ્વર તાન નવ રાગ વાની ।

જય શ્રીનવલ ગોપીનાથ હિત નવલ રસ રીતિ સૌ—

નવલ હરિવંશ અનુરાગ દાની ॥૨૨॥

॥ उत्थापन समय ॥ धूप आरती ॥

(गग गौरी)

गधा मेरे प्राणुन हूँ तैं प्यारी । जल हूँ मान न कीजिये
सुन्दरि दौ तौ शरणु तिहारी ॥ नैक यितय हँसि भोसियै मोते
भोसियै धूँधट सारी । जय श्री कृष्णदास हित प्रीति रीति वस
भरसई अंकन प्यारी ॥२३॥

प्रीतम मेरै प्राणुन हूँ तैं प्यारौ । निशि दिन डर लगाये
गहँ हित सो नैक न करिहँ न्यारौ ॥ देखत जय परम सुख उपजत
इय रंग गुणु गारौ । जय श्रीकमलनयन हित सुन प्रिय वैनन तन
भन धन भव वारौ ॥२४॥

ऐसी करौ नव सास रंगीले जू यित न और कहूँ लसयार्थ ।
जे सुख दुःख रहे लगि देख सो ते भिट जय अरु सोक पड़ार्थ ॥
संगति साधु वृन्दावन दानन तुव गुणु गावन भाज निहार्थ । छवि
हंज शरत्र तिहारे वसौ डर देखु यहै ध्रुव कौ ध्रुवतार्थ ॥२५॥

प्रीतम तुम मेरे दान जसत दौ । कदा भोरै हृदय पूछत दौ
है अतुगार्थ करि जू हँसत दौ ॥ कीजिये पग्न स्वयं आपनौ
पुतरिनु मे प्यारे तुम्हौ लपत दौ । वृन्दावन हित इय वलि गर्थ
कुंज लड़ावत हिय दुससत दौ ॥२६॥

शोभित आन रंगीली जेरी । सुन्दर रसिक नवल मनमोहन
अलवेली नव वपस द्विशीरी ॥ वेद्यरि उभय हँसनि मेँ डोसत सो

શ્રીહિતવાણી ૥૩૬

અખ મેં શ્રીશ્રીદાવન ધન પાપો । રાધે જુ અરણ્ય સરણ મન દીનો
(શી) શુર હરિવંશ બતાવો ॥ સોયો કૃતો વિષય મન્દિર મેં હિતશુર
ટેરિ જગાયો ॥ અખતો વ્યાસ વિહાર વિશોકત શુક નોરદ મુનિ ગાયો ॥

ધારી લાગે શ્રીશ્રીદાવન છી ધૂર । રાધે જુ રાતી, મોહન
મળ, રાજ સદા મર પૂર ॥ કનક કલશ કરુઆ, મહમદી ખાશા
વૂજ કમરિતુ છી ચૂર । વ્યાસહિ (શી) શુર હરિવંશ બતાઈ
અપની જીવન મૂર ॥૩૮॥

દોઠ—આય વિરાજો મહલ મેં, મન્ધ્યા સમયો જન ।

આવી લ્યાઈ ભોગ સખ, મેવા વહુ પક્ષવાન ॥૩૯॥

પદ—સન્ધ્યા ભોગ અલી લૈ આઈ । પેડ, ખુરમા ઔર
જાસેબી મોહક મગદ મલાઈ ॥ કંચન ચાર ઘરે મરિ આગે પિરતા
અરુ ખાદામ રસાઈ । પાત પવાવત લેત પરપર હૈસન દશન
અમકનિ અધિકાર ॥ પાણિ પગસિ મુખ દેત જીરી પિય તવ ધારી
નયનનિ મેં મુસકાર, લલિતાદિક જય શ્રી કમલ નયન હિત ધન
દિન માનત આપનો માર્ગ ॥૪૦॥

દોઠ—અદ્ભુત મીઠે મધુર કલ, લ્યાઈ મખી જનાય ।

પવાવત પ્યારે લાલ કો, સુ પદિલે પ્રિયા પવાય ॥૪૧॥

પામ બની પટકા બની, બની લાવ કો ભેખ ।

રાધાવલ્લભ લાવ છી, દોર આરતી દેખ ॥૪૨॥

મતિ મન્ધ્યા ભોગ સમ્પૂર્ણ ॥

અથ નામ ધ્વનિ ॥

જય જય રાધાવલ્લભ ગુરુ હરિવંશ । રંગીલો રાધાવલ્લભ
હિત હરિવંશ ॥ છખીલો રાધાવલ્લભ ખારો હરિવંશ । ગસીલો
રાધાવલ્લભ જીવન હરિવંશ ॥ શ્રીહરિવંશ જય જય હરિવંશ ।
શ્રીરાધાવલ્લભ શ્રીહિત રાધે રાધે, રાધાવલ્લભ ગુરુ હરિવંશ

ઇતિ નામ ધ્વનિ સમાપ્ત ॥

॥ અથ શ્રીસંધ્યા આરતી ॥

આગતિ કીજૈ શ્યામ સુન્દર કી । નદ કે નંદન રાધિકા વગ
કી ॥ ભક્તિ કર દીપ પ્રેમ કરિ ખાતી । સાધુ સંગતિ કરિ અનુદિન
ગતી ॥ આરતિ વૂજ સુવતિ યથ મન ભાવૈ । શ્યામ લીલા શ્રી
હરિવંશ હિત ગાવૈ । ૪૩॥

આરતિ શ્રીરાધિકાવલ્લભનાલ કી કીજૈ । નિગ્ધ નયન
છવિ લાહો લીજૈ ॥ સખિ કુહું ઓગ અમર કર લીયૈ ।
અનુરાગન ઓ લીને લીયૈ । સનસુખ વીણ મૃદંગ અનનૈ ।
સહચરિ નાના ગમ સુનાવૈ ॥ કંચન થાર જરિત મણિ
મોહૈ । મધ્યવર્તિકા ત્રિજુલન મોહૈ ॥ પંડા નાદ કલો નહિં જઈ ।
આનંદ મંગલ કી નિધિ માર્છી ॥ જયતિ જયતિ જોરી સુખ રાજી ।
જય શ્રીરૂપનાથ હિત ચરણ નિવાસી ॥૪૪॥

અથ સ્તુતી દોહા ॥

ચન્દ્ર મિટૈ દિન કર મિટૈ, મિટૈ ત્રિજુણ વિન્તાર ।

દહ વૃત્ત શ્રીહરિવંશ કૈ, મિટૈ ન નિત્ય વિહાર ॥૪૫॥

जेरी युगलकिशोर हो, आंगर्या विधि वाद ।
 हूँ वृत्त श्रीहरिवंश हो, निवसौ आदि युगाद ॥४६॥
 निगम अहं परशत नही, जे रम सभ तेँ हर ।
 कियौ प्रकट हरिवंश जू, गमिकन जवन भूर ॥४७॥
 रूप जेलि प्यारी जनी, सु प्रीतम प्रेम तमाल ।
 होवि मन मिलि एकहि भये श्रीराधावल्लभलाल ॥४८॥
 निकसि कुंज छोड़, भये, जुग पररपर अंश ।
 राधावल्लभ मुख कभल निरभ नयन हरिवंश ॥४९॥
 रे मन श्रीहरिवंश बन, जे आहत विभ्राम ।
 जिह रस अस पूज सु-हरिनु, छाडि दिये सुख धाम ॥५०॥
 निगम नीर मिलि एक भया, बजन दुग्ध सभ ज्वेत ।
 श्रीहरिवंश हंस न्यारै कियौ, प्रकट जगत के छेत ॥५१॥

॥ कुंडलिया ॥

श्रीराधावल्लभ लाडिले, अति उदार सुकुमार ।
 ध्रुव तौ भूयौ ओर तेँ, तुम जनि देहु विसार ॥
 तुम जनि देहु विसारि होर मोहो कहुँ नाही ।
 पिय रँग बगि कटाक्ष नैह चितवौ मो भाही ॥
 जहँ प्रीति ही रीति ज्यौ कछु होय न बाधा ।
 तुम हो परम प्रीत्यु प्राण वसभ श्रीराधा ॥५२॥
 दोहा—न विसरि हौं न विसारि हौं, यदै दान मुहि देव ।
 श्रीहरिवंश के लाडिले मुहि अपनी हर भेद ॥५३॥

કેસોઈ પાપી ક્યો ન હોય શ્રીહરિવંશ નામ જો લેય ।
 અલક લડે તી રીઝિકૈ, મહલ ખવાસી દેય મયજા ।
 મહિમા તેરી કહા કહૌ, શ્રીહરિવંશ દયાલ ।
 તેરે દારે વટત હૈ, સહજ લાડિલી લાલ ॥૫૫॥
 સખ અધમન કૌ બૂપ હૌ નાહિન કછુ સમજંત ।
 અધમ ઉધારણુ વ્યાસ સુત, યદ સુનિ કૈ હરપંત ॥૫૬॥
 વન્દૌ શ્રીહરિવંશ કે, ચરણ કમલ સુખ ધામ ।
 જિનકૌ વન્દત નિત્ય હી, છૈલ છરીલા સ્યામ ॥૫૭॥
 શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ કૌ, મન વચ કરૌ પ્રણામ ।
 સદા સદા તન પામ્યે, શ્રીવૃન્દાવન ધામ ॥૫૮॥
 જોરી શ્રીહરિવંશ કી, શ્રીહરિવંશ સ્વરૂપ ।
 સેવક વાણી કુંજ મેં, ચિહરત પરમ અનૂપ ॥૫૯॥
 હરણુનિધિ અરુ કૃપાનિધિ શ્રીહરિન થ ઉદાર ।
 વૃન્દાવન રસ કહનિ કૌ, પ્રકટ ધર્યૌ અવતાર ॥૬૦॥
 હિત કી ચહા ઉપાસના, હિત કે હૈ હમ દાસ ।
 હિત વિશેષ રાખત રહૌ, ચિત નિત હિત કી આશ ॥૬૧॥
 હરિવંશી હરિ અધર ચદિ, ગૂંજત સદા અમંદ ।
 હમ ચકોર પ્યાસે સદા, પાય સુવા મકરંદ ॥૬૨॥
 શ્રીહરિવંશહિ ગાય મન, ભાવૈ યથ હરિવંશ ।
 હરિવંશ જિના નહિ બાધિહૌ, પદ નિવાસિ હરિવંશ ॥૬૩॥

૫૬—દીજે શ્રીવૃન્દાવન વાસ । નિરખૌ શ્રીરાધાવદ્નમલાવકૌ ॥

लड़ती लालकैं । यह जेरी मेरे जवन प्राणु । निरभूँ ॥ मेर
मुकुट पीताम्बर उर वैजन्ती भाल ॥ निरभूँ ॥ यमुना पुलिन
वंशीवट । सेवाकुंज निज धाम ॥ निरभूँ ॥ वंशी जगवै
ध्यारे मोहना । लैलै गधा राधा नाम ॥ निरभूँ ॥ देपौ या
मज ही रथना । नार्थे युगलकेशोर ॥ निरभूँ ॥ यन्द्रसभी कै
ध्यारे । श्रीराधा जू कै ध्यारे ॥ गोपिन कै ध्यारे । मज
रभवारै । श्रीहरिवंश दुलारै ॥ दर्शन दीजै दीनानाथ । दर्शन
दीजै हितलाल । निरभूँ श्रीराधावल्लभलाल कै । लड़ती लाल कै ॥

(द्वारि सभा मंडल के मंगल पद)

जय जय श्रीहरिवंश परम करुणामर्ध । नृप नर वाहन ताहि
जुगल पद निधि दध ॥ नादगुमलहि निहाय कियै हित प्रीति कै ।
पीकल मोहन अंग संग लिये रीति कै ॥ रीति कै पण्डित मिलायै
हित जगदीश दास कै । नवल जेडी तोहि संत प्रभाव दीनो व्यास
कै ॥ कुंज कीड़ । जेलि श्रीहरिदाम के उर मे अर्ध । जय जय
श्रीहरिवंश परम करुणामर्ध ॥ १ ॥ जय जय श्रीहरिवंश देत आनंद
कै । भाष्ये धाम स्वरूप प्रमोधानंद कै ॥ घर ही मन्त्र लियै
नृप परमानन्द नै । पूरन संग दियै मुदित रसकन्द नै ॥ रस
कंद जमुना संग गंगा कर्माही शिर कर धर्यै । हविंश दास
कृपालुता सौ नरक ते द्रोही तर्यै ॥ जे न छोटौ सेवक तौ कै
करतौ अम दंड कै । जय जय श्रीहरिवंश देत आनन्द कै ॥ २ ॥
जय जय श्रीहरिवंश सदायक धीर कै । यत्रभुज अर हरिदास

હરત પર પીર કૈ ॥ જૈમલ રક્ષા હેત આપ જૈમલ ભયે । ખરગસેન
જસંવ ત ભુવન જસ જગ છયે ॥ ભુવન જસ જગ છયે સુન્દરલાલ
સ્વામી ગસમઈ । દામોદર પ્રણુ રાખિ હિત દ્યુવદાસ કૈ વાણી દઈ ॥
દાસ નાગિરી ભાગમતી મિલિ ગુનત ગુણુ ગંભીર કૈ । જય જય
શ્રીહરિવંશ મહાયક ધીર કૈ ॥૩૩॥ જય જય શ્રીહરિવંશ શ્રગ્ધુ
સુખદાન જૂ । કન્હર સ્વામી હરે કૃષ્ણુ દેખ્યાન જૂ ॥ હરીદાસ
ગોવિંદ જુ મોહન માધુરી । સ્યામમાલ હિત રસિક શ્રીતિ દાગનિ
દુરી ॥ દુરી દારિકાદાસ પુષ્કર દાસ પૈ ગુરુ કી કૃપા । કિયૌ હિત
મૌ ભેંટ સર્વસ મિટ ગઈ તીનૌ તપા ॥ વાસ વૃન્દાવન કરત
સખ મહલ ટહવ સુખાન જૂ । જય જય શ્રીહરિવંશ શ્રગ્ધુ
સુખદાનજૂ ॥૪૥૫॥

કૃપાનિધિ કૃપા અનુચહ કીજૈ । રાખૌ લાજ શરણુ આયે કી
નામ ધામ રતિ દીજૈ ॥ સંત સંગ ગુણુ જાચૌ ગચૌ પ્રેમ મુધા
રસ પીજૈ । જય શ્રીરૂપલાલ હિત લલિત ત્રિભંગી અખ અપનૌ
કરે લીજૈ ॥૬૬॥

કહાવૌ અન્તર્યામી સ્યામ ।

તુમ સૌ કહૂ ન દુગત દુગઈ વૃક બરોસૌ નામ ॥

પતિતન પાવન કરત નિરંતર વિગ્દ મદા સુખધામ ।

જય શ્રીરૂપલાલ હિત લલિત ત્રિભંગી ભક્તાન પૂગન કામ ॥૬૭॥

જિનકે દેહ નેહ ગસ બીનૌ ।

તિનકે નૈન પ્રેમ મદમાતે નાતે જગ કે નૌંક ન ચીનૌ ॥

વેદ બેદ તજ નેમ ધૃષ્ણલા વિહંસિ બધે પ્રીતમં સૌ લીનૈ ।
જય શ્રીરૂપલાલ હિત ગતિ મતિ ન્યારી કહિ ન જાત જૈસે મતિ બીનૈ ॥

મળ જગ મોવૈ પ્રેમી રોવૈ નૈન સમોવૈ ધોવૈ ।
કૈલસકોવૈ આનંદ વોવૈ હિત જોવૈ દુષ્ણ મોવૈ ॥
છિન છિન ગાવૈ હગિહિ લડાવૈ વિગ્દ વિથા તન મોવૈ ।
જય શ્રીરૂપલાલ હિત ચિત મો મિત દૃષ્ટુ તવ મસ વસ હી હોવૈ ॥૬૯

વિન શિવ પ્રેમી રહૈ નિગંતર શિર સાટે પિય પાવૈ ।
તૈનન નીગ ધીર તજ જીવૈ છિન છિન ગુણ ગણુ ગાવૈ ॥
જગ તે ગદા કરાસ આશ છકે રૂપ રમાસવે ભાવૈ ।
જય શ્રીરૂપલાલ હિત લલિત ત્રિભંગી વિન ચિત ઔગ ન આવૈ ॥૭૦

મ ગવ—જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ।
નમિકન પ્રાણ અધાર પરમ મસ સોહનો ॥
યા નભ કે નક્ષત્ર મથૈ મુખદાયકા ।
મંદ નિકલંક મથંક મંદ નિધિ લાયકા ॥
શ્રી કિશોરીલાલજી હી પ્રભા જય વિગ્દૂત ભર્તૌ ।
જગત જગ મેં જે ચક્રોરી પગ્મ શીતલ તે ભર્તૌ ॥
મુખા ધાગ શ્રવત વાણી વાલ લલના જોહના ।
જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૭૧॥
જય જય હિત દૈ હેત કિશોરીલાલજી ।
આગત લગ્ને કૃપાયુ નેદ પ્રતિપાવ જી ॥

શીરાધાવલ્લભલાલ લડાવત ચાવ સૌ ।
 ખેલ ખિલાવત નિત્ય ભરે રસ ભાવ સૌ ॥
 કુંજ, હિત કી જે અનેકન પરમ મુંખદ મુંહાવની ।
 લાડ, ઝટુ અનુસાર કે કર,વાત કહ્યે મન ભાવની ॥
 ચલન પ્યારી પીય,કી મેં લગે રહ્યે નિત ગોહનાં ।
 જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૨॥

જય જય હિત કૌ વંશ અંશ પ્રિયા લાલ કૌ ।
 પ્રગટયૌ છકહિ સંગ રંગ રૈયૌ ખાલ કૌ ॥
 આનંદ નિધિ સુકુમાર ભાર જગ હર લિયૌ ।
 નીરસ નિપટ નિકામ હૃદય રસ ભર દિયૌ ॥
 હિત કિશોરીલાલ પ્યારે હિત-કિશોરી-લાલ-હૃવૈ ।
 વંશ વૈભવ, કુંજ લીલા, પ્રપટ કીન્હે ભાવ દૈ ॥
 ભાંડ શુકલા અણખી કૌ દિવસ મંગલ દોહના ।
 જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૩॥

જય જય હિત રવિ ખાલ લાલ લાલી ફરી ।
 તિમિર ગયૌ, રસખેલિ ફલી ઝુકે ઝુકે નવી ॥
 પ્રાત મુહાવન પવન ત્રિવિધિ હૃવૈ ખલ રહી ।
 પ્રેમ ભક્તિ રસ ભાવ અદૈ ગતિ સખ લહી ॥
 જે હલકી પ્રકૃતિ કે જન કિસ્મ દેખૈ અનિ ગયે ।
 ગસિક ગસ કે વીર, વાનૌ ખાંધિ કે સખ મનિ ગયે ॥

ચરણ રજ પાસ પાસ કૈ હિત ચરણ રહે સોહ ના ।
જય જય શ્રીહરિવંશ વંશ જગ મોહના ॥૪૧॥૭૧॥

અથ શયન સમય કૈ ભોગ ॥ ૫૬ રાગ વિહાગરૈ ॥

લાડિલી લાલ રાજત રુચિર કુંજ મેં । અંરગજ અંગ રંગ
રંગ વાગે બનૈ દોહ જન પ્રેમ સૌ સને રસ પુંજ મેં ॥ નિર્મલ
હાડી અલી બલી ગતિ બેઠ સૌ રૈન પહિલી જામ બૃદ અલિ શુંજ
મેં । પરપૌ પરદા ધરપૌ સૈન કૈ ભોગ ૫૫ પૂરી ભર થાર
ઓંવજલાલ કર મુંજ મેં ॥૭૨॥

સૈન ભોગ લ્યાઈ ભર થારી । રુચિર ક્યૌરી પૂવા પૂરી મોહન
ભોગ જેવત પિય ખ્યારી ॥ ધરે કટોરા ભરે મુરખ્યા સરસ સધાને
વર તરહારી । ઓઠયૌ દૂધ રજત બાજન બરિ તામધિ પીસ શિતા
બહુ ડારી ॥ *

ભોજન સૈન સમય કર્યાવત । હુચઈ મોહનભોગ અભિરતી
મિથી ફેની દૂધ મિલાવત ॥ દગ કોરનિ મધિ હંગત પરપર રદ છદ
પરસત લલન ખવાવત । †

નોટ— લલિતા લલિત કરન અગવાવત ચમુનાજલ કંચન કી
ઝારી । જૈ શ્રીહિત વૃજલાલ ખવાવત વીરી કંપતિ
ઝવિ સંપતિ ઉર ધારી ॥૭૩॥

† જૈ શ્રી કમલ નયન હિત દેત આચમન વીરી લેત મુખ
અતિ સચુપાવત ॥૭૪॥

રાધા મોહન લાલ વ્યાર કીજૈ । પૂરી દૂધ મલાઈ મિશ્રી
પહિલૈ કૌર શ્રીપ્રિયાજી કૌ દીજૈ ॥ જે'મત લાલ લાડિલી દોહી
લલિતાદિક નિરખત મુખ બીજૈ । *

રાધા લાલ વ્યાર કરત । મગદ મોહનભોગ મોદક મધુર લૈ
મુખ ધરત ॥ મોન હી પૂરી કચૌરી લાડૂ મન કૌ હરત । ચરધરે
ચીલા ત્રિકૈના રસના ગસ વિસ્તગત ॥ દૂધ ફલ બરફી ગુલાબી
અધિક રચિ અનુસરત । ચન્દ્રકલા ધેવર રસીલે સ્વાદ બહુ ઉચ્ચરતા ॥
પુગમી ખાન દૂધ ફૈની સિતા તિન મધિ રરત । અમિરતી મઠરી
જલેખી પાચ આનૌં કરત ॥ તરકારી બાજી પરોસી જૈવત અતિ
મુખ દરત । પાપર કચરી અરુ મુરખ્યા જુગલ બહુ આદરત ॥
ગ્રાસ લૈ જતરાત આનૌંદ બીજ મનુ મુખ ઝરત । છવિ વિહારી
નૈન નિન્ખત પલક નાહિ ન પગત ॥ વદન પર ભઈ મદન
લગ્નકન સૈન કૌ અર વરત । વન્દાવન હિત રૂપ ગજની દેખ
મન મન અરત ॥૭૬॥

હૌસિ હૌસિ દૂધ પીવત પાલ । મધુર વગ સૌધે સુવાસિત
રચિર પગમ રસાલ ॥ જીવ લંગ ગંગ અનગ વિતરત ચિતૈ
મોહન ઓગ । સુધાનિધિ મનૌ પ્રેમ ધારા પુષિત ત્રિપિત ચકોગ ॥
પ્યારૌ લાલ રસ લ પટ સુકર અચવાય મુખ છવિ હેર । લેત તવ
અવશેષ આપુન પરે મનમથ ફેર ॥૭૭॥

નોટ— - જૈ ત્રીહિત જોપીતાથ બામિનિ મુખ પોરી ચિહદાની મોહન
કર લીજૈ ૧૭૫ ॥

પય પૈ ધરૂંયા કનક કટાર । સુગંધ ફલા મિલ્યૌ મિશ્રી લેત
દેત નિહોર ॥ વલિ જાજી કમહૂં હેલેં કમહૂં મેલેં કર કટાક્ષનિ
કોર । મુખ-કલાનિધિ મનૌ સુધા પીવત સખિન નૈન ચકોર ॥૭૮॥

હૌસિ હૌસિ દૂધ પીવત પિય પ્યારી । ચંદન વારુ કનક
ચર (ચિર) ઔઠયૌ વારૌ કોટિ સુધારી ॥ મિશ્રા લૌગ ચિરૌછ
ફલા કપૂર સુગંધ સૌવારી । ઉજ્જવલ સરસ સચિક્રન સુન્દર સ્વાદ
સુમિષ્ટ મહારી ॥ *

નવલ નવેલી અલવેલી મુકુમારીજી કૌ રૂપ પિય પ્રાણુન કૌ
સહજ અહારરી । વ્યંગન સુ ભાવન કે નેહ ધૃત સૌ વને રોચક
ચિર હૌ અનૂપ અતિ ચારુરી ॥ નૈનન કી રસના તૃપિત ન હોત
મૈયા હૌ નર્ધનર્ધ રચિ ધ્રુવ અદૃત અપારરી । પાનિપ કૌ પાની
પ્યાય પાન મુસકાન ખવાય રાખે ઉર મેજ સ્વાય પાયૌ મુખ
સાર રી ॥૮૦॥

(આરતી રમન)

આરતી કીજિયૈ રાધિકા લાલ કી । કુંજ અભિરામ વર
મુખમ મુખ સેજ પર ફૈલિ રહી કાંતિ વર ગૌર તન બાલ કી ॥
કંઠ હીરા દમક ચમક બૂવણ વસન ઝલકતી યુગલ ઉર મુક્ત રસ

નોટ—ક લલિતા કર પટ લીયૈ કાઢી વસુના જત કંચન કી
ઝારી । મખ સખિયન કૌ દર્ધ હૌ પ્રસાદી જૈ શ્રીરૂપલાલ
અસિદાગી ॥૭૯॥

માલ કી । મંદ મુદ મુમકિની લસત દશનાવથી ચપવ્ય દુગ ચા-
છવિ હાય ગહી બાલ કી ॥ સરસ સૌગંધ કર ગચિત વર વર્તિકા
જટિત મણિવાલ કલ ધૌત કી આગતી । દામોદર હિત સખી હાય
લલિતા લિયે સહિત તન મન પ્રાણુ મન મદન હવિ વારતી ॥૮૧॥

સખી જન આરતી શયન સાજૈ । મધ્ય મણિ લાડિલી
વિવસ આલસ વલિત ગુહત અગ લાલ કે અંક રાજૈ ॥ કનક મય
ધાવ કે મધ્ય કવમલ દુતી વાગતી પ્રાણુ અલિ ગતી લાજૈ । હોત
જન જય ધુની નાદ ઘંટા સુની ઝાલરી ઝાઝ ધક ગગન બાજૈ ॥
અંગ કી દોતિ ઉદ્યાત અતિ ભવન કી ગમન દોઝી સેજ પર મદન
લીયૈ । ભોગ મગ ચાગ ચિક ડાર બાહિંગ ચળી જય શ્રી જોરી હિત
લાલ હદ દુગન સાદ્ય કિયૈ ॥૮૨॥

(શયન)

લડેલીજુ કે નૈનનિ ની દ ધુરી ।
આવસ વશ જોન વશ મદ વશ પિય કે અંશ દુરી ॥
પિય કર પરચૈ સદજ ચિવુક વગ વાકી લોહ મુરી ।
વાસરી મખી હિત વ્યાસ મુવન વલ દેખતલનન દુરી ॥૮૩॥
આલસ નૈન આવત ધૂંમ ।
લાલ સુટકી દૈ જગાવત ખુવૈ તાકત ભૂંમ ॥
ખસત ભુજ પિય અ શ તૈ સમઘાય કર લૈ ચૂંમ ।
વૃન્દાવન હિત રૂપ ધૂંવલ વદન પર ગ્લૌ ખૂંમ ॥૮૪॥

દેખૌ ચિત્રસારી બની ।

મણિન દીપક રંગ્રંજલકત વિવિધિ શોભા સની ॥

સંરસ પરસ સુગંધ છી ઉદગાર આવત જની ।

મધ્ય સેજ વિરાજ પૈદે, ગસિક દંપતિ મની ॥

અંગ અંગ રંગ અનંગ બીને રાધિકા ધન ધની ।

પદ કમલ સેવત તહા શ્રીહિત રૂપ વક જની ॥૮૫॥

લાલ છી નીંદ્રા અપત અખિયા ।

ખંજન સુત અરવરત ઉડન માનૌ ઉલહીં નઈ પખિયા ॥

ધ્યારી રૂપ છી ધૂમત મતવારી લખિયા ।

વૃન્દાવન હિત રૂપ રસાસવ પીય જિવત સખિયા ॥૮૬॥

ીરી રચન સુધગ મહા પ્રીતિ અવધિ કદૌ દહા—

ગતન જટિત ડના મુવિધિ ધરતિ લાઘ લાઘરી ।

અતરનિ છી શીશી ચારુ ફૂલનિ કે રચે હાગ—

રંગ મહલ દંપતિ કે નિકટ ધગતિ જાઘરી ॥

મોહક અરુ મગદ્દ મગતિ બાજન મધુ પાન ધરતિ—

લૈ વલાઘ ચિકહિ ઠારિ બીજી રસ બાઘરી ।

સુરતિ સુદ મહા મુર વિહગત હૈં રસ ગરૂ—

વલિ વલિ વૃન્દાવન હિય રૂપ સુજશ ગાઘરી । ૮૭ ।

નાહી સુરજત અરુજન પ્રેમ છી, ગહી રોમ રોમ મેં ભોય ।

રાયે જુ મોહન હો રહે, મોહન રાધે હોય ॥

ત્રિલુપ્ત તરૈ પિય કર દિયે હો શોભિત હૈં યહ બાય ।

નીલ કમલ પર અરન કમલ, માનૌ ખિલે હૈં પગ્મ સત્યપાય ॥

લલિત લતન તર ગંગમગે, હો દોહ મૈન સનમાન ।
 નૈનન મેં નૈના ખગે અરુ પગે હૈં પ્રાણુન મેં પ્રાન ॥
 નાગરિયા રજની ધટૈ, જ્યો અંદ મલિન ભઈ જોત ।
 ત્યો ત્યો આલસ રૂપ દુહુન ક, ઉતૈ યૌગુનૌ હોત ॥૮૮॥

દેત છવિ આલસ નૈન ભરે ।

અપકત ખુલત પલક માનૌ અમ્યુજ સમ્પુટ લૈ ઉપરે ॥

કિધો શોભા પિંજરન મેં ખંજન પરવશ આન પરે ।

ભૂકુટી ધનુષ વાન મપિ રેખા નાયત દેખ ડરે ॥

પિય દિશ કુદન વેલ તરુ માનૌ અતિ હિત માન અરે ।

કૃન્દાવન હિત રૂપ વદન સરવર કેં મીન તરે ॥૮૯॥

પોઢી સુખ સેજ પ્રિયા, સ્યામ ભુજ શીષ દિયૈ—

ઉરઝ અંગ અંગ વાલ, લાલ ઉર સમાઈ ।

વીરીં વિવિ ખંડ ખંડ આનન દગ પાનન રૂપ—

છકે સગ્ગ સૌરમ દુતિ પરત નહિં લખાઈ ॥

ઓઢૈં પટ નીલ પકે ઝલમલાત વદન અન્દ—

ભૂપત ઉડગન સમાજ કવિ મતિ વિલખાઈ ।

સેવત પદ કમલ ટહલ મહલ અલી શ્રીલાલ—

રૂપ હિત અનુગત જન માન નિજ કગ અપનાઈ ॥૯૦॥

હતિ અષ્ટામ ઠી સેવા કે સંદેષ સે પદ સમ્પૂર્ણ ઠી

જય જય શ્રીહિત હર્ગિવંસ ॥



श्रीराधावल्लभजी को अष्टप्रहर सेवाविलास

(ध्यान की प्रकार)

प्रथम ही बार घड़ी गन्ति रहै तब 'श्रीराधावल्लभ श्रीछत्रिंश श्रीचन्दानन श्रीचन्दनन्द' ये नाम सेत छै तब अपने आचार्य को ध्यान करै । तब दो घड़ी गन्ति रहै अरु दो घड़ी यहै, तब लग गंगुल समय छै ।

अथ श्रीभंगन समय

प्रथम आनादि कटिछै आप के दोनो हाथ के मध्य नासिका मुख से धर्मपुंडू तिलक केशरी चन्दन गुवाल या लावनी छड़ी या स्वामव द्विती विन्दु युक्त तिलक छै । पाछै भन्दिर प्री भाजनी करै, फिर जल भूतमादि छत्रि भन्दिर को शुद्ध करै । तैसेहि श्रीवालजू के पात्रादिक जलादिक सौ शुद्ध करै । पाछै आसन पर बैठिछै अपनौ सप्ती स्वरूप निवागै । श्रीयमुनाछ मे श्रीललितादिक सप्ती स्नानादि करै छै । तब आप आप सौ स्नान करै । ता पीछै गुरन को द्विती प्रसादी शृंगार होय सारी लहंगा कसुकी आदि के वस्त्र भूषण छै ते पहिरै अपनौ शृंगार करै । अपनी यूयेश्वरी श्री निज सुहृद अलि श्रीहित अलि जू को जानै और उनही अनुगती होवै छै सभ सेवा भावना करै । ता पाछै श्रीचन्दानन को ध्यान करै । ताके मध्य मे श्रीसेताकु न निवागै । तब श्रीनिवा प्रीतमजू को मडल छै ताके यहुँ और रत्न नदित

'डोट' है । ताके निकट श्रीगुरु सप्तीजी को मन्दिर है, तहां जय
 है श्रीगुरु सप्तीजी को जगावै । जल जारी लै है दन्तधावन
 करावै । इर स्नानादि करावै ता पीछे श्रीप्रिया प्रीतमजी की
 आशुप्रिय श्रीद्वित सप्तीजी को प्रसादी अंगार होय सो श्रीगुरु सप्ती
 जी को अंगार करै, इर श्रीगुरु सप्तीजी के पाछे होय है
 श्रीनिज सप्ती श्रीद्वित सुहृद अक्षिजी के मन्दिर में जय उनकी
 जगार कराय आत्मन स्नानादि कराय श्रीप्रिया प्रीतमजी के वस्त्र
 अंगार लै अंगार कराय उनकी और श्रीगुरु सप्ती जी की
 अनुवर्तिनी होय है श्रीप्रिया प्रियतमजी के निकुंज मंडल में
 जय । श्रीद्वित ललितादिक सप्ती श्रीलाडि, लीलाजी की टहल करै
 है तिनके संग में मिलके श्रीगुरु सप्तीजी के पीछे होय है
 आप टहल करै । तहां श्रीगुरु सप्तीजी के हाथ कंथन जल जारी
 है आप पीकदानी लै है श्रीजेरीजी को कुरला करावै । शमल
 सुगंधित इमाल सो भुजारविन्द पुछावै । पाछे मिथी, मलाई
 आदि कंथनादि चार में धरिके भोजन करावै । सुगन्धित शीतल
 जल अर्पण करै । पाछे कुरला करावै । हाथ पुछाय वीरी अर्पण
 करै । तज सिंहासन पर बैठाव आरती करै । पाछे पुष्पांजलि
 करै । ता पाछे श्रीद्वित ललितादिक सप्ती भोजन करै ।
 तिनमें जय है सीत प्रसादी लेय । श्रीगुरु सप्ती जी सीत
 प्रसादी लेय । पाछे सप्ती प्रसाद श्रीगुरु प्रसाद आप भोजन करै ।
 श्रीगुरु सप्ती जी श्रीद्वित सप्तीजी के परिकर में जनै और

આપ શ્રીગુરુ સંખી જૂઠે પાઠે હોય ટહલ કરે । રવતન્ત્ર
નહીં કરે । ઇત્યાદિ વિધિ સૌ મંગલ સમય જનિયે । ઇતિ
શ્રીમંગલ સમય ॥

॥ અથ શ્રીશૃંગાર સમય ॥

૭ ધડી દિન ચઢે, તે જાગહ ધડી પાર્થન્ત દિન ચઢે, તખ
લગ શૃંગાર સમય હૈ । તાદી વિધિ—દો ધડી દિન ચઢે, પાઠે
શ્રી જોરીજૂ પુષ્પવાટિકા મેં આગ કી રચના દેખિવે કા આવે ।
તહા સખી હાસ પરિહાસ ગાન કરે । પીઠે સ્નાનકુંજ મેં લાય
અંગન મેં ઉવટનો કરે । સ્નાન ઋતુ કે અતુમાર જલ સૌ વિધિ
પૂર્વક કરાવે । પાઠે શૃંગાર કુંજ મેં પધગાય શૃંગાર કરાવે ।
શ્રીજોરી જૂઠો મદા મિલે લી વિચારે । કાહ ક્રિયા મેં ચારો
નહીં વિચારે । શૃંગાર કરાય ભોજન કુંજ મેં લ્યાવે । તહા
અમ્પકલતા જૂઠી ભોજન કી ટહલ મુખ્ય હૈ । તહાં સખિયન મેં
મિલિકે બંધવા દડી મિહાઈ આદિ શ્રીગુરુ સંખી જૂઠે લાય અર્પણ
કરિકે શ્રીજોરીજૂ કા ભોજન કરાવે । તા પાઠે શીતલ મુગન્ધમય
જલ પિવારે । પાઠે કુલ્લા આદિ કરાવે । વીરી અરપે । પાઠે
દિય સુવર્ણ હો મદા રતનનિમય પોડશ દ્વાર હો સખા મંડલ હૈ ।
તહા રતન જટિત સિંહાસન ફૂલન કે આસન સોહૈ । તાપર
બેઠાય આરતી કરે । પુષ્પનિ કી ન્યોઝાવર કરે । તહા સમન્ત
સંખી દર્શન કરે । તહા ગાનાદિક કી બાવના કરે । પાઠે પૂર્વ
રીતિ સૌ સખિયન કે મધ્ય શ્રી ગુરુ સંખી જૂઠો તથા અપનો

પ્રસાદી પાયવૌ વિચારૈ । ઇત્યાદિ વિધિ સૌ શ્રૃંગાર સમય । ઇતિ
શ્રીશ્રૃંગાર સમય સમ્પૂર્ણમ્ ॥

॥ અથ રાજભોગ સમય ॥

બારહ ઘડી દિન ચઢે, પીછે રાજભોગ સમયૌ લાગૈ જઃ
ઘડી પાછિલૌ દિવસ રહે તથ લગ હૈ । તાકી વિધિ— સખી
આય સમા મંડલ મેં પ્રાર્થના કરૈ । તથ મહા દિવ્ય રત્નનિ દી
ભોજન કુંજ હૈ । તહા શ્રીજેરીજૂ આવૈ તથ કધુક આભૂષણ
વસ્ત્ર ઉતારૈ । તહા સખી ફૂલનિ કે આસન પર વૈડારૈ । તહાં
આસન બિપર શ્રીજેરી જૂ દૈ ઘડી ભોજન કરૈ । તહાં નિખરી
સખરી અનેક પ્રકાર કી સામિત્રી અર્પણ કરૈ । વીરી અર્પણ કરૈ
ઐર આરતી આદિ ધૂપ-દીપાદિ પૂર્વ રીતિ સૌ કરૈ । તૈસૈ હી
શ્રીગુર સખીજૂ કૈ ઐ અપના ભોજન પૂર્વ રીતિ સૌ કરૈ ।
કિન્તુ શ્રીજેરીજૂ કૈ શયન કરાય કૈ ભોજન કરૈ । શયન કરાયવે
કી વિધિ— મહા દિવ્ય મણિ મય શય્યા મન્દિર વિચારૈ । તહા
શ્રીજેરીજૂ કૈ પધરાવૈ । તહા શય્યા કે નિકટ સુગન્ધિત વીરી
પુષ્પ, જાસાદિ ધરૈ । કોઈ ધરી છકાન્ત રહસ્ય કી ભાવના કરૈ ।
પીછે પૌઢિવે કી ભાવના કરૈ । જલ રન્ધનિ હવૈ કૈ શ્રીલલિતાદિક
સખી અવલોકનિ કરૈ । તૈસૈ હી આપ હ અવલોકનિ કરૈ ।
ઇત્યાદિ વિધિ સૌ રાજ ભોગ સમય વિચારૈ । ઇતિ શ્રીરાજ ભોગ
સમ્પૂર્ણમ્ ॥

॥ અથ ઉત્થાપન સમય ॥

ઠે ઘડી જિ પાછિએ સૌ લેકર સાયંકાલ પર્યંત લૌ
સન્ધ્યા સમય હૈ । તાકી વિધિ—ઠે ઘડી દિન રહૈ, તજ સખી
વીણા બજાય હૈ શ્રી લાડિલી લાલ હૈ જગાવૈ । મેવા, રૂપ આદિ
અરોગાય, ધીનલ જલ અથવા ચગ્ગત હૈ પાન કરાવૈ । મરમગે
ઝૂગાર કૌ સમ્હાર પાઠે અનેક પ્રકાર કે મેવા મિશ્રી હૈ,
મોજન કરાવૈ । શીતલ જલ પાન કરાવૈ, વીરી અર્પણ કરૈ ।
સખિયન મેં મિનિ આપ ટહલ કરૈ । પાઠે શ્રી ગુરુ મખી જૂનો
પ્રમાદ પાયવૌ વિચારૈ પૂર્વ રીતિ સૌ । પાઠે વન વિહાર હી
ભાવના કરૈ, તહા નિત્ય કૃત્ય વિષ નિત્ય હી ભાવના માહી, કુંજ
હી વિહાર ગદિવર હી ખેલિવૌ, સિંહાસા હી ઝૂલિવૌ, દાન લીલા હી
કરવૌ, આખ મિચોતી હી ખેલિવૌ, જન વિહાર હી ખેલિવૌ,
નવેરિન મેં બેઠિ ત્રીયમુના જલ હી પૈરિવૌ, પ્રિયાજી તૌ લાનજી
રૂપ હોય ઝોગ લાલજી પ્રિયાજી રૂપ હોય । સખી હમેશા વિવાદ
કરાવૈ નિત્ય દ્વંદ્વ-દ્વંદ્વહિની હોય કરિ બન વિદાગ કરિવૌ કરૈ ।
પુલ્કષ હી ગેંદ માં પગ્ગર ખેલિવૌ । ઇત્યાદિ વિધિ મૌ ઉત્થાપન
જનિયૌ । ઇતિ શ્રી ઉત્થાપન સમય સંપૂર્ણમ્ ॥

॥ અથ સાયંકાલ સમય ॥

સાયંકાલ કે સમય મેં સખી જોગ લ્યાઈ । મોદક મગદ
મયાર્ઠ, મિશ્રી, મોતીચૂર, ચન્દ્રકમા, જલેખી ખુગ્મા, બજલા,

ઇમરતી, પેડા, પગે મળાને, બૈંધવા દહી આદિ સામિત્રી શ્રીલાડિલી લાલ જૂઠાં મોજન કરવાયૈ । પીછે શીતલ જલ પિવાય વીરી અર્પણુ કરિકૈ આરતી આદિ સેવા કરૈ । સાયંકાલ સમય સે છે ઘડી રાત્રિ પર્યન્ત રસ વિલાસ કી ભાવના કરૈ । ઇત્યાદિ વિધિ સૌ સન્ધ્યા સમય વિચારૈ । ઇતિ શ્રી સન્ધ્યા સમય સમ્પૂર્ણમ્ ।

॥ અથ શયન સમય ॥

છે ઘડી રાત્રિ ગયે તાર્ધ સન્ધ્યા સમય બયૌ તા પાછે શયન સમય ઘડી દોષ કૌ હૈ । તાકી વિધિ—પૂરી, કચૌરી, મોહનમોગ, આંટયૌ દૂધ, અનેક તરકારી, બૈંધવા દહી આદિ સમર્પણુ કરૈ । પાછે શીતલ સુગન્ધિત જલ પિવાય વીરી અર્પણુ કરૈ । પીછે આરતી કરૈ । પાછે દિવ્ય કંચન કૌ ઇન્દ્ર નીલમણિ આદિ રત્ન જટિત શૈલ્યા મન્દિર વિચારૈ । કોમલ કમલ દલાદિક ફૂલન કી શૈલ્યા વિચારૈ । તાપર લાડિલી લાલ કૌ પથરાયૈ । તાકે નિકટ મહા-મધુર માદક રસ વીરી આદિ સામિત્રી ધરૈ । પાછે સખી મોજન કરૈ । તિન મેં મિલિ દૈ શ્રી શુરુ સખી જૂઠાં અપનૌ પ્રસાદ પામવૌ વિચારૈ । ઇત્યાદિ વિધિ સૌ શયન સમયૌ જ્ઞાનિયે । ઇતિ શ્રી શયન સમય સમ્પૂર્ણમ્ ।

॥ અથ શૈલ્યા સમય ॥

આઠ ઘડી રાત્રિ ગયે પાછે સેલ્યા સમય વિચારૈ ઘડી બીસ કૌ સેલ્યા સમય હૈ । તાકી વિધિ—શ્રી જ્ઞેરીજૂઠાં શૈલ્યા પર મહા પ્રેમ રસ મગ્ન હૃદયે હાસ-પરિહાસ કરૈ હૈ । અરુ અંતરંગિણી

શ્રી નિજ મુહુદ અલિ જૂ (શ્રીહિત સખીજૂ) સામીધ્ય મેં
 ચરણાદિક દાવને તથા હિત સાગર કે ગહર તેં નિકાર સમ્હરાય,
 બતાયવે છી સેવા કરૈ । યહા શ્રીલલિતાદિક સખી જલ રંધનિ
 હૂંવે અવચોકન કરૈ હૈ । તહા જલ રંધનિ હોય કેં શ્રી જોરી જૂ
 છી રદસ્ય કેલિ કૌં આપહ દેખૈ પાછૈ રૂઢ પહર રાત્રિ જાય, તખ
 અનેક મેવાદિક ઝાઠપૌ દૂધ મોદકાદિ સામિત્રી શ્રી ગુરુ સખી જૂ,
 કે હાય દૈકેં શ્રી જોરી જૂ કૌં બોજન કરવાવૈ, સુન્દર શીતલ
 સુગંધિત જલ પાન કરવાય કેં વીરી અર્પણ કરૈ । પાછૈ પૌદવે
 છી બાવના કરૈ । પાછૈ શ્રી ગુરુ સખી જૂ આદિ દૈકેં આપ પ્રસાદ
 પાયવે છી બાવના કરૈ પૂર્વ રીતિ વિચારે । નિત્ય શ્રીકૃન્દાવન
 વિષ હેસેં શ્રી પ્રિયા પ્રીતમ જૂ છી બાવના કરિયૈ । આઠ ઘડી
 ગત્રિ ગયે પાછૈ બીસ ઘડી સેજ્યા સમય છી બાવના કહી સૌ
 અટ્ઠાઇસ ઘડી રાત્રિ બયે તાઈ કૌં શય્યા સમય બયૌ । રૂઢ
 ઘડી કૌં તડકૌં રહૌ, તખ ફેર મંગલા સમય લગૌ સૌ પાહી બાતિ
 સૌ બજા-જન હોય મો આઠ પહર છી બજન-બાવના નિત્ય પ્રતિ
 માનસી ભાવ સૌ તથા પ્રગટ ભાવ સૌ હમેશા હી કરિયૌ કરૈ, સૌ
 પરમપદ શ્રીકૃન્દાવન ધામ નિત્ય વિહાર લીલા કે દર્શન કૌં અધિકારી
 હોય । નિત્ય ધામ વિષે છઃ ઋતુ ૨૬ દિવસ માહીં શ્રી લાડિલી
 લાલ જૂ છી સેવા કરૈ હૈ । દશ ઘડી બસન્ત ઋતુ પ્રભાત સૌ
 સેવા કરૈ હૈ । શ્રીધમ ઋતુ સ્નાન ઘુંગાર કે સમય મેં, અરુ વર્ષા
 ઋતુ રાજબોગ મેં થોડી દેર શયન પર્યન્ત મેં, અરુ શરદ ઋતુ

शयन और कछु देर उत्थापन पर्यन्त हो, और हेमन्त ऋतु वन
 पिहार तथा सन्ध्या समय में, और शिशिर ऋतु शयन के समय
 में रहै । शयन के समय में जसन्त वर्षा, शरद, हेमन्त और
 शिशिर भी भ्रूजानुसार प्रतिमान कवच होय सेवा ही आशापावन
 में तत्पर रहै । होरी को जेल जसन्त ऋतु में रियागनौ और
 सय ही समय श्री साहिब साहब जी के भ्रूज के आधीन हौ ।
 कोर नर नारी सात समय श्री नोरीजी को जजन भावना हो करै ।
 ताके भाग ही भडिमा हो ब्रह्मा, शिव, देवता, सनकादि, नाग
 दहल पार पावै नाहीं और निकुंज में श्रीदित सप्तीजी में गुरु
 भाव को समावेश करै और प्रधट में श्रीगुरु सप्तीजी में श्रीदित
 सप्तीजी को भागवेश कर ममजै । धनि श्री अष्टप्रहः सेतामय
 भावनाविलास सम्पूर्णम् ।

श्रीराधाव'मभवालयजी के

॥ नित्य नैमित्तिक उत्सव बोध ॥

श्री श्री देवाधिदेव श्रीगधावक्षगण के पार्षिक नित्य नैमित्तिक
 उत्सवो ही विधि तथा भोगरंगादि हो निष्कृत्य प्राचीन पद्धति के
 अनुमाग तथा उत्सव निष्कृत्य आदि अन्यो के अनुमाग ने डि
 अघावधि होय भेद हो उनहो अवश्य ही कर्तव्य ममज समयानुसार
 सर्व साधारण्य के जनते के अर्थ और सम्प्रदाययो का
 भी बहुत समय से अनुरोध होने से विपिवद कर प्रभट्ट हगो

ज्येष्ठ ।

ज्येष्ठ कृष्ण १ को श्रीदत्त प्रबूझी जी उत्सव पीत वागौ धागु सभरे मे यथा शक्ति त्रिरोप ३५ मे भीर, दुग्गपाठ, श्रीभंड और रात्रि मे भंडल पै याव और नगरणु होय । याडी नाति दशरुनात्सव ज्येष्ठ मही ५ को होय और ज्येष्ठ कृष्ण ४ को वनविहार ही पण्डिता, श्रीमन् ही रात्रिमैन पीठे भभाज सहित सैन मे नित्य नेम मे कुल अधिक भोग दूध, लड्डू आदि पूरी आन समाजन को विशेष जालू भिनै । ज्येष्ठ शुक्ला २१ आन जल निहा २ विद्यापन म सन्ध्या आगती तक जगमोहन मे श्रीयमुनाजी भगै, कुदागे विशेष ३५ मे खलै, समयानुमार पुष्प कुंज या नौकाभंड अनै शीतल भोग विशेष ३५ मे तथा बीछ दाग भूंग और यना ही, जूँधवा हरी भग्ता क्यारी नोन ही टिठिया आदि भोग जल विहा २ के पद होय ।

आषाढ ।

आषाढ, जही पंचमी को श्री उपलाल छ अधिकारी हो जन्मोत्सव होय । और आषाढ जही ३० को श्री सुकुमारी लाल छ (युवगज) हो जन्मोत्सव होय । आषाढ शुक्ला २ को लाल वागौ धागु और लाय टी पिठाना निजैना आदि पावस ऋतु हो भूमाग प्राग्भ होय, शीतल भोग जल निहा २ के पद तथा आन मे भस्मा २ के पद भभाज मे प्राग्भ, भूभवावद्ध प्रथम श्रीदत्त नू ही भस्मा, दिग् अनेक

रसिकेन की वर्षा होने पर शीतल भोग, विशेष कूल
 श्रृंगार आन ही तट होय, आपाठ, सुदी १५ श्री गुरु पूजन धूप,
 दीप, नैवेद्य, श्रीकूल और भेट करै, यरणाभृत लेवै, प्रघट में श्रीगुरु
 सन्मुख न होय, तौ चित्र सेवा कर भेट मनीआईर द्वारा भेजै और
 पूजा ही से श्रीसेवक चरित्र की कथा तथा ११ से शुक्ला ३ पर्यन्त
 श्री सेवक वधाई श्रृंगार समय होय मोहन भोग अधिक भोग
 लगै और सज्जो तथा समानियो के वितीर्ण होय, द्विजित
 अभनिया समान में वाणीछ के भोग के लड्डू, पेडा आदि
 नित्य प्रति और श्री हिताचार्य और सेवक छ के चित्रपट और पूजन
 भोग यथाशक्ति समान में होय ॥

आवणु ।

आवणु कृष्णा ३० हरियाली-दरी पोशाक धारणु आवणु
 शुक्ला २ सिंधाने उत्सव । येडा अभनिया सिंधारे और तथा
 मेहँदी, कान्तर, सिंदूर, रेखी, अतर, कुसेल, भौली, कवायौ, कूल
 की वंदिनी, कंधी, प्यालौ दर्पन तथा ननीन पोशाक, यदि सज्ज
 तैयार न हो सकै, तौ चूतरी या सारी और पाग ही होय यह सज्ज
 वस्तु सेन्या समीप सेन समय राप्पी नॉय और मेहँदी तथा
 लाल पोशाक धारणु होय । डिंडोला के स्तंभ पुष्प नक्षत्र में स्थापित
 करनौ, रात्रि में सिंधारे मेहँदी के पद सेन समय कीर्तन में ।
 सिंधारे अभनिया की विधि— द्रैनी, घेवर, छमरती, जादूशाई,

गुजिया, लडकी मंडरी भीड़ी, लड्डी नुक्ती के और मुठिया के, सेव, सक्कलपाडे, तथा नान की मंडरी, सेव, छन मण में थोड़ी थोड़ी चीजे तथा ऋषु इलन के साथ सिंधारे बोग में सैन में पधरानौ तथा याही बात सिंधारे छौ सण अमनिया सन्ध्या के दोनो बोगन में जूलन के समय दिन सात तक लोग में आवै-जूलन में पूआ नित्य लोग लगै, जूला—आवणु शुक्ला ४ के सन्ध्या उत्थापन से सन्ध्या आरती पीछे तक जूलन होय, तीज के सवेरे अंगार से राजलोग तक सेनक जू ही अधार्थ श्रीसेवकनू छौ जन्मेत्सव ४ सेर के मोहनबोग में समान में राजलोग में वितरण होय । आवणु शुक्ला में जूलन समयानुसार नित्य नरीन घटा, लता-पता आदि सज्जें । जैसी घटा होवे वैसी पोसाक वैसी ही पोशिश छत पिठवार्ध—विशेष अर्थ में विशेष उपरोक्त सिंधारे के अमनिया दिन सात छौ होय और अष्टमी की रात के दूसरी मेवा परिवर्तन से मेवा चारे पुन सात दिन के लिये उपरोक्त विधि या क्रियित न्यूनाधिक मिधानै हउ नित्यप्रति जूलन के लोग दोनो में बालपूआ के साथ धर्जै, जूलन में नित्य नई पोसाक धारन होय, सन्ध्या आरती पीछे जूलन के आद आचार के दर्शन बीतग होय, आवणु शुक्ला ११ के पविना दोनो समय धारणु होवै और शुक्ला १५ में अक्षय-चन राणी दोनो समय धारणु—तीजन के चूनरी या लाल बागी धारणु तथा प्राय पक्षादरी पृथ्विमासी के नीलाल बागी धारणु होय ।

શાવણ શુક્રવા ૧૫ મેં સન્ધ્યા આરતી પીછે જૂલન સમાપ્તિ
જન્માષ્ટમી હી બધાર્થ પ્રારંભ । ‘આનંદ આજ નન્દ કે દ્વાર’
પ્રથમ યે પદ હોય સમાજ મે ।

બાદપદ ।

પ્રથમ શ્રીહિત પ્રશુ કૌ પદ ફિર લાવ જી હી પર્વન્ત
બધાર્થ - અષ્ટમી કે બી જન્મ બધાર્થ ગાન નૃત્ય, તથા લાલ
પોશાક ધારણ હોય । નન્દોત્સવ બાદૌ કૃષ્ણા ૯ કે શ્રૃંગાર સમય
(હિતોત્તમ હી ભાતિ) કેલાખબ, મન્ડપ, વન્દનવાગ, ધ્વજા-
રોપણ પચામૃત, દૂધ દહી, ખગ ચોડા-ચોડા થી સહત સે.
કલસ પંચપાત્ર, તથા દધિદાદૌ, શ્રૃંગાર અમય કૌ અમનિયા -
ગુઝિયા છોટી, ગદી છોટી બડી ગુઝિયા ઔગ ગદી, લડડુ મુઠિયા,
લડડુ વેસન કે, મઠરી મખાને પગે ભયે, મિંગી પાગ, ચિરૈછ પાગ,
ગોલા પાગ, બાદામપાગ મોઢા હી ગોલી, પેટરી મૈદા હી ધનિયા દી
ગજ ભોગ મે - પૂરી, દયૌરી, દહીનડ । અચાગ મુરખ્યા ઇત્યાદિ
નિખરૌ ભોગ લગૌ । શ્રૃંગાર પીછે હિતોત્સવ હી તગ્ધ સાચિયે
રચાપિત - મન્ધ્યા કે આજ બી ઔલાઈ નહીં પીતવાગૌ હી
ધાગણ હોય । બાદ કૃષ્ણા ૧૪ કૌ લાલજી હી છી પકવાન અમનિયા
શ્રૃંગાર મે ભોગ ધનૌ, રાજભોગ મે સખગૌ વિશેષ ખીગ, દહી,
પકૌદી, પીત ભાત, મોદનભોગ ઇત્યાદિ સન્ધ્યા પીછે સમાજ
શ્રીરિયા જૂ હી વધાર્થ, ચતૌ વૃષભાનુ ગોપ કે દ્વાર’ પદ સે પ્રારંભ
હોય, પ્રિયા જૂ હી છી તાર્થ બાદ શુક્રવા ૧૩ તક હોય.

प्रियाञ्च के उत्सव करने के पद्यपुराण में यही ही इल लिखी है ।

एकादश्याः सङ्ग्रहेषु यन्त्रलं लभने नरः ।

राधान्-माष्टमी पुण्यं तस्माच्छत गुणाधिकम् ॥

मेरु तुल्य सुवर्णानि हत्वा यन्त्रलं भाष्यते ।

सङ्ग्रहाष्टमी कृत्वा तस्माच्छत गुणाधिकम् ॥

अर्थात् छन्दर एकादशी के इल से सौ गुना अधिक श्रीराधा-
ष्टमी उत्सव करने का इल होय और सुमेरु पहाड़ के परापर सोना
दान से भी सौगुना अधिक इल श्रीराधाष्टमी उत्सव से होय है । जादों
शुक्ला प से याव श्रीहितोत्सव की भांति चार दिन पर्यन्त श्रीहित
मंडल में नय और अमनिया या प्रकार—लड्डू मुठिया के लड्डू
वेसन के, गुजिया छोटी, गद्दी छोटी, गुजिया बड़ी, गद्दी बड़ी,
सेव भंडे सकलपारे, भंडी भंडी, पाग प प्रकार के, (गोला, भजाने,
मिंगी, जाहाम, चिरोल आदि) पञ्चरी मूँदा की, पञ्चरी धनियां
की धनियां की गोली, मोड़ की गोली, नैन की भंडी, सेव नैन
के, अधिकस्व अधिक इलम् बाद शुक्ला ७ के लाल पोशाक
धारण, आज भी औलाध नही होय, नभा धारण और सयन
ममय सोड-डी केला और मंडप वन्दनवार आदि आंधै । आज
सयन आरती पीछे एक घड़ी तक दर्शन होय । आरती पीछे नवीन
पुष्प पोखरी और विबुध वेसर धारण होय, बाही समय द्वादश-
द्विती की द्वादशी नक्षत्र अष्टमि श्रील के सन्मुख नगमोहन में

होय और न्यौआवर रुपया १॥) या २) और हुपहा हो, तिलक श्रीक्षल से द.दि.न तथा द.डी के होय, लक्ष्मी सेवा नहीं होय वह भाली हो हुपहा द.डी द.दि.न के तिलक क० नाविवल हो देकर सेवा वासे के पीछे उह.वे, पञ्चात् द.डी और समाज प्याइ आदि सौ निवृत्ति हो रात्रि भर मगरण, नृत्य वप्रार्थ करै । नवीन ध्वजारोपण होय । अम्बोदय के समय भंगया आरती पीछे कुछ नमोत्सव कौ दधिक्राहौ, समाज में ऊपर औरत नमोदहन या और मे होय । पञ्चावृत सो (द्रध, दडी, मधु धृत, भूगै) स्नान, अगा पीछे दधिक्राहौ राजभोग आयवे पै गोस्वामियो कौ दधिक्राहौ दडी द्रध (आज कल तो दध मन द्रध दडी कौ होय) हन्दिः तथा यन्दन केश मिश्रित अँधा दडी "अधिक्रय अधिक" इलम" । राजभोग पहिले हीसेवाधिकारी द्वारा कृष्ण नमोत्सव साधियो धरे जौय । दधिक्राहौ भमान सहित श्रीहित मन्दिर, श्रीवनन्द जू कौ गाल, श्री सेवाकुंज होतौ भवौ श्रीहित गसमंडल पै नय द्विर श्रीयमुता स्नान हर याव की तैयारी होय याव की अपूर्व शोभा होय, ओहि आगे श्रीहित प्रभु की याव पीछे श्री स्वामी हन्दिःसण की याव, हरिवंशी हरिदासीण के मिलन कौ स्मरण कगवै । औत्रार्थ आज भी नहीं होय आज श्री गंधाधमी के दो अधिकारी श्रीहिशोरीलालण महाराज गोस्वामीजु कौ नमोदहन कौ भाद कृष्ण

૧૩ કે શ્રીપ્રિયાજી છી છટી, શ્રીકૃષ્ણ છટી અનુસાર અમનિયાં તથા ખીર વિશેષ હોય, આજ હી કે દિન શ્રીહિત પ્રભુ કે ચિત્ર કી પ્રતિષ્ઠા બઈસો હિતજૂ દૌ પાટોત્સવ જ્ઞાનનો કેલિપત્ર વંદનવાર સજ્જનો હિત પ્રભુ દૌ પચામૃત સ્નાન અમનિયાં ભોગ દલશ પંચપલ્લવ સ્થાપિત સમાજ હોય । બાદ શુક્રા ૧૫ સે સન્ધ્યા પીછે સાંજી કે પદ હોય ।

આશ્વિન ।

પ્રથમ 'વન કી લીલા લાલહિં બાવં'યે પદ હોય । સાંજી દિન ૧૫ તક ફૂલ તથા રંગ કી જૈસી હો સકે જન । જનાને વારે ઔર ખર્ચ આધીન હૈ યાસે યાકૌ ખર્ચ અકૃત હૈ । આશ્વિન શુક્લા પડવા કે લાલ વાગૌ ધારણુ તથા દશહરા કે જવારે ધારણુ પોશાક લાલ બારી શ્રૃંગાર સમય મોહનયાર । આશ્વિન શુક્લા ૧૫ કે સન્ધ્યા આગતી પીછે બાહર ચૌદંડી મેં શરદ મેં વિરાજે શયન પર્યન્ત, શ્વેત પોશાક ધારણુ તથા ચૌદવા પિંગ્વાઈ શ્વેત, સન્ધ્યા આગતી પીછે સમાજ મેં શરદ કે પદ ભોગ મેં કઈ મન દ્વધ, મલાઈ તથા ચન્દ્રકલા મૌમન કી જુગે પૂરિત, દ્વધ મેં સુગન્ધ ઇલાયચી । (આજ મેં ઔલાઈ નહીં હોય ઔર પંખા ઝડતુ અનુભાગ જળ તવ હોય નહીં તો બન્દ હી હોજાય)

કાર્તિક ।

યાદી બાતિ કાર્તિક કૃષ્ણા ૨ દૂસરી શરદ । આજ સજ પોશાક શ્વેત, પાગ સુખી [લાલ] ધાગણુ હોય ઔર સજ વિધિ

पूणिमा ही । कर्तिक जही ८ को श्री राधाकुंड मे अर्ध रात्रि पर
 स्नान होय और कर्तिक जही १३ [धनतेरस] को छरौ जरी हो
 पागौ और ३५ चौदस को लाल जरी हो पागौ धारण होय ।
 कर्तिक जही १४ तथा भावस दीपमासिका विशेष ३५ से दीपदान,
 श्वेत या लाल जरी की पोशाक धारण आदी हो छठरी मे चिराज
 और औपड, दानो वज्रत चिह्न, भेल के पद होय । अन्नकूट की
 तैयारी पंचमी से हो होय विशेष सामिथी जने वाडी सूखी विधि
 पूर्वक विशेषता से नही लिप्पी । अन्नकूट मे सुनहरी जरी की
 पोशाक धारण होय । सभी तरह के पकवान, सब दालन के,
 कर्ध मन धृत, भाड, मैदा, वेसन, दार सब प्रकार की दूध तर
 भोज्या की वस्तु, सभी भाति हो तथा आठ दस वस्तु तिल की—
 गजक, रेचडी आदि तथा पोनाल छलायमीदाने तिनंगनी आदि
 तथा गुड की वस्तु पूजा आदि, सब भाति के साग, अचार, मुरच्चा,
 परा, पकौरी तथा सभरे की सब सामिथी विशेष ३५ मे वाडी
 दिन जने सभरे निपरे की सभी सामिथी । पकवान आदि प्रथम
 से जने— अन्नकूट को भोग पर्य जलुत हो करने हो
 से भाज्य होय हो । यद्यपि अन्नकूट हो, व्रतस्य निर्णय आदि
 सम्प्रदायिग्रन्थो मे लेख नही हो, परन्तु १०० वर्ष मे प्रचलित
 देश कालानुसार हो और व्याकुलौ बी वा दिन होय यह अन्नकूट
 व्याकुले की पंगत ३५ मे होय से जननौ । श्रृंगार पीछे, निपरी

સામિત્રી સખ બાતિ કી, અચાર, સાગ, ફલ સદિત જગમોહન મેં
 તખત વિછોનાન પૈ સખયે જાંય રાજ ભોગ સખરૌ
 ભીતર ભોગ લગૈ પીછે દર્શન ખુલ્લે, અરુ વેસર
 હથફલ પહુચી ચિલુક બી ધારણુ હોય । આરતી
 રાજભોગ ઠ બજે પીછે તક હોય, રાત્રિ કે ઉત્થાપન બાહર હી
 ચૌદંડી, કેલાટક્ષ, મંડપ મેં વિરાજૈ, સંધ્યા આરતી પીછે
 વિવાહોત્સવ હોય, વિવાહ ઔર અનકૂટ સમય સુનહરી જરી કી
 પોશાક ધારણુ હોય, વ્યાહલે કે સમય ગહજોડૈ, સેહરૌ મૌર મૌરી
 કે દર્શન હોય ઔર દૌનોન કે તિલક હોય । નવ દૂલહ દુલહિન કૌ
 તિલક કરનૌ પ્રત્યેક સેવક કૌ અવગ્ય કર્તવ્ય હૈ । કલશ પંચપદ્મ,
 તથા વ્યાહલે કે પદ સમાજ મેં અનેક બાજે બજૈ કહુ અગ્નિ
 કીડૈ, કુકુલડ, મહતાવ ચરખી આદિ ચલાઈ જાવૈ, યા ઉત્સવ
 કે મનોરથ વિશેષ રૂપ મેં ચાહૈ જળ હોય, કિન્તુ લાલ યા પીત
 રંગ કી હી અથવા કાલે રંગ કે છોડ, કેઈ રંગ કી નવીન પોશાક
 અવગ્ય મનોરથ વ્યાહલે મેં હોય ઔર અમનિયાં ખૂદી લડકૂ,
 કચૌરી, કમરતી, બાલુશાઈ ગોલા દસા બયા દૂધાભાતી કે ઔર
 પૌષાવર, તિલક, કેલા, પન્નવાર, સમાજ વાજે આતિશયાજી
 આદિ સખ વ્યાહલે કી બાતિ મનોરથ મેં બી હોય, કાર્તિક શુકલા
 અષ્ટમી ગોપાસ્ટમી મેં લકુટ મોરપખા કૌ નટવર મેવ તથા ભોગ
 મેં શૃંગાર, ઉત્થાપન મેં પકવાન ઔર લડકૂ આદિ । કાર્તિક મેં
 માવસ કે ગ્રહણ આદિ કે સમય સંક્રાંત્ય મેં વ્યાહલૌ હોય તો

अन्नकूट गोपाष्टमी आदि कोष्ठ दिन करै अन्नकूट के दिन पुनः
अक्षानुसार व्याख्यौ होय, कार्तिक शुक्ला एकादशी देवेत्यान के दिन
शौक में गेरु भड़िया से शौक काढे, नय सन्ध्या के चार पाँडा
भड़े कर सिंघाड़े, आदि धरे नौय विशेष दीपदान होय, कार्तिक
शुक्ला १३ के अष्टमि उत्सव होने से सप्तमि उत्सवन को तिलक उत्सव
है, आज ही श्रीराधावल्लभलालछ को पाटोत्सव होय और आज
ही श्रीचन्द्रावन को प्राकट्य दिन है, और श्रीसुन्दरवरछ को नन्म-
उत्सव भी मानै। नय और श्रीचन्द्रावन तथा और आज तक
जितने अधिकारी गद्दी पर विराजे सप्तमि तिलकउत्सव दरबार
आज ही नयौ और होय है। श्रृंगार में देवा चन्दनमाल मंडप
हठरी में ही हितोत्सव समान पंचामृत स्नान साथिया ध्वजरोपण
आदि होय मे ग ने मोहनयाल, लड्डू, जूँदी, मकरी आदि लगै,
सप्तमि के और समान में गटै, पूर्णों तक यथाशक्ति दीपदान होय ।

अगहन ।

अगहन गद्दी २ के गोस्वामी श्रीकीर्तिलालछ को नन्म दिन
होय है, मार्गशीर्ष कृष्ण छट्ट के छोट छट्ट होय आज से छोट
के राजे रत्नछ दुशाला, भोजन, हस्त चरण में धारण होय,
हिम ऋतु को श्रृंगार होय । मार्गशीर्ष कृष्ण २ से माघ सुदी ४
तक—समान में रात्रि में श्रीव्याख्यस लीला होय एवं द्वादशयश
को पाठ होय, छोट छट्ट 'मेवा विद्या' या 'उत्सव बोध' में नडी

क्षिप्पी ऋतु अनुसार भोग, राग, श्रृंगार आदि होय
मार्गशीर्ष शुक्ला १२ को व्यंजन द्वादशी होय
प्रयत्नित अनेक प्रकार के सपने निपरे भोग धरे नौय,
युक्ती भीमै भात अवश्य होय, शीत ऋतु विषयाग अग्नि अंगीही
भी श्रृंगार एवं सन्ध्या आरती पीछे सन्मुख धरी नय ।

पौष ।

पौष शु० २ से माघ शु० १ तक एक मास भडे, प्रातः काल
भियडो हो भोग लगै, भियडो के शीत समय के भावनामय पद
भडे, प्रातः समाज मे होय भियडो अति ही विचित्र अपूर्व
श्रीराधावल्लभ हो प्रसिद्ध है, सो भगला से पहिने भोग लगै
और भंगवा मे नित्य नवीन द्रव्य धारण करि नौय और कर्ष
अपूर्व अनिर्वचनीय जाडी होय वा समय हो मुख देमे ही जनै
भडो बीड, होय । भियडो की विधि — कर्ष दिन पहिने भडो विधि
से हाग भूँग ही जनार्दनय, सवेरे को समय भियडो हो है तामै
धी मेवा अधमेनी मेर के डिंसाम मे भियडो होते मे पडे, मेवा
मे लाल हाथ छुडारे, आदाम पिरता, गिरी तथा केशव सुगंध
आदि अनेक भसावे मोक्ष धनिया भोग भिर्य काली पडे,
भियडो की विलक्षणता और भोग की अपूर्वता वर्णन नही
हो सकै, याही भाति भीही भियडो भी नित्य भोग लगै, निपरे
मे अनेक भाति के साग अयाग, मुरग्या, मटनी, अद्रक्ष्य

तथा दहीपरा पापर, कर्छाति ही क्यरी, रणडी मवाध, इल, मेवा, झैनी, घेवर, गण्ड तथा केशर मिथ्री मिश्रित गर्भ दूध भाजन मिथ्री आदि अनेक वस्तु तथा अनेक प्रकार के लड्डू आदि पकवान भी बाही समय भोग में पधराये जाँय । पियडी में वस्त्र के अँगला गर्भ में विराजै, जडा अपूर्व सुख या ऋतु के अनुसार भोग दर्शन समाज हो रहै, सज को प्रसाद दिनका नित्य मिलै दोनों पृष्ठादर्शन के विशेष पंगति पियडी ही राजभोग में होय भीही पियडी भी अलग होय ।

माघ ।

माघ सुदी २ को केशरी मोहनभोग और रवडी, मलाध, इल, भाजन, मिथ्री, मेवादि वस्तु भंगला में भोग लगै । टोपा और दुशालान के अपूर्व दर्शन होय, बाही दिन श्री गोरनाथी मोहनवालय भडागज हो जन्म दिन है सो भगल वधाध 'वारी हो भँवरवा' पद होय, पियडी पड़वा तक भोग लगै, आज उत्सव समाप्त होय । माघ सु० ४ को जसन्ती अँगला में विगजै । माघ सु० ५ को श्रृंगार समय वसन्त उत्सव, जसन्त धारण, कलश धरनौ, जसन्ती पोशाक श्रृंगार विशेष होय । आज से भोज, रणध, अँगीरी नहीं धरी जाँय और गुलाब सज रंग के धरे जाँय । आज से श्रृंगार और सन्ध्या आरती पौ द्विचित गुलाब लड्डायौ भी जाय । जसन्त के पद दोनो समय

સમાજ મેં હોય, અમન્ત ૩૧ માવપુઆ તથા કેગમ્મય લડે, બાલુશાઈ આદિ પકવાન શ્રંગાર મેં ઔગ બસંતી મોહનભોગ પૂરી, દયારી આદિ ગજભોગ મેં આરોગે । મેવાકુંજ મેં મંધ્યા કો સમાજ હોય । માધ મુઠ ૧૫ સંધ્યા કો દોલી ડાંડે દો પદ આજ સે હોરી ધમાઢ દો સમાજ પ્રાગ્મ હોય । શ્રીકૃષ્ણચન્દ્ર પ્રભુ કો માધ મુદી ૯ દો જન્મોત્સવ હોય ।

કાસ્યુલુ ।

કાસ્યુલુ કૃષ્ણા ૧૧ કો શ્રીમાનમરોવર મેં સમાજ જાગરણ હોય । કાસ્યુલુ બદી ૧૩ કો જોબ બજનલાવજી દો જન્મોત્સવ હોય । શિવચૌદસ કો જોગિયા હદમ સમાજ મેં હોય । કાસ્યુન બદી ૨ સે કાસ્યુન મુદી ૧૦ તક મેવાકુંજ મેં ૨૪ હદમ દો સમાજ સંધ્યા કો હોય પર આજ કલ કુલૌરા દોજ મે હી પ્રારંભ કરે । કાસ્યુન મુદી ૪ કુલૌરા દોજ મે ગંગદાઢ બેલ બટા ફૂલ આદિ ચિત્રિત ચૌડંડી મેં વિરાજે, શ્રંગાર સમય આજ મે ફેટ શુલાલ દી ધાગ્યુ કરે દોનો સમય આજ વિશેષ રપો શ્રંગાર મેં પૂઆ ઔગ પકવાન આદિ ભોગ મેં આમ, શ્રંગાર અધિક હોય, શુલાલ અધિક ઉડે, ચોડા ગગ બી પોલો નય । પોશાક રંગમગી હલકી સફેદ ધાગ્યુ હોય, સેવા કુંજ મેં સમાજ હેય ઔગ હદમ લીલાન દો ગમાજ દરમા તક હોય । ગગ બરી પકાદશી કો સવારી બડે, બાની લવાજમેં

से शहर भर में निकलें । श्रावण सुदी ११ से मन्थ्या समय से
 बाहर निकलें, पूना तक भ्रम गहरा रंग गुलाब छौ जेव होय
 धूप कृत्यापन के पीछे मे सन्ध्या भोग तक नित्य । एगदशी के
 सन्ध्या आगती पीछे व्याकुली होय प्रथम अन्नकूट के न्याहुसे ही
 भांति सज विधि इधामाती आडंडी केवा व मनभाव समाज
 आज्ञे तामे आतिशयाश्रु भोग मे पञ्चान अति निलक, न्यागधर
 कवच स्थापन पञ्चपञ्च आदि धरे नौय, व्याकुसे मे शीश्रु छौ
 तिलक सज सेवक मात्र के इगता आदिरे होली के नित्य जेल मे
 भोग मे पूजा लड्डु भ्रमरती, आलूदास, सेव, भंडरी, घेवर
 सकलपारे आदि दोनो भोगन मे पधराये नौय । अनंतर से
 प्रातः भी जेव होय और धूप अंगार आगती बाहर होय और
 अंगार मे गजभोग तक जेव भ्रम गहरा रंग गुलाब छौ होय
 समाज मे धमार होय, तेरम या पूना के प्रात अनंतर से जेव
 मे निकुंज वनौ और प्रिया प्रियतम के अर्द्धांग के दर्शन अद्भुत
 होय, गजभोग मे भीतर पधागै, शजभोग आरती भी भीतर
 होय, नित्य जेल मे अनेक रंग के मनन गुलाब छि, नौय, क्षीय
 आगन मे होय, मध्य भन्दिर रंगभंगौ हो न्यय, होली छौ रंग
 भ्रम घेने पर भी महीना पीछे तक रहै, श्रावण सुदी १३ के दिन
 श्रीहोमोदश के रात मे समाज तथा होली छौ जेल करनौ ।
 होली के प्रातः धूप डाल होय, तिसि निर्णय मे गड, अडंडी छेने पर
 भी दिवाली भोर अन्नकूट और होली भोर डाल होने छौ नियम

असौ आवै । डोल पत्ती मोरछली ही और इलन के इस
 अङ्गान से सुशोभित होय, लाल पोशिश और गुलाबी पोशाक
 धारण होय मेढरी तथा पूर्ण विशद अंगार होय, दिन में
 धूप अंगार और सन्ध्या के धूप सन्ध्या आरती जाकर होंग ।
 डोल जुलन के दर्शन पड़े, अद्भुत एक साल भर में अग्रे अद्वितीय
 होय, अंगार पीछे गौरी में 'प्रथम यथावति प्रत्युक्त श्रीवन्दन
 अतिशय' ये पद २॥ या उ घ टे में नम के होय, नम पद हो नम
 तभी राजभोग आरोगने पधारै । दियित गुलाल फी थाली
 सन्मुख रहै और 'ह मिनि जन्दन धर' तुक आवै तब स्वयं
 उड़ायो जाय । आज भोग में मालपूआ दोनों समय तथा
 विशेष रूप से नरनेली, भभरती, लड्डू आदि भोग लगै, राजभोग
 में आरती के दर्शन भीतर आड'डी में होय, सन्ध्या के धूप से
 सन्ध्या भोग तक डोल के पद होय, सन्ध्या आरती पीछे भीतर
 दर्शन होय शयन तक ।

चैत्र ।

श्रीवनचन्द्र महाप्रभुछ कौ नमोदसव चैत्र अही ६ कौ
 होय, पीत पोशाक धारण होय कुछ विशेष भोग डोल पर आव ।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा नवीन संवत्सर के शीछ के नवीन
 पंचांग सुनाना, लाल या नवीन पोशाक, राजभोग में भीर आदि
 विशेष भोग । चैत्र सु० ७ के त्रीपसुनाछ कौ उत्सव यमुना तट

५ वीं दरनौ । यत्र सुदी नौमी के लाल पीरी पोशाक रामनग्न
 अधार्धसमाज में, दधु विशेष भोग लगै । यत्र सुदी पक्षादशी
 के गुलाब के दूध (कम से कम २० सेर) और निवाडे के दूध
 तथा पीत यमेली के दूधन दौ डोल अनै, सन्ध्या के धूप आरती
 में शयन पर्यन्त गुलाब के डोल में जूझै, यह समाज भोग आदि
 लोग । यैती गुलाब दौ गुलाब बरस भीतर आपरस के
 अपका से डितरै, जो श्रीग के भोग, शर्गत, पीर आदि में सेवा
 में आवै । यत्र शुक्ला १५ से श्राद्धितोत्सव दौ मंगल पाद
 श्रीसेवकवाणीछ दौ कीर्तन दरनौ, दोनो समय अर्थात् श्रृंगार
 और सन्ध्या आरती पीछे और याही पृष्ठिगा दौ श्राद्धितप्रभ
 के पग्न छष्ट गुरु श्रीराधिका मङ्गारानी नू ने पीपर पत्र में
 श्रीनिगमन्त्र कीदखिंश गोस्वामी नू दौ दियौ । या उत्सव के
 उपसक्ष में श्राद्धित परमाराध्य श्रीराधिकावसमनू दौ पीत वस्त्र
 धारन दरनौ और श्रृंगार भोग में दूध मोदनयात्र आदि अधिक
 राखनौ और आवर सौ ही पक्ष मास बार दिन तह अर्थात्
 दितनू के छौन न्ह दूध्या ५ पर्यन्त अधार्धकीर्तन दरनौ-दरनौ,
 आजसे श्राद्धित राम मंडल पै ह सन्ध्या समय श्राद्धित अधार्ध
 ३। समाज प्रारम्भ होय । यैत अही ४ के आद आग न कर वडा
 श्रीछ के सन्मुख समाज रामादिक कर पंथमी के हाग दौ उत्सव
 दरनौ । समयानुसार यह विधि अनि संक्षेप से विषय समाधि,
 करी । और प्रत्येक भाग ही दोनो पक्षादशी एवं पृष्ठिगा के

દિન મેં મુકુટ કાઢિની કીપ્રિયાજી ઓર રાત્રિ મેં કીલાલજી
 ધારણ કરેં ઓર પ્રાયઃ માવસ ઠાં તાજ ઓર સ્યામ પોશાક
 ધારણ કરેં, યાકે અતિરિક્ત અપને અપને ગુરન કૌ ઉત્સવ
 માલૂમ કરકે અવશ્ય થયા સકિત કરનૌ ઉચિત હૈ । કમ સે કમ
 કીલિતોત્સવ, કીસેવક ઉત્સવ, કીરાધાત્મી ૫૫ં કીગુર જન્મોત્સવ
 તૌ અવશ્ય પ્રત્યેક ધર્મી કૌ કરનૌ ઉચિત હૈ । ઓર અધિક માસ
 મેં અધિક ભોગ રાગ ઓર અધિક બાદૌં હોય તૌ 'જન્મોત્સવ'
 મે રાધાત્મી કૌ ૧૫ દિન સે અધિક અન્તર નહીં હોના ચાહિયે
 થક પ્રાચીન લેખ હોને સે અધિક માસ મેં કી વિશેષ કીરાધાત્મી
 કરનૌ ।

ગોસ્વામી શ્રીહિત કિશોરીલાલજી શ્રીહંતિલાલજી અધિકારી,
 ટીકાયત મન્દિર ૧૦૦૮ શ્રીગધાવલ્લભજી મદારાજ,
 શ્રીવૃન્દાવન ।



(भीहित हरिवंशवंशो विनयते)

श्रीचतुराशीजी के पदन कौ समय प्रवन्ध

पृष्ठ सं०	पद सं०	पृष्ठ सं०	पद सं०
(भंगला समय पद १४)		४७ यह जु ओठ मन०	५६
१४ प्रात समय होषि०	३	५४ आज सौभारत०	७०
१५ आज तौ युवति०	४	५६ लटकत द्विरत०	७३
१६ आज प्रभात सता०	५	६३ आज जव देखियत०	८४
१७ कोन यतुर युवती०	६	छति भंगला समय संपूरणम्	
१७ अति छी अरखु०	८	अथ स्नान ओव शृंगार समय	
२० नन्ह के लाल०	१३	(पद ४)	
२१ अपनी जात०	१५	१८ जनी राधा मोहन०	६
२३ आज देखि अजर०	१७	२१ अधर अरखु तेरे०	१४
२४ मोहनलाख के०	१८	२७ आज नीली०	२५
२५ तेरे नयन करत०	२१	२६ अजर नव तरखि०	१६
२५ नयनन पर पारै०	२०	छति शृंगार समय संपूरणम्	
२६ दाधाधारी तेरे	२३	अथ रांग भोग राधा विदार समय	
२९ आज अति राजत०	३१	(पद २)	
३० आज वन राजत०	३३	४० देखि सखी राधा०	५१
३३ वन ही कुंजन०	३४		

પૃષ્ઠ સંં	પદ સંં	પૃષ્ઠ સંં	પદ સંં
૪૧ નવલ નાગરીં	૫૦	૪૩ રાસ મેં રસિકં	૬૮
મતિ રાજ ભોગ શ્યા વિલાં		૪૪ મોહિની મોહનં	૬૯
સમય સમ્પૂર્ણમ્		૪૫ સ્યામ મંગ રાધિકાં	૭૧
અથ વનવિહાર સમય (પદ ૩)		૪૬ સુધંગ નાયતં	૭૨
૩૮ આવત શ્રીવૃષ્ણાનું	૪૫	૬૦ રહસિ રહસિં	૭૬
૩૯ વન કી લીલાં	૪૭	૬૧ વૃષ્ણાનુન્દિનીં	૮૧
૪૦ વની વૃષ્ણાનું	૪૮	મતિ રાસ સમય સંપૂર્ણમ્	
મતિ વનવિહાર સમય સંપૂર્ણમ્		અથ સંશ્રમમાન સમય	
અથ રામ સમય (પદ ૧૭)		(પદ ૧૩)	
૧૬ ચલહિ રાધિકેં	૧૨	૩૪ ચલહિ કિનં	૭
૨૪ ખેલત રાસ રસિકં	૧૬	૩૫ વેગિ ચલહિ ઉઠિં	૩૮
૨૬ આજ ગોપાલ રાસં	૨૪	૩૬ ખેલ્યો લાલ ચાહતં	૩૯
૨૭ મોહિની મદનં	૨૬	૩૬ ખેડે લાલ નિકુંજં	૪૦
૩૪ આજ વન નીકોં	૩૬	૩૬ પ્રીતિ કી રીતિં	૪૧
૪૭ આજ સખી વન મેં	૬૧	૩૭ અતિ નાગરં	૪૩
૪૮ ખેલત રાસં	૬૨	૩૮ ચલિ સુન્દરિ ખોલીં	૪૪
૪૯ મોહન મદન ત્રિભંગીં	૬૩	૪૧ દાન દૈરી નવલં	૪૧
૫૦ વેણુ માર્છ્યાજૈં	૬૪	૪૬ તેરે લિત લેન આપ્તિં	૪૮
૫૦ મદન મથન ઘનં	૬૫	૫૭ ખંજન મીન મૃગનં	૭૩
૫૦ ચિર રાજત વધૂં	૬૭	૫૭ કાહે કૌ માનં	૭૪

૫૪ સં.	૫૬ સં.	૫૪ સં.	૫૬ સં.
૩૮ હૌ જુકહત ઇં	૭૫	૬૦ વલ્લરી સુ કનકં	૮૦
૬૨ છાંડિ દૈ માનનીં	૮૩	૬૨ નાગરતા હી રાસિં	૮૨
ઇતિ સંબ્રમમાન સમય સંપૂર્ણમ્		ઇતિ શ્યા સમય સંપૂર્ણમ્	
અથ શ્યા સમય (૫૬ ૧૮)		અથ બસ તૃસમય (૫૬ ૨)	
૧૩ જોઈ જોઈ પ્યારૌં	૧	૨૮ મધુ રિતુ જુદાવનં	૨૭
૧૩ પ્યારે જોલી બાગિની	૨	૨૬ રાધે દેખ વન દીં	૨૮
૧૬ આજ નિકુંજ મંજુ	૭	ઇતિ બસંત સમય સંપૂર્ણમ્	
૧૮ આજ નાગિરીં	૧૦	અથ મલાર સમય (૫૬ ૪)	
૧૬ મંજુલ કલ કુંજા	૧૧	૪૨ દેખૌ માર્ધ સુન્દરતાં	૪૨
૨૦ આજ મેરે કહૌં	૧૬	૪૨ દેખૌ માર્ધ અબલાં	૪૩
૨૩ સુન મેરૌ વચનં	૧૮	૪૩ નયૌ નેહ નવ રંગં	૪૪
૨૦ દેખત નવ નિકુંજ	૩૦	૪૮ આજ દોહીં	૪૫
૩૨ આજુ વન કીડતં	૩૦	ઇતિ મલાર સમય સંપૂર્ણમ્	
૪૭ પ્રીતિ ન દાહ દીં	૪૨	અથ જૂવન સમય (૫૬ ૧)	
૩૬ વિપિન ધન કુંજા	૪૬	૨૨ જૂવત દોહી નવલં	૩૫
૪૪ હૌ વસિ જાગૌં	૪૬	ઇતિ જૂલન સમય સંપૂર્ણમ્	
૪૭ કહા કહૌ ધનં	૬૦	અથ હોરી સમય (૫૬ ૧)	
૫૧ વિહરત દોહીં	૬૬	૪૪ પ્રથમ યથામતિં	૫૭
૫૫ સુન્દર પુલિનં	૭૨	ઇતિ હોરી સમય સંપૂર્ણમ્	
૫૮ નાગરી નિકુંજા	૭૬		

ઇતિ શ્રીમદ્વત્સરાશીજ કૌ સમય પ્રબન્ધ સંપૂર્ણમ્